अक्षरतत्त्व

लेखक और प्रकाशक—

गौरीशंकर भट्ट।

प्रथमावृत्ति
१००० प्रति

सम्बत् १९८३ विक्रमीय

मूल्य
प्रति पुस्तक ॥)

आकृतियां—इन्तिज़ामो प्रेस, कानपुर में मुद्रित।

टाइटिल पेज तथा आदि के ८ पृष्ठ—मरचेंट प्रेस, कानपुर में मुद्रित।



* उत्सर्ग *

श्रद्धेय श्रीस्वामी श्रद्धानन्दजी की सेवा में।

स्वामिन् !

आपने "जिज्ञासु" बनकर अक्षरतत्व का महत्व क्रियात्मक-विधान से प्रत्यक्ष किया है। निरक्षरों को साक्षर और सुबोध बनाकर आप मनीषी और महात्मा प्रसिद्ध हुए हैं। आप सत्य, सत्कार्य और सद्धर्म के उपासक बनकर जगत के श्रद्धास्पद स्वामी हैं। अतएव आशा है कि आपके संसर्ग से यह अक्षरतत्त्व संस्कृत होकर राष्ट्र और महाराष्ट्र के लिये कल्याणप्रद होगा। इसी अभिलाष से यह आपकी सेवा में सादर उत्सर्ग करता हूं—कृपया इसे स्वीकार कीजिये।

विनीत परीक्षार्थी—

गौरीशंकर भट्ट।

मसवानपुर—कानपुर
श्रीरामजयन्ती सं० १९८३

ॐ

आवश्यक प्रार्थना

प्रायः सत्ताईस वर्ष से मैं 'देवनागरी' अक्षरों का आकार नियमित करने की चेष्टा कर रहा हूं। इतने समय में मैंने जो प्रयत्न किया है वह हिन्दी-प्रेमियों से छिपा नहीं है। मुझे प्रसन्नता है कि मेरा उद्योग निष्फल नहीं हुआ और हिन्दी हितैषियों ने मेरी सेवा का सादर स्वागत भी किया है।

सन् १६०१ ई० में 'लिपिबोध' नामक पुस्तक मैंने प्रकाशित की थी। उस समय उसमें एक बड़ी मनोरञ्जक और कौतूहल-पूर्ण बात यही दिखलाई देती थी कि देवनागरी अक्षर परकार और रूलरद्वारा बनाए जा सके। बड़े बड़े विद्वानों और सुप्रसिद्ध पत्र-सम्पादकों ने लिपिबोध की बहुत प्रशंसा की है। किन्तु विषय की महत्ता विचारने से मेरे मन में यह बात खटकने लगी कि यद्यपि देवनागरी अक्षर परकार द्वारा बन गये और आजकल के प्रचलित टाइप के अक्षरों के समान सुन्दर भी देख पड़ते हैं, तो भी वे देवनागरी के असली अक्षरों से भिन्न आकार के अवश्य हैं।

देवनागरी अक्षरों का जन्म हिन्दी लेखनी से होने के कारण पहिले सैकड़ों वर्षों तक सुलेखक-गण कलम से ही अक्षरों का सौन्दर्य बढ़ाते रहे और टाइप ढलने के पहिले हिन्दी के सुलेखकों (खुशनवीसों) की लिखी हुई ही पुस्तकें होती थीं, इसलिये देवनागरीलिपि के सौन्दर्य का रहस्य हिन्दी लेखनी के अन्तस्तल में ही सुरक्षित है। कलम की बनावट से बननेवाले अक्षरों को छोड़ कर, पेन्सिल और होल्डर से बनाए हुए, मनमाने सुन्दर अक्षर, सच्चा सौन्दर्य नहीं पाते। इन सब विचारों ने मुझे इस बात की खोज में डाला, कि कैसे ज्यामितिकविधि से अक्षर बनाते हुए भी, कलम की लाग और लिखावट बदलने न पाये और कलम का सिद्धान्त नष्ट-भ्रष्ट न हो।

सन् १६०४ ई० में अन्वेषण का फलस्वरूप लिपिबोध का दूसरा संस्करण निकला। इसमें सब अक्षर कलम की लाग का ध्यान रख कर ज्यामितिक आधार पर बनाये गये और यह सिद्ध किया गया कि देवनागरी अक्षर वस्तुतः सुन्दर वही हो सकते हैं जिनमें हिन्दी कलम की लाग छूटने न पाये।

इस लिपिबोध में अक्षरों के साथ प्रत्येक अक्षर का एक ढाँचा भी रक्खा गया। इन ढाँचों पर नियम पूर्वक कलम चलाने से,

बढ़िया देवनागरी अक्षर बनते हैं और सुलेखन (खुशख़ती) के अभ्यास के लिये ढाँचा उत्तम साधन है। इसी प्रयोजन से सन् १९०६ ई० में 'नागरीलिपि पुस्तकें' बनाई गईं। इन लिपि पुस्तकों में सब अक्षर लिपिबोध में वर्णित नियमों के आधार पर अङ्कित किये गये और क्रमशः आवश्यकतानुसार ढाँचे दिये गये। यह लिपिपुस्तकें अनेक पाठशालाओं में प्रचलित हुईं और सन् १९१० ई० में मध्यप्रदेश और पञ्जाब यूनिवर्सिटी में स्वीकृत हुईं। गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी, हरिद्वार में लगभग १४ वर्ष तक मैं इसी सिद्धान्त पर सुलेख सिखाता रहा, जिससे भली-भाँति यह अनुभव हुआ कि यह ढाँचे की रीति, सुलेख-शिक्षा के लिये सब से अधिक लाभदायक है।

हिन्दी कलम से बने हुये सब से बढ़िया अक्षर कौन हैं, उनमें क्या विशेषता है, उनके बनाने के कौन से नियम हैं—यह जानने के लिये कोई साधनविशेष उपलब्ध नहीं; शुद्ध, अशुद्ध, सुडौल, कुडौल, बढ़िया और घटिया अक्षर जाँचने की कोई कसौटी नहीं। फ़ारसी अक्षरों के पैमाने की तरह देवनागरी अक्षरों की रचना-सूचक कोई पुस्तक प्राप्त न हो सकी। इसलिये हिन्दी कलम की लाग से बने हुए अक्षर, जो सब से अधिक सुन्दर जान पड़े, वही मैंने ज्यामितिक रीति से परिमित किये। जो अक्षर लिपिबोध के दूसरे संस्करण में मैंने बनाये थे, उन्हें अधिक सुडौल, अधिक सुन्दर और अधिक शोभासम्पन्न करने की चेष्टा करता रहा। इसलिये नागरीलिपि पुस्तकों और सन् १९१३ ई० को छपी हुई आलेख्य पुस्तकों में कई अक्षरों के आकार लिपिबोध में दी हुई आकृतियों से अधिक सुन्दर बने हैं।

लिपिबोध का दूसरा संस्करण समाप्त हो चुका है, अब तीसरे की बारी है। इस प्रकाशित होनेवाले तृतीय संस्करण में, मेरे सत्ताईस वर्ष के अनुभव से जो अक्षर जितने सुडौल बन सके हैं, वे ज्यामितिक नियमानुसार वैज्ञानिक विधि से अङ्कित किये जायँगे, इसलिये मैं जानना चाहता हूं कि मेरे यह अक्षर कितने सुन्दर बन सके हैं, इनमें क्या त्रुटि है और वैज्ञानिक-दृष्टि से किस अक्षर में कितना संशोधन होना चाहिये।

अपना दोष किसी को स्पष्ट दिखलाई नहीं देता, इसलिये सब हिन्दीहितैषियों और शिक्षाविभाग के अधिकारियों से विनीत प्रार्थना है कि आप लोग मुझे इस विषय में उचित परामर्श देने की कृपा कीजिये, जिससे देवनागरी अक्षरों का आकार वैज्ञानिक-विधि से निर्धारित हो जाय।

यद्यपि लिपिबोध के दूसरे संस्करण में सब अक्षर ज्यामितिक नियमों के अनुसार हिन्दी कलम की लाग के सिद्धान्त पर बनाये गये हैं और लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों ने उन अक्षरों को पसन्द किया है, तो भी इन पारिमाणिक अक्षरों के विषय में हिन्दी-जगत्

का अभिमत भलीप्रकार जानने के लिये मेरा विनम्र निवेदन है कि विद्वज्जन अपनी सम्मति से मुझे सूचित करने की कृपा करें, जिससे अगले संस्करण में मैं निर्णीत-सिद्धान्त पर पहुंच सकूं और निर्धारित आकारों को प्रस्तुत करूं।

यह बड़े खेद की बात होगी कि जब देश में साहित्योद्धार, हिन्दीप्रचार और नागरीलिपि-विस्तार की त्रिवेणी तरंगें ले रही है, सर्वसम्मति से देवनागरी-लिपि ही राष्ट्र-लिपि होने का अधिकार प्राप्त कर चुकी है, तब उस लिपि के लिखने का कोई नियम और कोई सिद्धान्त न हो! इसलिये देवनागरी के उपासकों और देव-नगर-काशी के मानरक्षकों से मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी राष्ट्र-लिपि, अपनी आर्यलिपि के तत्वानुसन्धान और परिमाणस्थिरीकरण में योगप्रदान कीजिये—युग के आदेशानुसार अपनी राष्ट्र-लिपि, अपनी महा-राष्ट्र-लिपि देवनागरी को साङ्गोपाङ्ग परिपुष्ट, सर्वाङ्ग-सुन्दर और समलंकृत कर अपनी नागरिकता और आर्यजाति के मन की उत्कृष्टता दिखला दीजिये।

"अच्छा लिखना सबसे बढ़िया कारीगरी है" और "लिपि-प्रशस्ता सुमनोलतेव केषां न चेतांसि मुदा विभर्ति" आदि सूक्तियों को विशेष हृदयग्राही बनाने और क्रियात्मकरूप में परिणत करने के लिये देवनागरी अक्षर विविधप्रकार के बनाये गये हैं, बन रहे हैं और बनाये जायँगे। मैंने भी कई प्रकार के अक्षर लिपिबोध में दिये हैं।

'चित्रलिपिप्रवेशिका' नामक पुस्तक में एक एक अक्षर की अनेक अनेक आकृतियां दिखलाई हैं और अनेक प्रकार के मुद्राक्षर (मोनोग्राम) और चित्रबन्ध (तुग़रे) भी प्रदर्शित किये हैं, किन्तु उन सब रचनाओं का सम्बन्ध अधिकांश आलेख्यमात्र से है—प्रचलितलिपि से नहीं। वह अलङ्करण-विभाग अलग ही है।

जो अक्षर स्कूलों पाठशालाओं और शिक्षणालयों में सिखाये जाते हैं—जो दैनिक व्यवहार में काम आते हैं—जिनसे कर्म धर्म का मर्म बतलाया जाता है—जिनसे विद्यालयों का, पुस्तकालयों का, कार्यालयों का, धर्मालयों का और देवालयों का श्रवण-सुखद नयनाभिराम शुभ नाम अङ्कित होता है—जिनसे 'राम', 'कृष्ण', 'शंकर' और 'शक्ति' आदि पवित्र नाम और उनकी महिमा लिखी जाती है और जिनके सम्बन्ध में संशोधन और आकारनिर्णय की प्रार्थना है, वही अक्षर कलम की लाग के आधार पर ज्यामितिक नियमानुसार इस "अक्षरतत्त्व" नामक पुस्तक में अङ्कित किये गये हैं।

इन अक्षरों की रचना के सम्बन्ध में जिन महानुभाव सज्जनों की जो सम्मति हो, जिस अक्षर में वह जितना सुधार या संशोधन करना उचित समझें, कृपया मुझे सूचित कर उत्साहित करें।

निवेदक—

गौरीशंकर भट्ट।

ॐ

दिग्दर्शन

अक्षर, सरल रेखाओं और चापों से बने हुए हैं। सरल रेखाएँ अधिकांश वर्गों की रेखाओं पर, या उनके स्पष्ट भागों [illegible] अङ्कित हैं—जो बहुत साफ दिखलाई देती हैं, इसलिये उनके [illegible] व्य नहीं।

चाप, विभिन्न-परिमाण की त्रिज्याओं से यथा-क्रम यथा-स्थान बने हैं। उनमें यह जानने की विशेष आवश्यकता पड़ती है कि कौन सा चाप किस केन्द्र से बना है और कहां से कहां तक काम में लाया गया है।

प्रत्येक अक्षर के साथ, उसके अक्षरांश या चापखण्ड दिये हैं। ऐसे कुल चापखण्डों में जो भाग अक्षर का अङ्ग है, वह पूर्णरेखा में है। जो भाग अक्षर के काम में नहीं आता—केवल चापों के आकार और मिलान को स्पष्ट दिखलाने के लिये बनाया गया है, वह विन्दुरेखाओं से सूचित किया गया है।

प्रत्येक चाप का केन्द्र इस ◎ आकार का है और इस ➤—> वाणचिन्ह से उस चाप की त्रिज्या दिखलाई गई है। चाप के आदि और अन्त में ऐसे ⟵⟶ वाणचिन्ह लगे हैं।

प्रत्येक अक्षर में अक्षरांशों की क्रमसंख्या चापों के भीतर और चापों की क्रमसंख्या अक्षरांशों के बाहर दी गई है।

चापों को श्रेणीबद्ध करने में यह देखा जायगा कि चाप वर्ग के आधे से लेकर तीन वर्गों से कुछ अधिक लम्बाई की त्रिज्याओं तक के हैं; उनका आकार वृत्त की तीन चौथाई से अधिक, काम में नहीं आया।

चापों के केन्द्र, दो प्रकार के हैं। एक वह, जिनका स्थान नपा हुआ है। जैसे आकृति संख्या १ से ४३ तक। दूसरे वह, जिनका केन्द्र नपे हुए स्थान पर तो नहीं है, पर लगभग नियमित स्थान के पास है, जैसे—आकृति संख्या ४४, ४५, ४६।

पहिले प्रकार के चाप बनाने में कोई कठिनाई नहीं है क्योंकि उनकी त्रिज्या और केन्द्र, स्पष्ट हैं, किन्तु दूसरे प्रकार के चापों में केन्द्र ठीक परिमित नहीं होता, उसका स्थान 'लगभग' ही कहा जासकता है—पर चाप का स्थान नियमित होता है। इसलिये ऐसे चाप बनाने में 'लगभग' केन्द्र से प्रयोजनीय त्रिज्या को परकार फैलाकर देखलेना होता है कि वह बतलाये हुए केन्द्र

से ठीक प्रयोजनीय-चाप बना सकती है या नहीं। यदि नहीं तो थोड़ी सी त्रिज्या घटाने बढ़ाने अथवा केन्द्र बदलने से प्रयोजनीय-चाप बन जायगा। ऐसे चापों में यही ध्यान रखना चाहिये कि जो स्थान चाप के आदि अन्त का बतलाया गया है, वहाँ होकर और 'लगभग' बतलाये हुए केन्द्र से ही चाप बनाना चाहिये। निम्न लिखित 'केन्द्र स्थापन' देखिये:—

केन्द्रस्थापन।

वर्ग का भुज १ मान कर

पहिला प्रकार।

१—केन्द्र, वर्ग के कोण या रेखा के कटान पर है।

त्रिज्या, १ है— आकृति संख्या १ से ११ तक
,, कर्ण के बराबर आ० सं० १२ से १५ ,,
,, २ आ० सं० १६ से २० ,,
,, लगभग २। आ० सं० २१
,, ३ आ० सं० २२
,, ॥ आ० सं० २३

२—केन्द्र, वर्ग के भुज पर, ठीक आधे पर है।

त्रिज्या, १॥ से अधिक, दूसरे वर्ग के कर्णकोण के बराबर आ० सं० २४
,, १॥ ,, २५
त्रिज्या लगभग १। आ० सं० २६
,, ॥ ,, २७
,, लगभग ।॥ ,, २८
,, १ ,, २९
,, २ से कुछ अधिक ,, ३० (आधे से तीसरे वर्ग के ऊपरी कोण तक)

३—केन्द्र, वर्गभुज पर, ठीक चौथाई पर है।

त्रिज्या, कर्णकोण के बराबर आ० सं० ३१
,, २ ,, ३२
,, १। ,, ३३
,, १ ,, ३४
,, लगभग कर्ण के बराबर ,, ३५
,, २ से कुछ अधिक ,, ३६—३७
(इसमें दूसरे वर्ग के सन्निकट कोण की त्रिज्या है)

४—केन्द्र, वर्ग के भीतर ठीक बीच में।

त्रिज्या ॥ आ० सं० ३८—३९
,, १॥ ,, ४०
,, लगभग १॥ ,, ४१

५—केन्द्र, वर्ग के भीतर, किनारे से एक चौथाई ऊपर।

त्रिज्या, केन्द्र के समीपस्थ कोण के बराबर—
लगभग ।॥ आ० सं० ४२
,, ,, १॥ ,, ४३

दूसरा प्रकार।

१—चाप, दो वर्गों के आयताकार में कर्णसमान है।
केन्द्र, लगभग चतुर्भुज के बीच में।
त्रिज्या २॥ आ० सं० ४४—४५

२—चाप, एक ओर चाप से मिलता हुआ जाता है, दूसरी ओर रेखाओं के कटान में पूरा होता है।
केन्द्र, लगभग वर्गभुज के चौथाई भाग पर।
त्रिज्या लगभग कर्ण के बराबर, आ० सं० ४६

टिप्पण—(१) ए, ख, ग, ण, न, भ, म, र और स की रचना में एक बहुत ही छोटा चाप आ० सं० ३९ में वर्ता जाता है। यह चाप इतना छोटा है कि उसे परकार से बनाने की अपेक्षा हाथ से ही बना लेने में सुविधा है, इसलिये उसका केन्द्र यथास्थान दिया नहीं गया, किन्तु अन्त में रख दिया गया है। उसका केन्द्र वर्ग के बीच में है और त्रिज्या १॥ है। आ० सं० ४७।

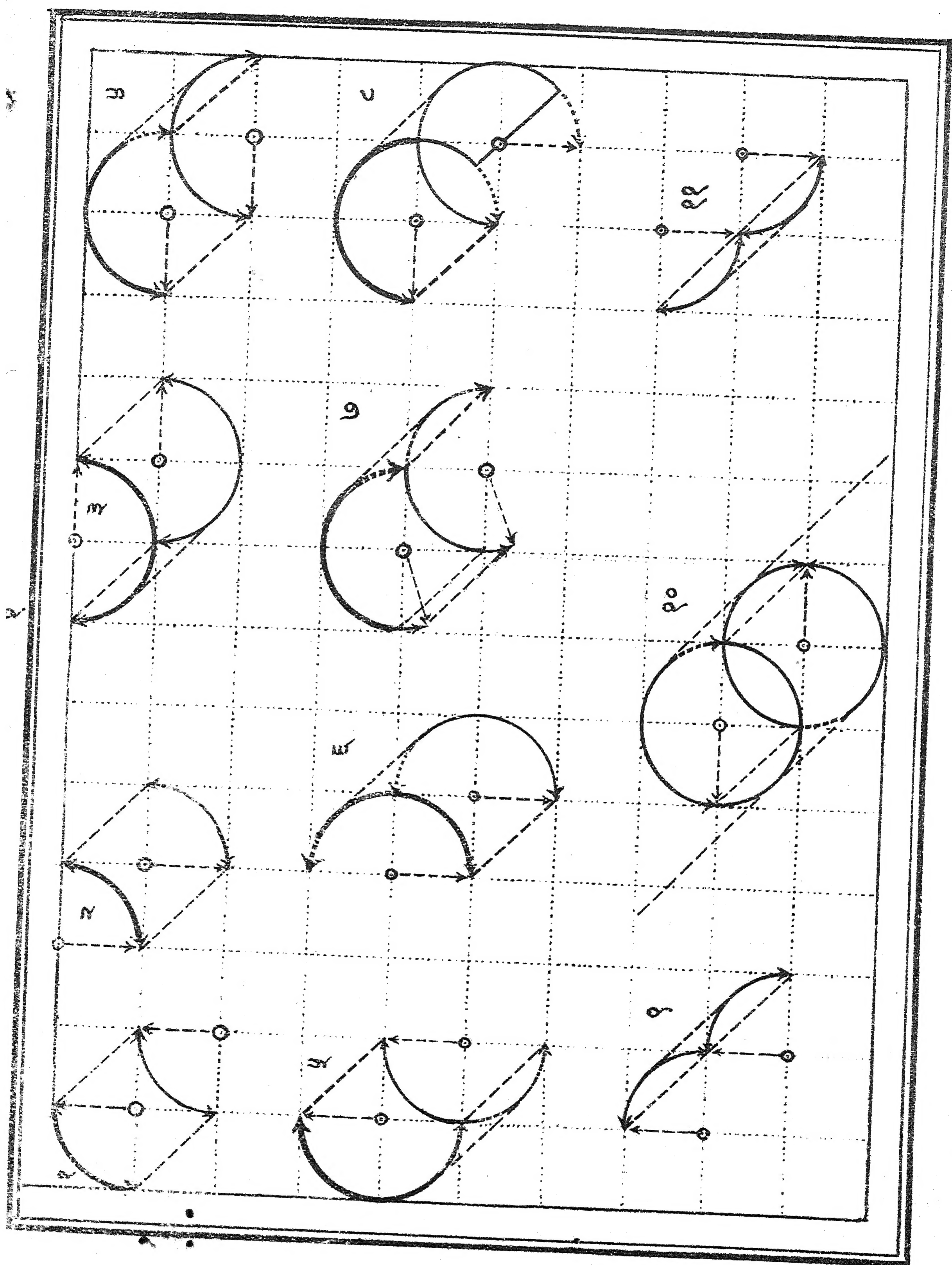
(२) कई स्थानों में पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे और ग्यारहवें अक्षरांश का केन्द्र आधा अथवा चौथाई वर्गभुज नीचे खसकाया गया है—

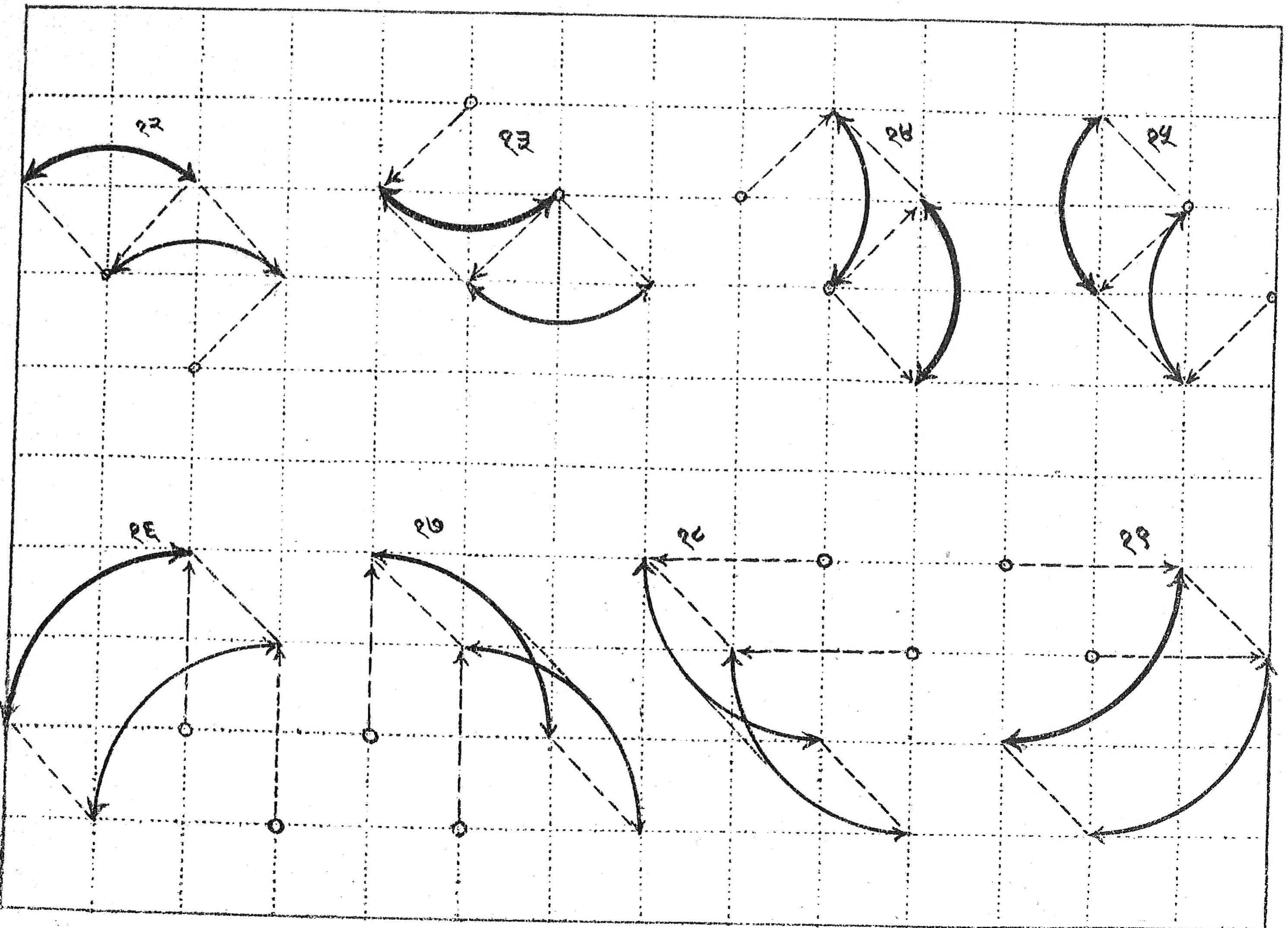
जैसे—पहिला '६' में ३, दूसरा 'अ' और 'ॐ' में ३, '३' में २ आधा वर्गभुज और 'ञ' में लगभग चौथाई, तीसरा 'अ' और 'ॐ' में ५, चौथा 'ढ' में ४ और ग्यारहवां '६' में २ आधा वर्गभुज नीचे है अर्थात् केन्द्र वर्गभुज के बीच में है।

ऊपर की पंक्तियों से पाठकों को अक्षरों की रचना का 'दिग्दर्शन' मात्र होगा। बुद्धिमानों को अधिक समझाने की आवश्यकता नहीं, उनको आकृतियों से ही सम्पूर्ण रचना का रहस्य सहज ही में विदित हो जायगा। इस विषय का विस्तृत वर्णन अगले संस्करण के 'लिपिबोध' अथवा 'अक्षर-विज्ञान' में कई प्रकार के परिमित और अलंकृत अक्षरों तथा उपयोगी उपकरणों सहित प्रस्तुत किया जायगा।

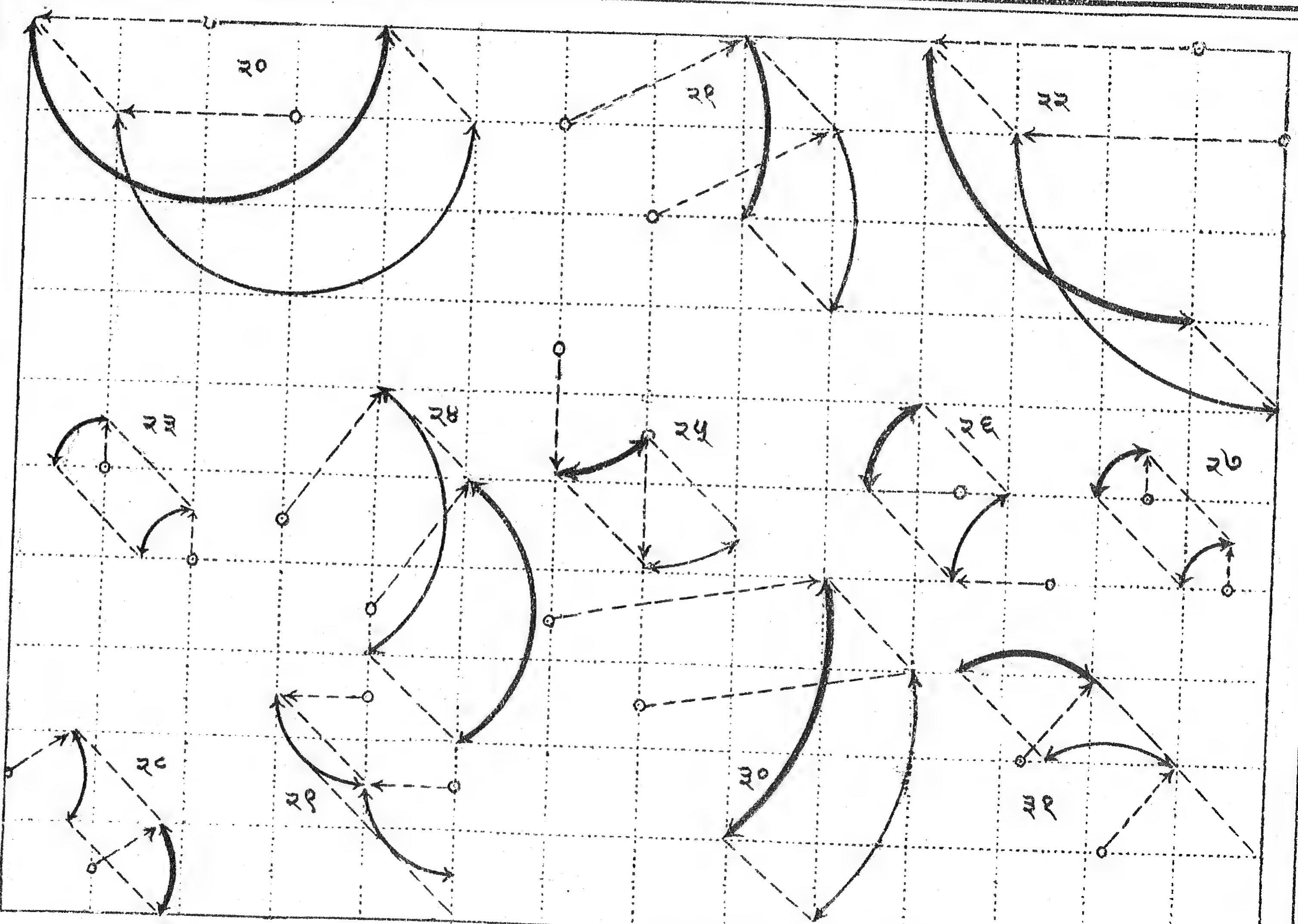
मसवानपुर-कानपुर,
श्रीरामजयन्ती सं० १९८३

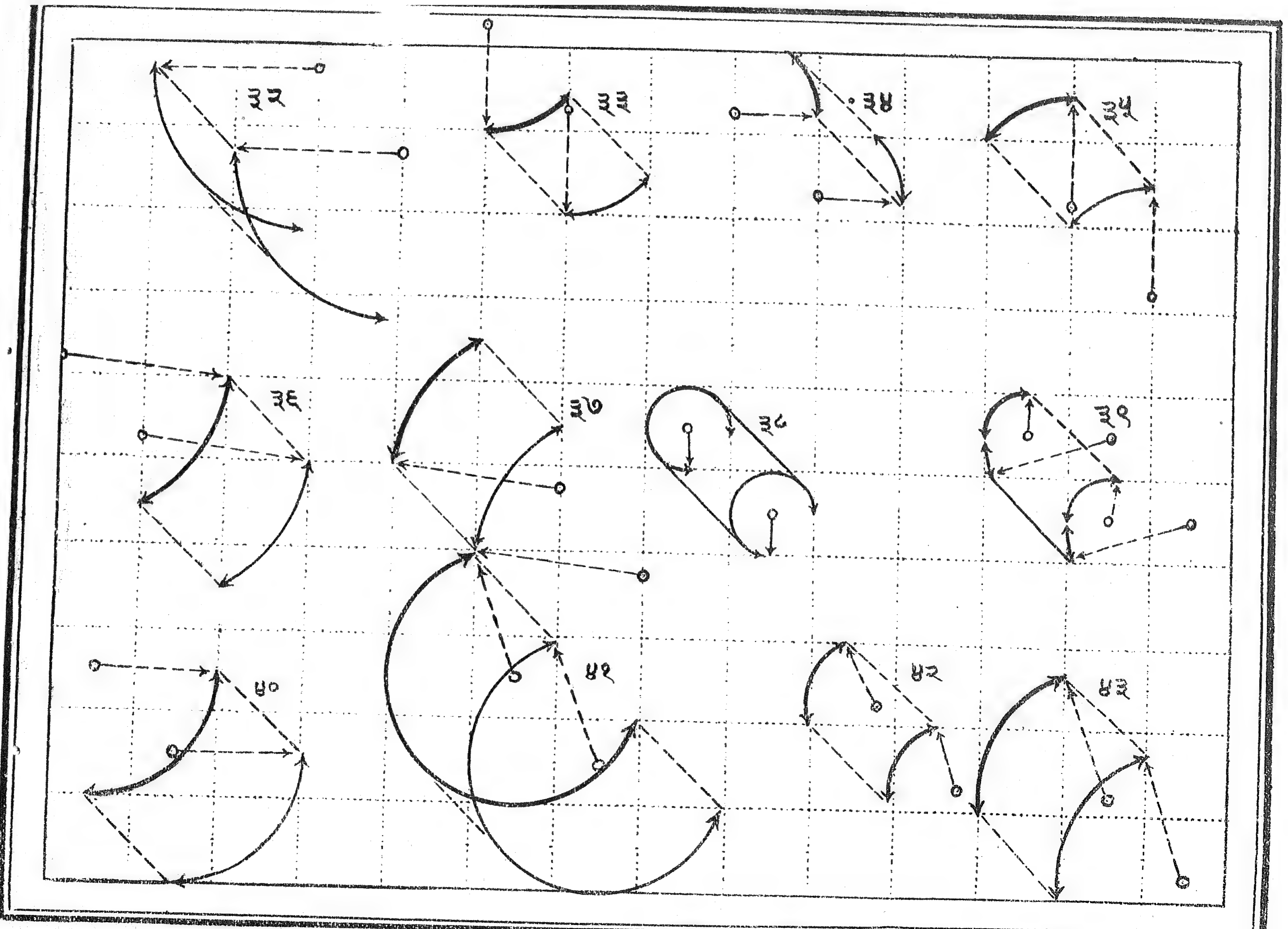
गौरीशंकर भट्ट।



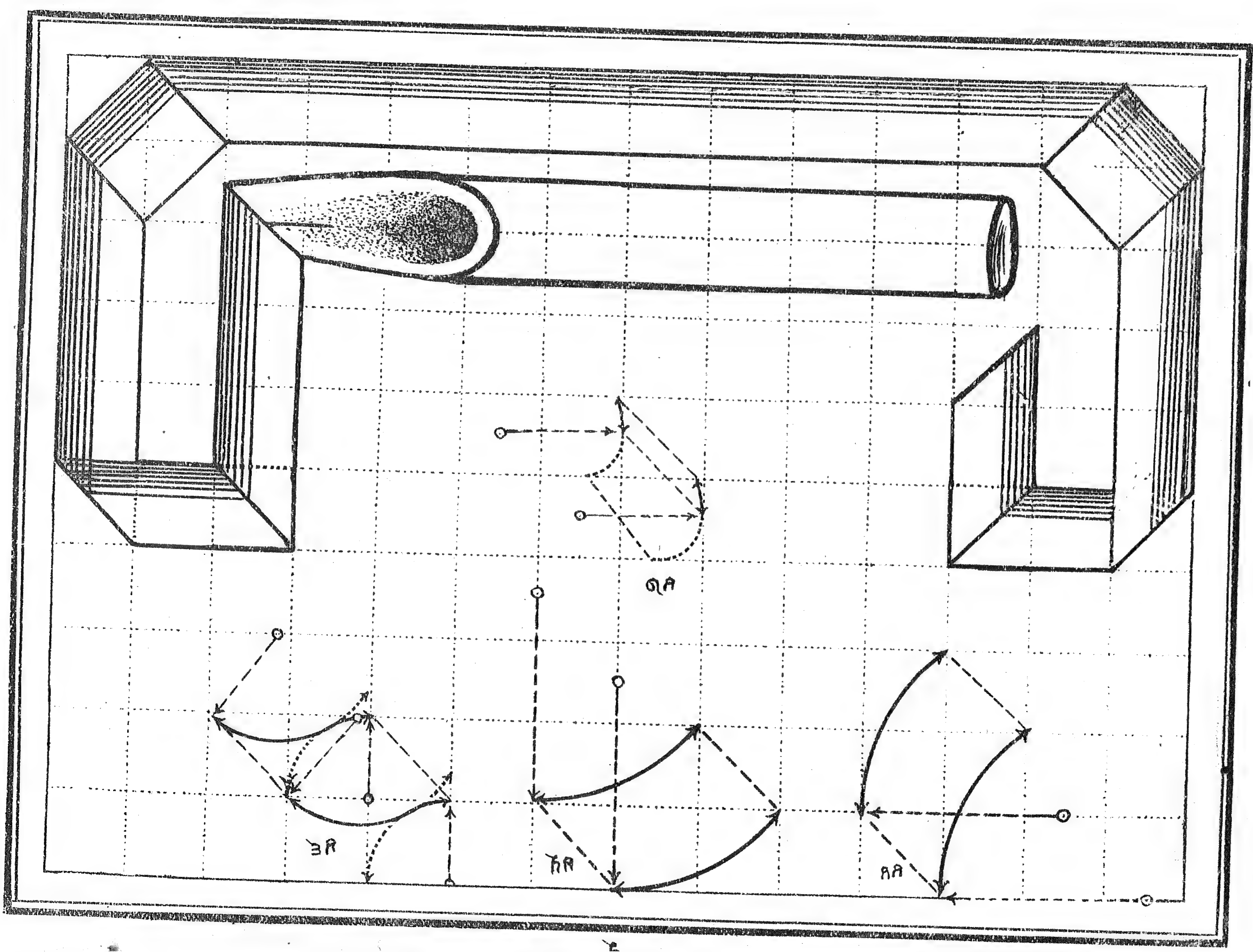


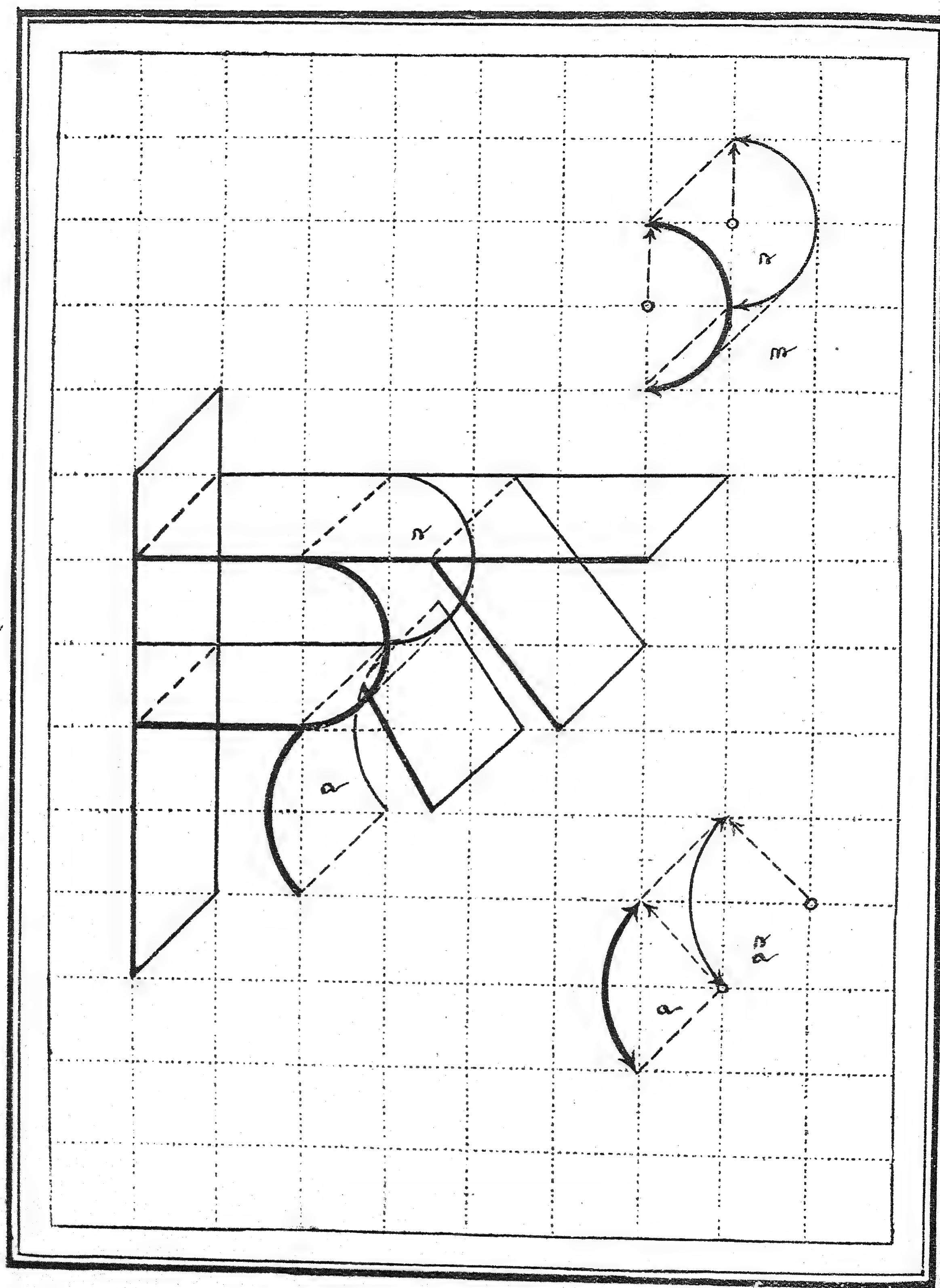
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९

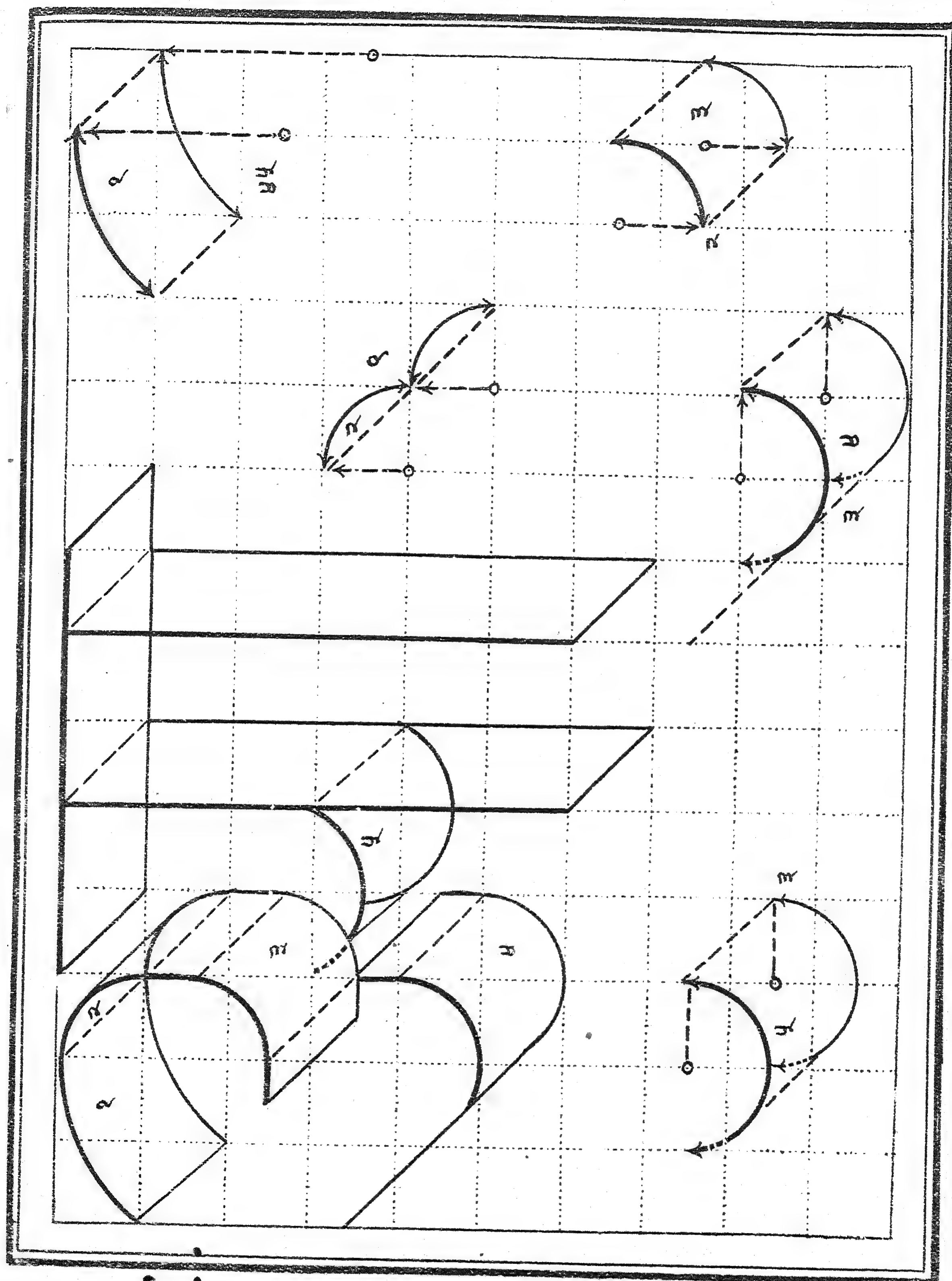

२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१

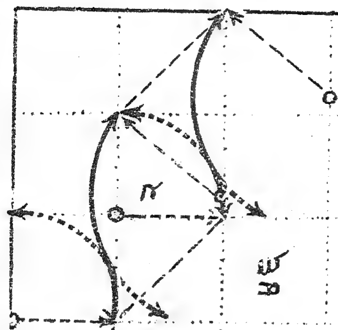


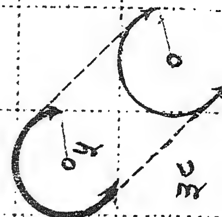
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३

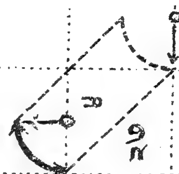


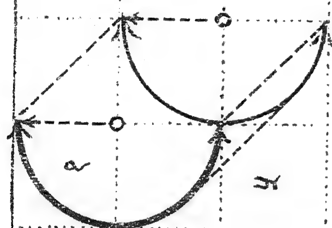


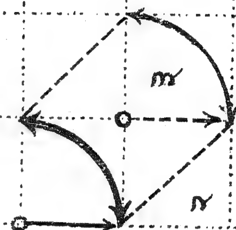


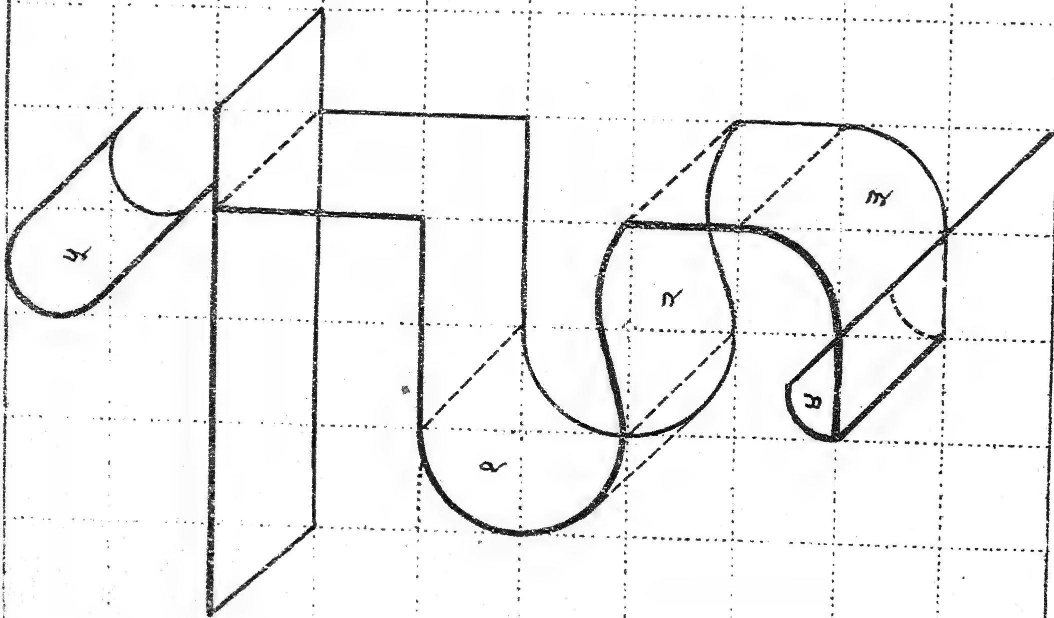


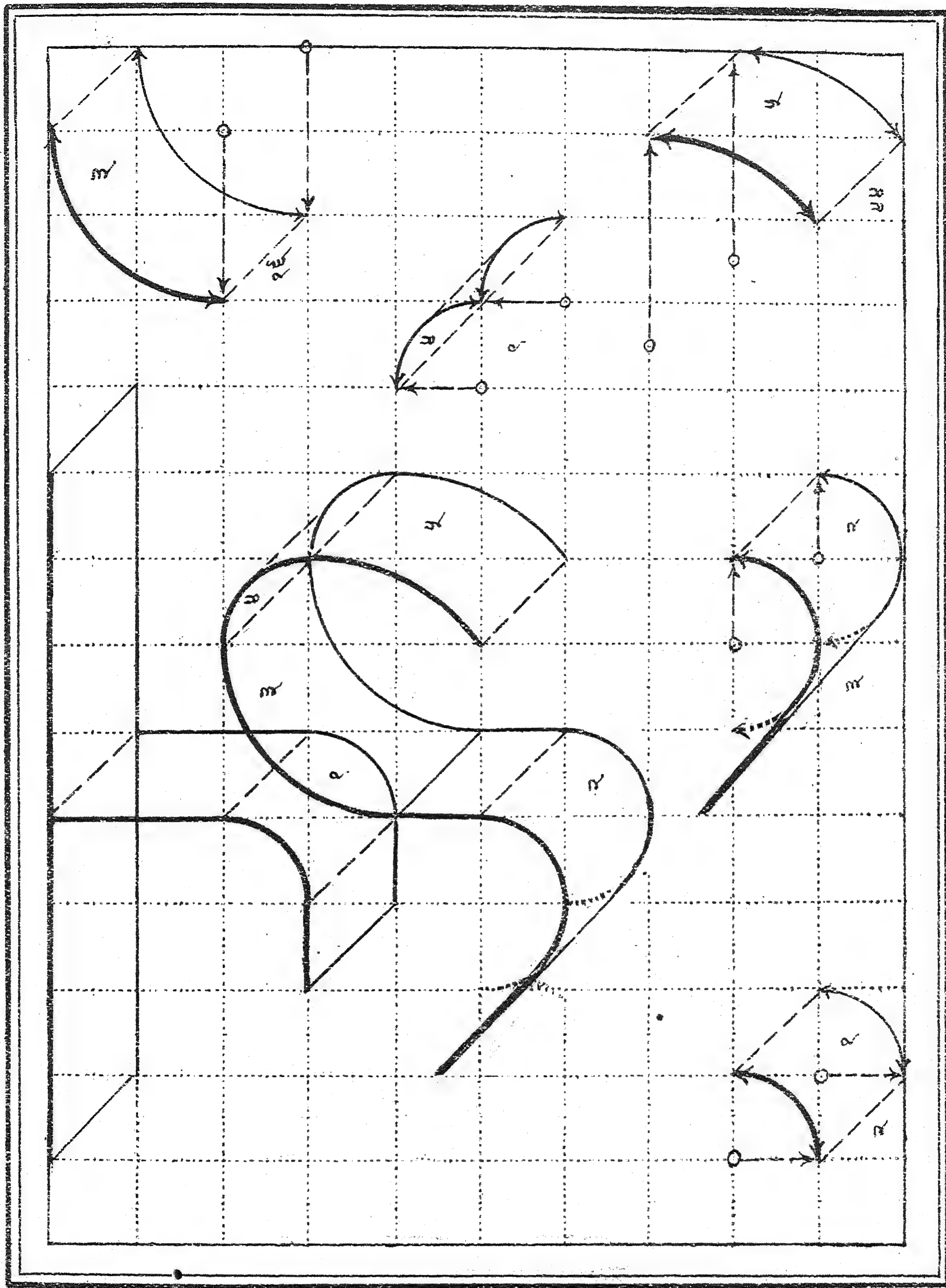


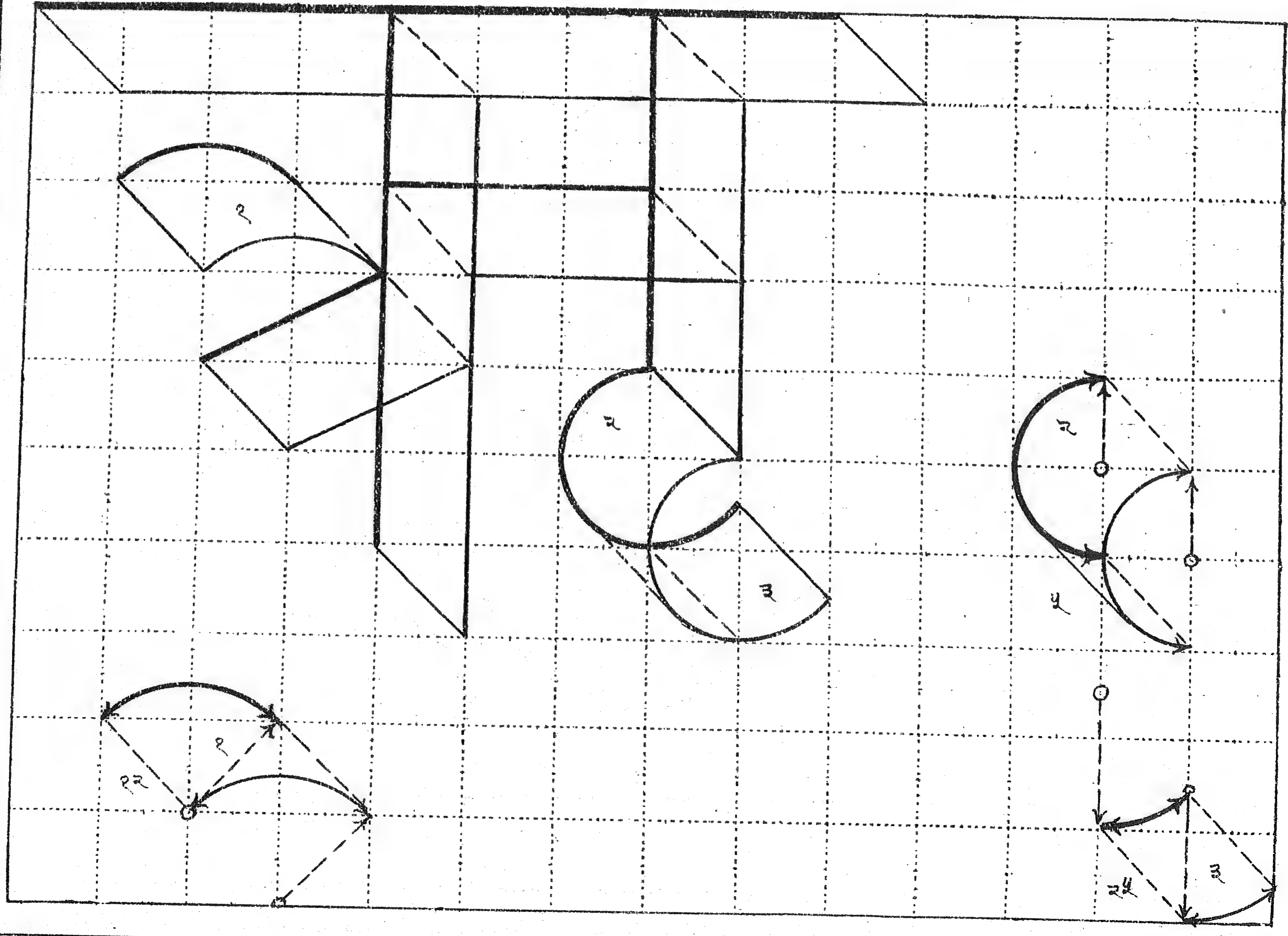


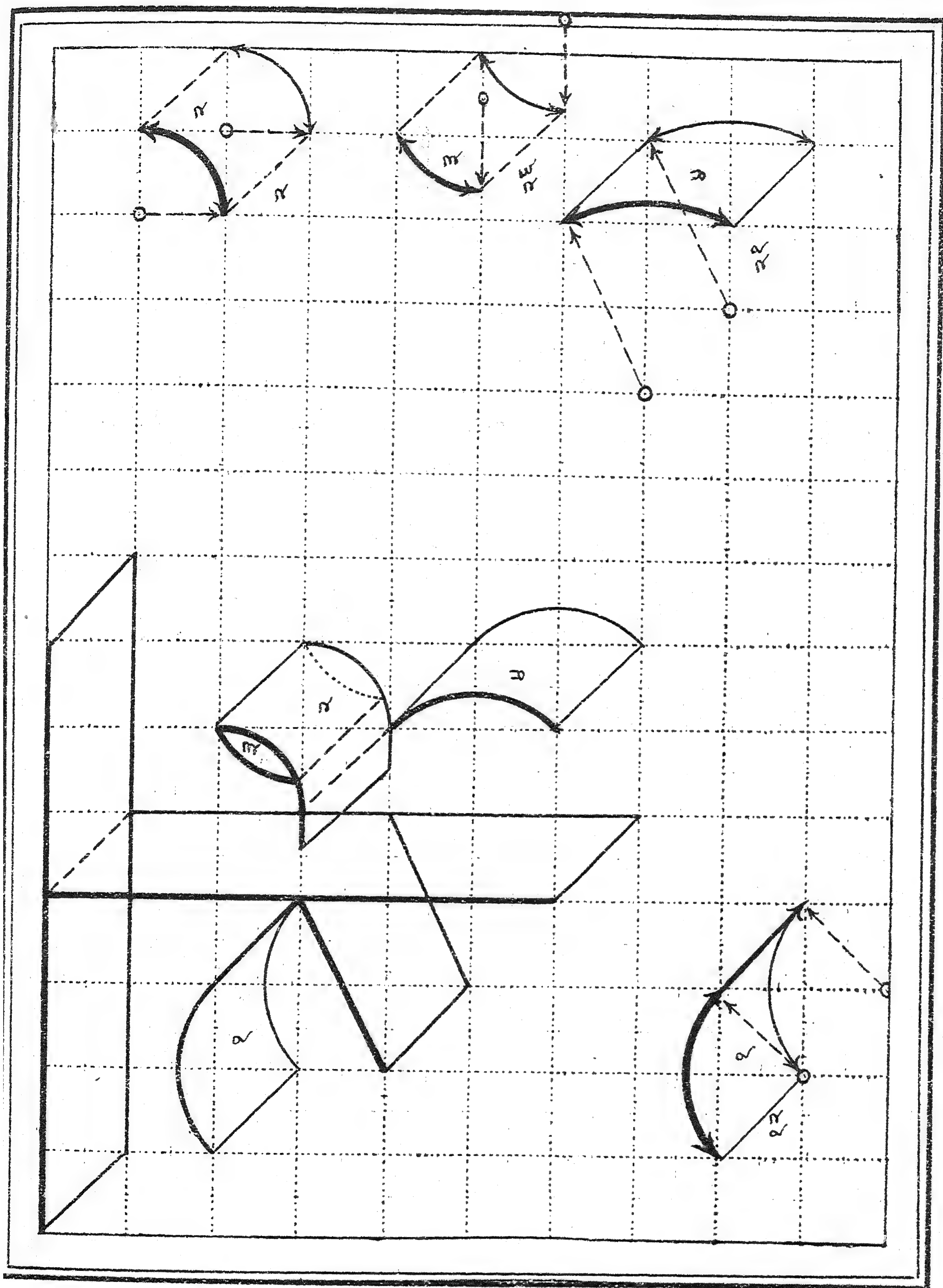


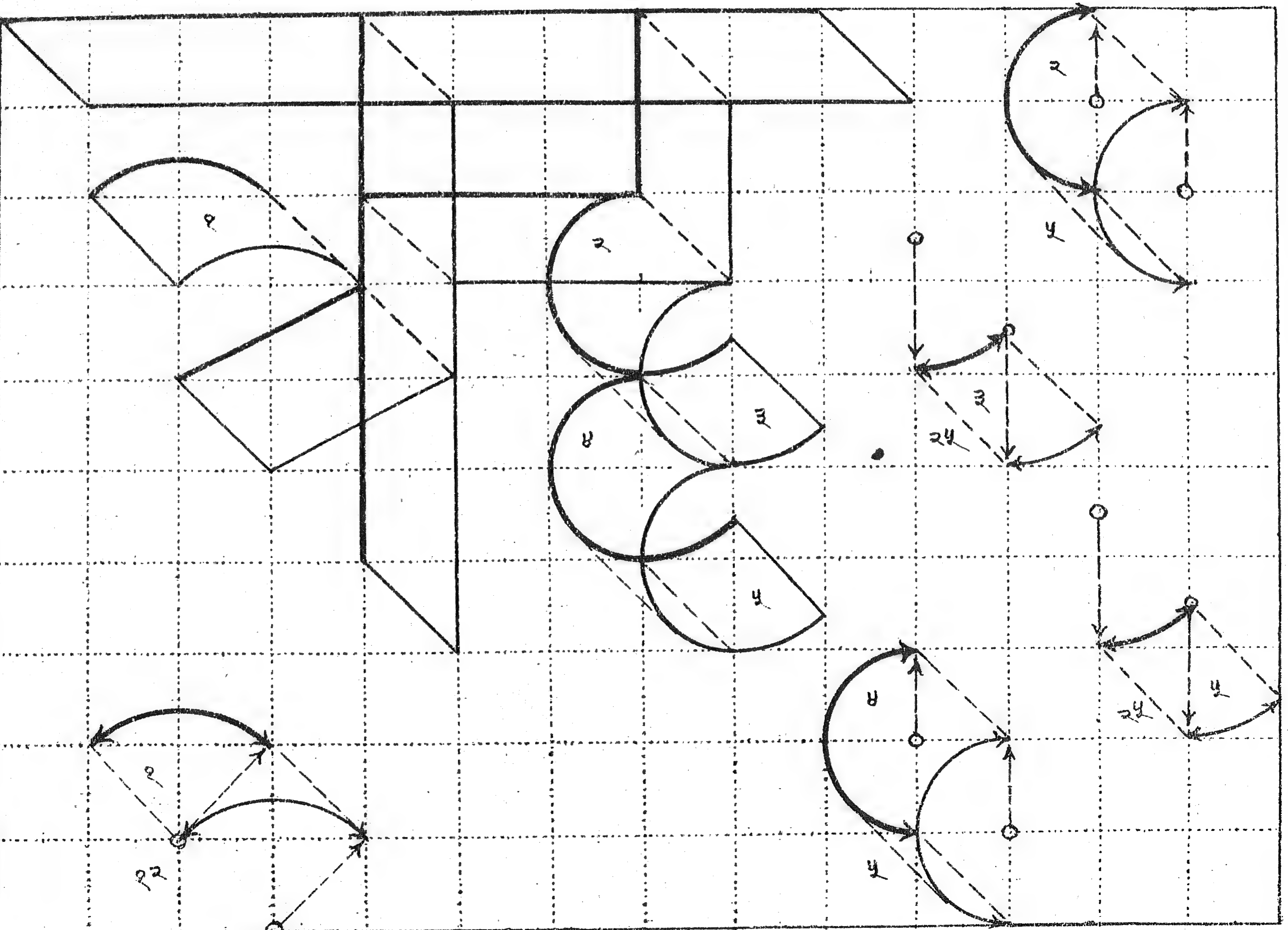


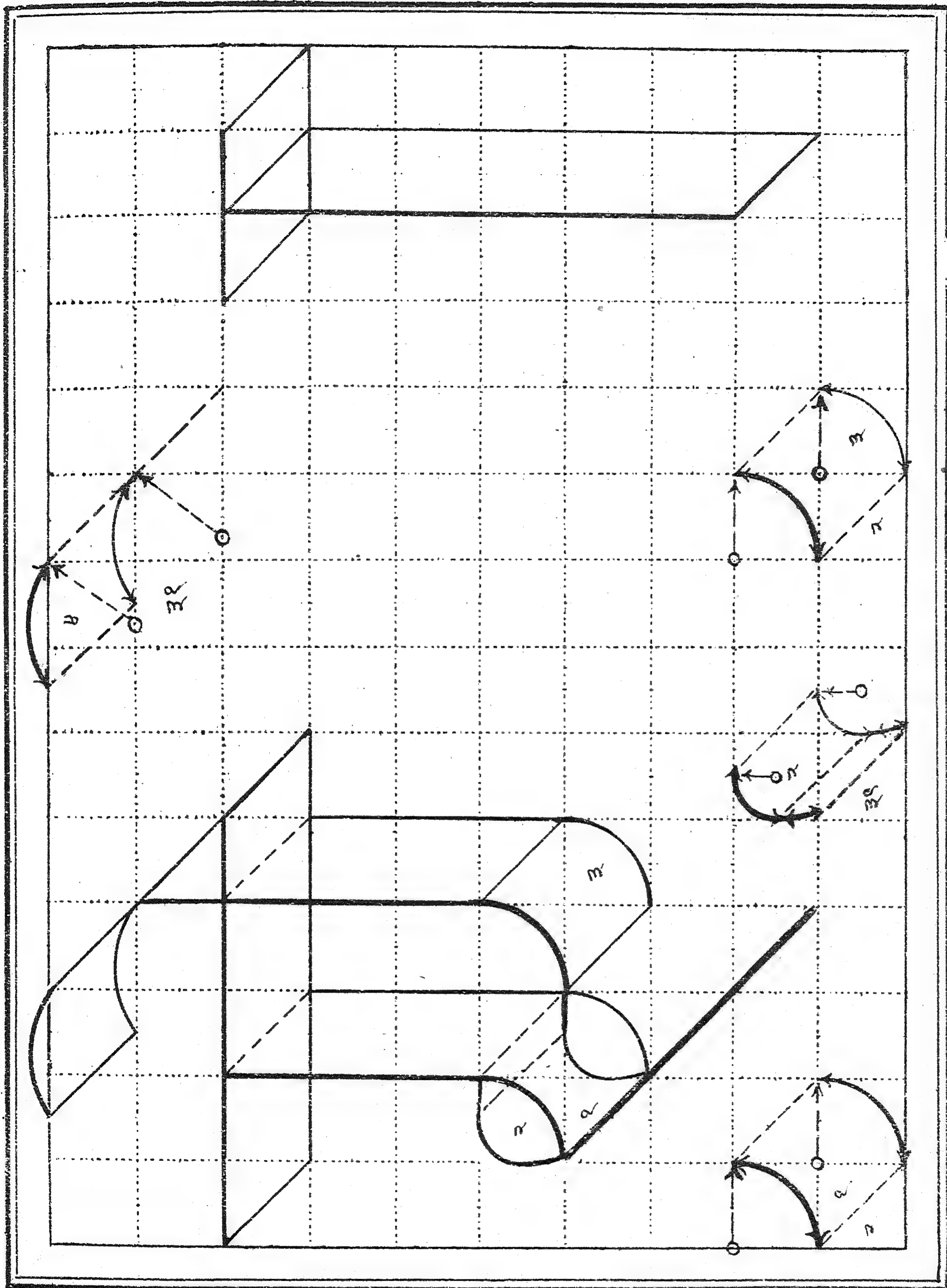


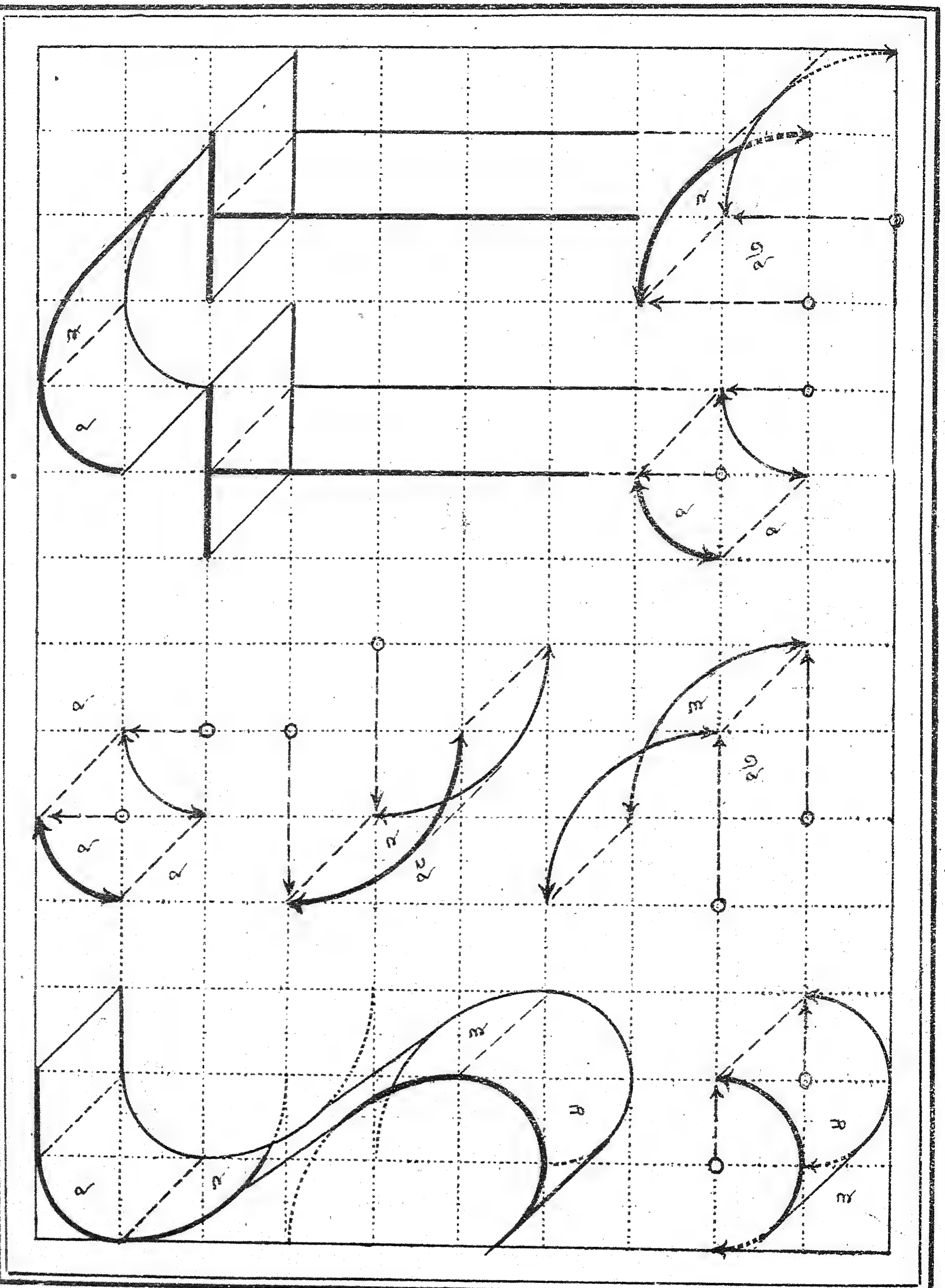


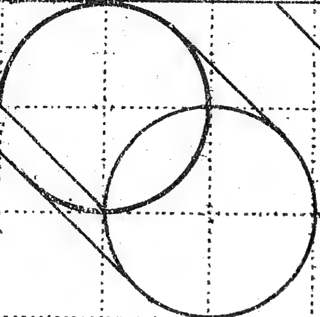


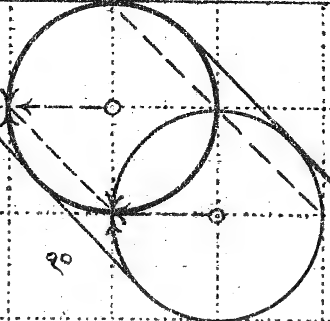


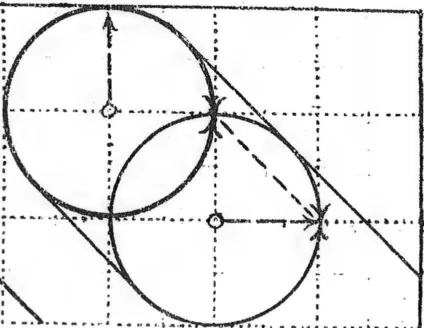


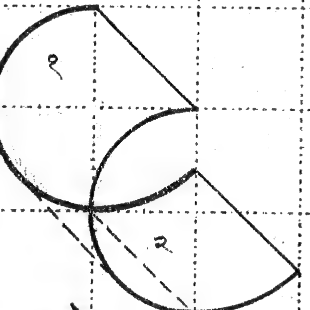


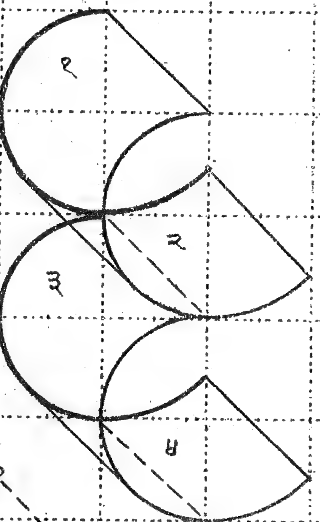


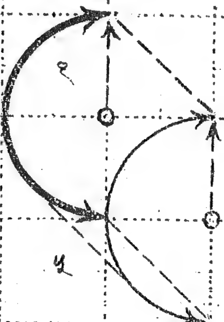


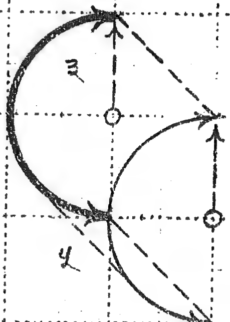

२०

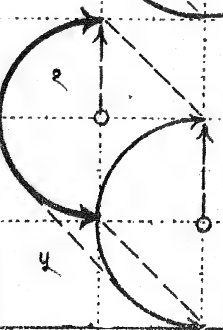


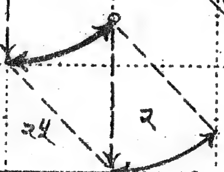


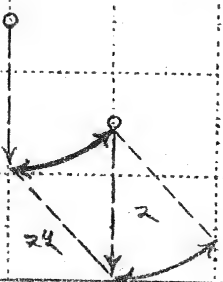


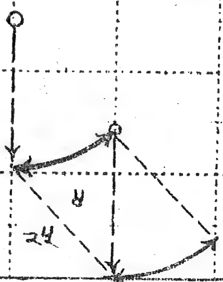


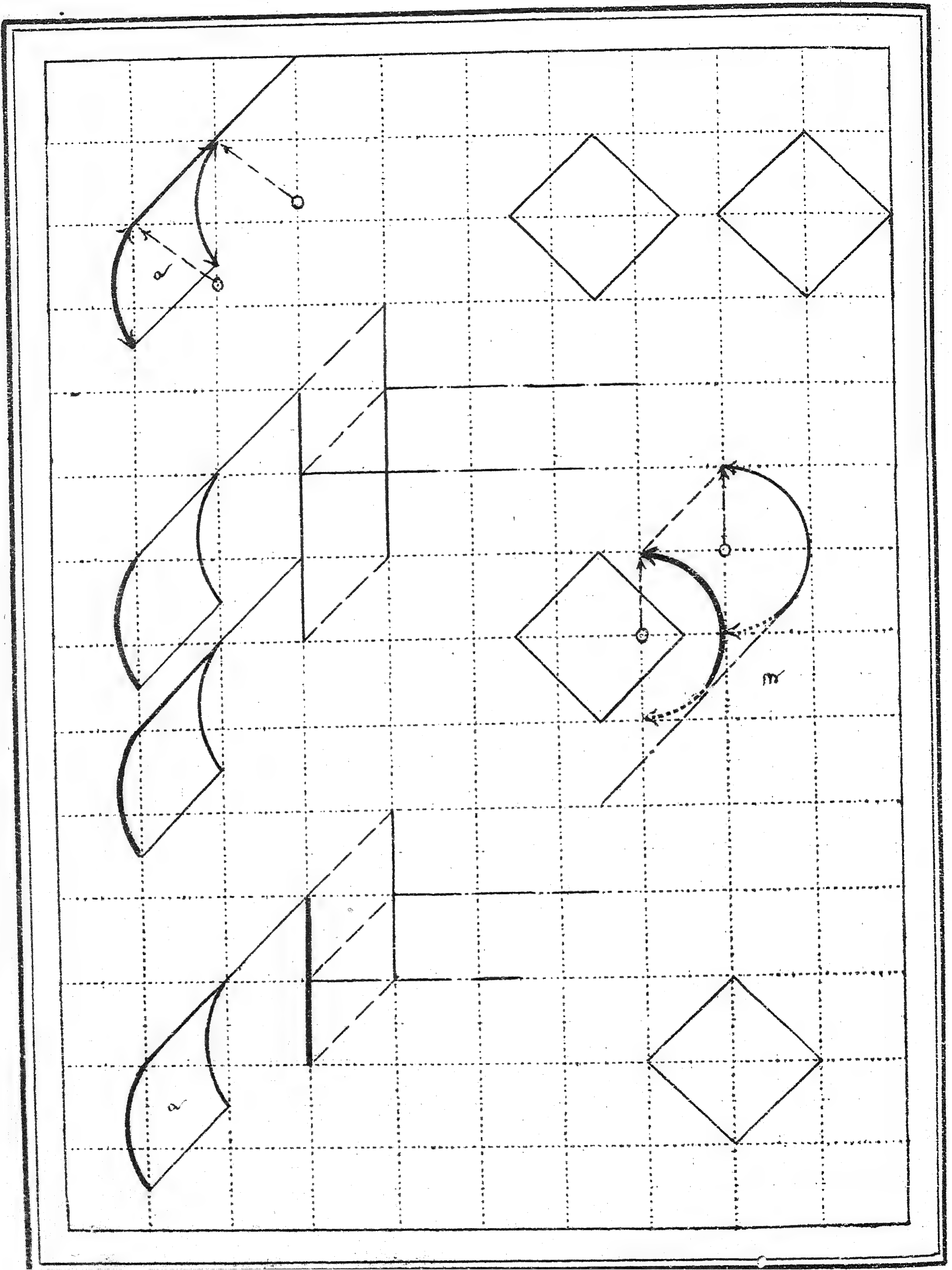


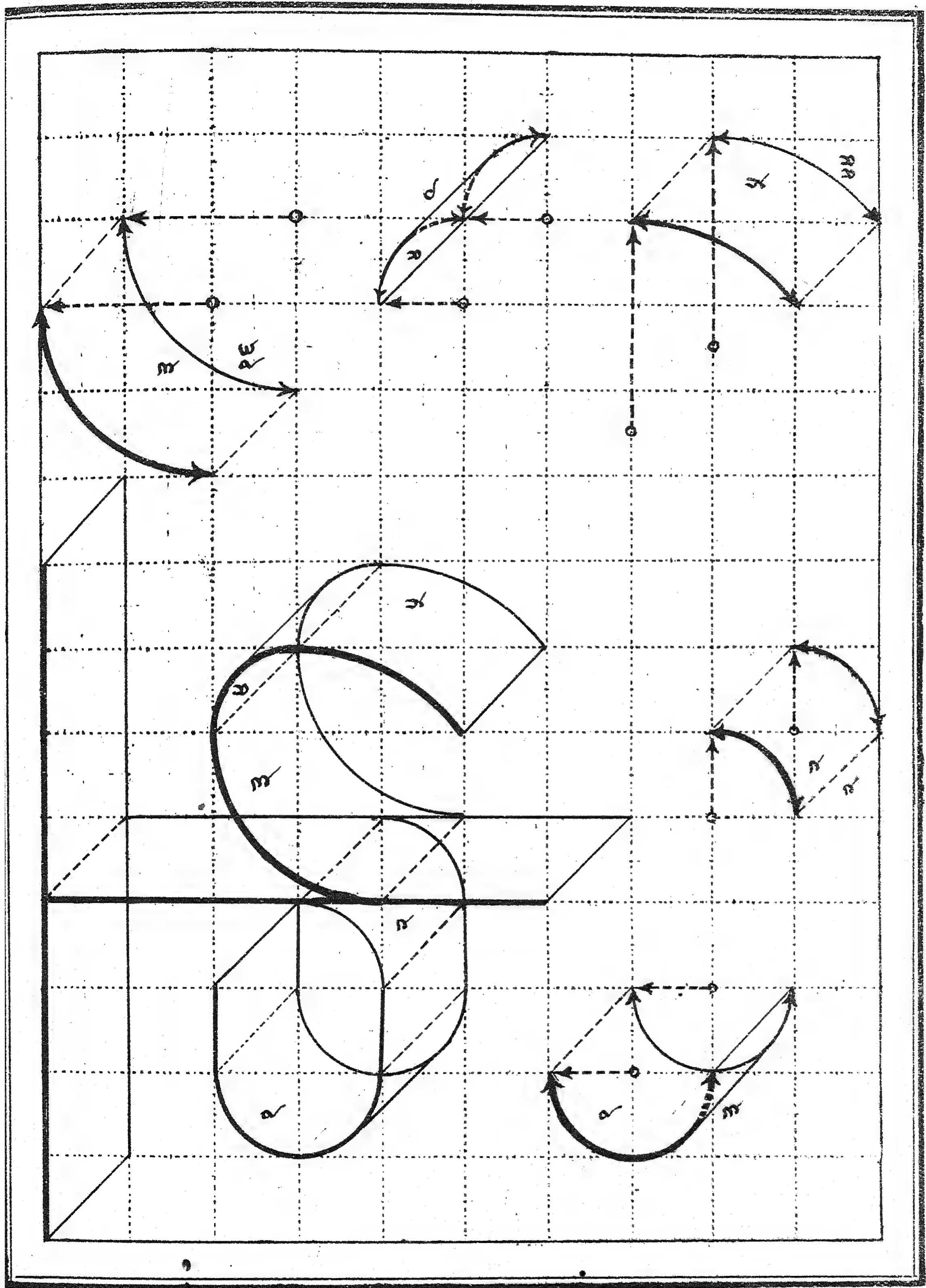


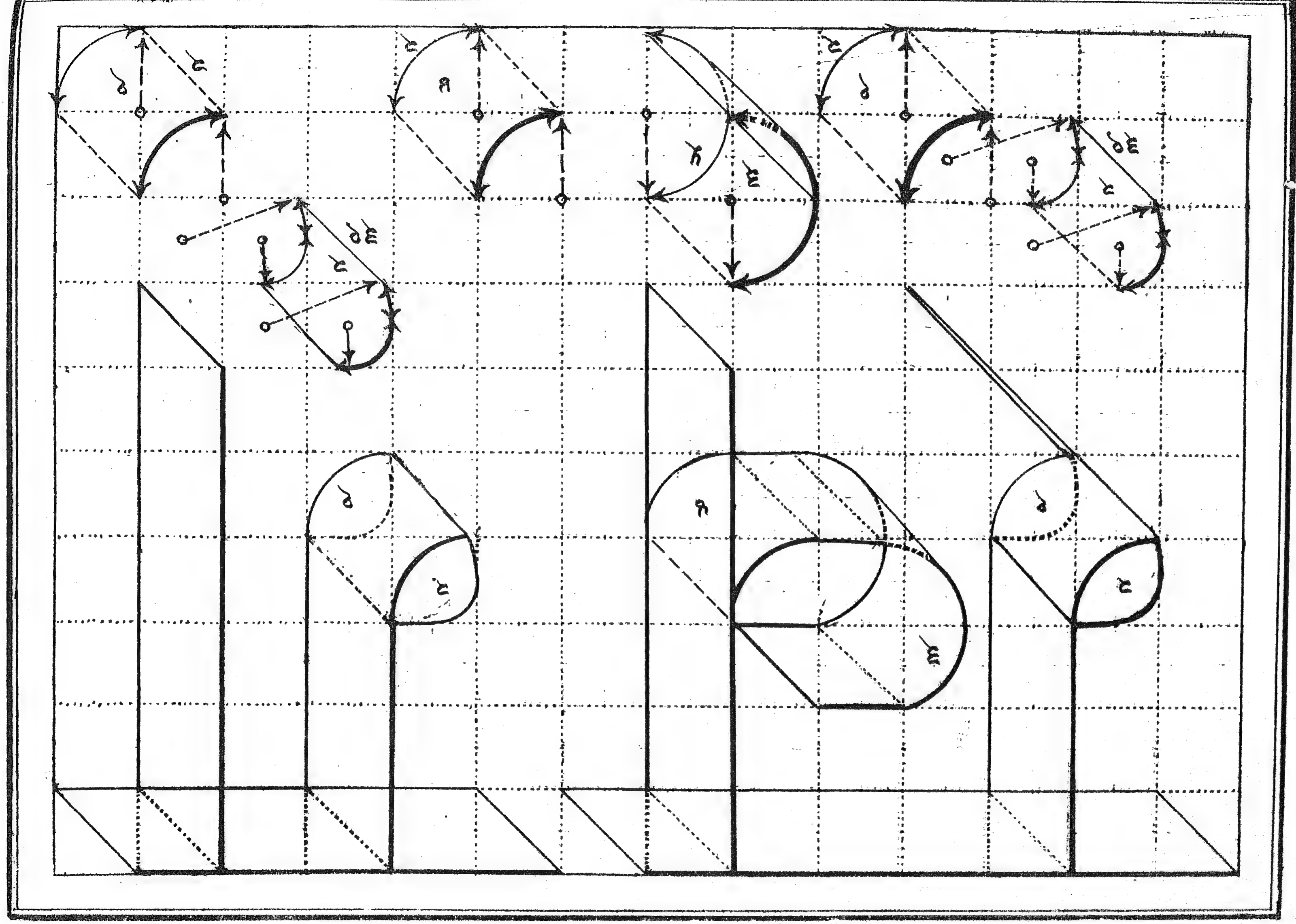


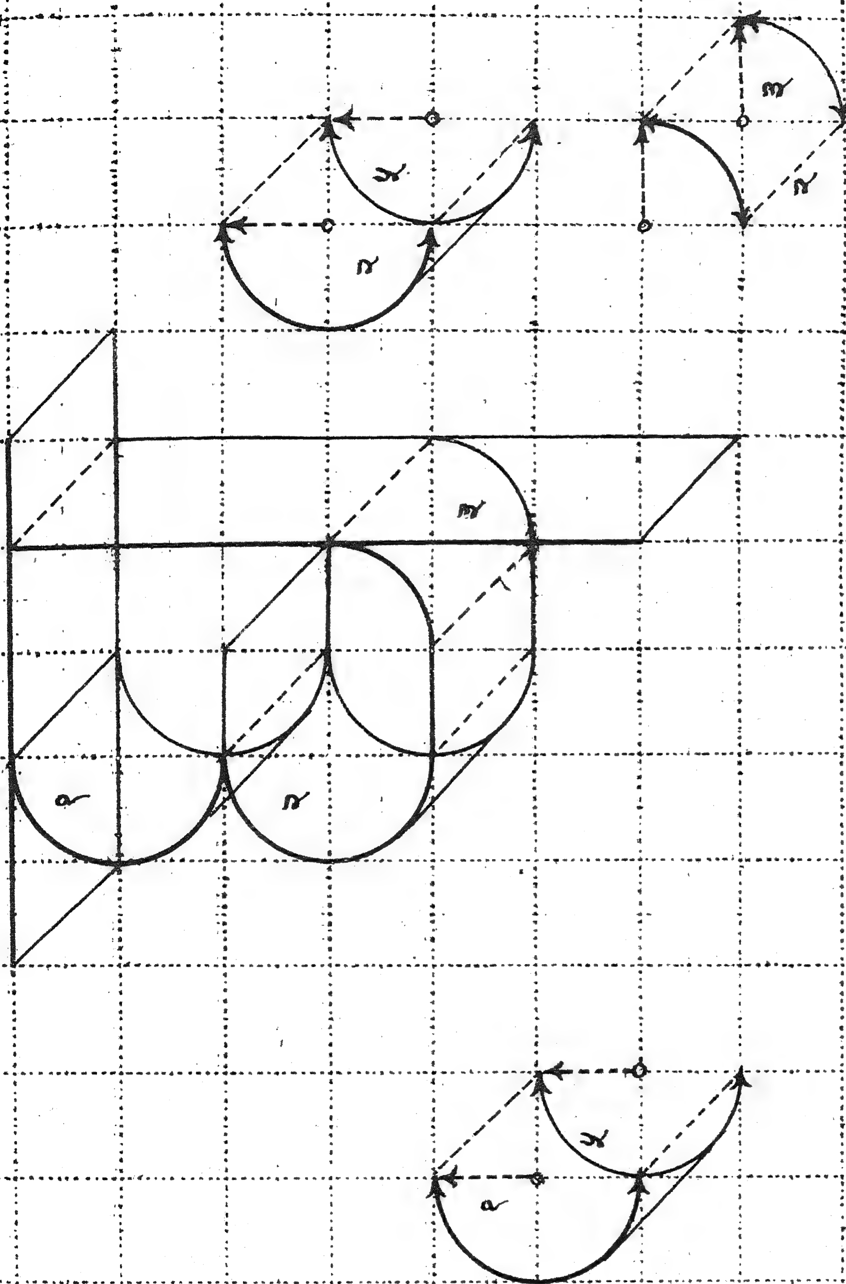


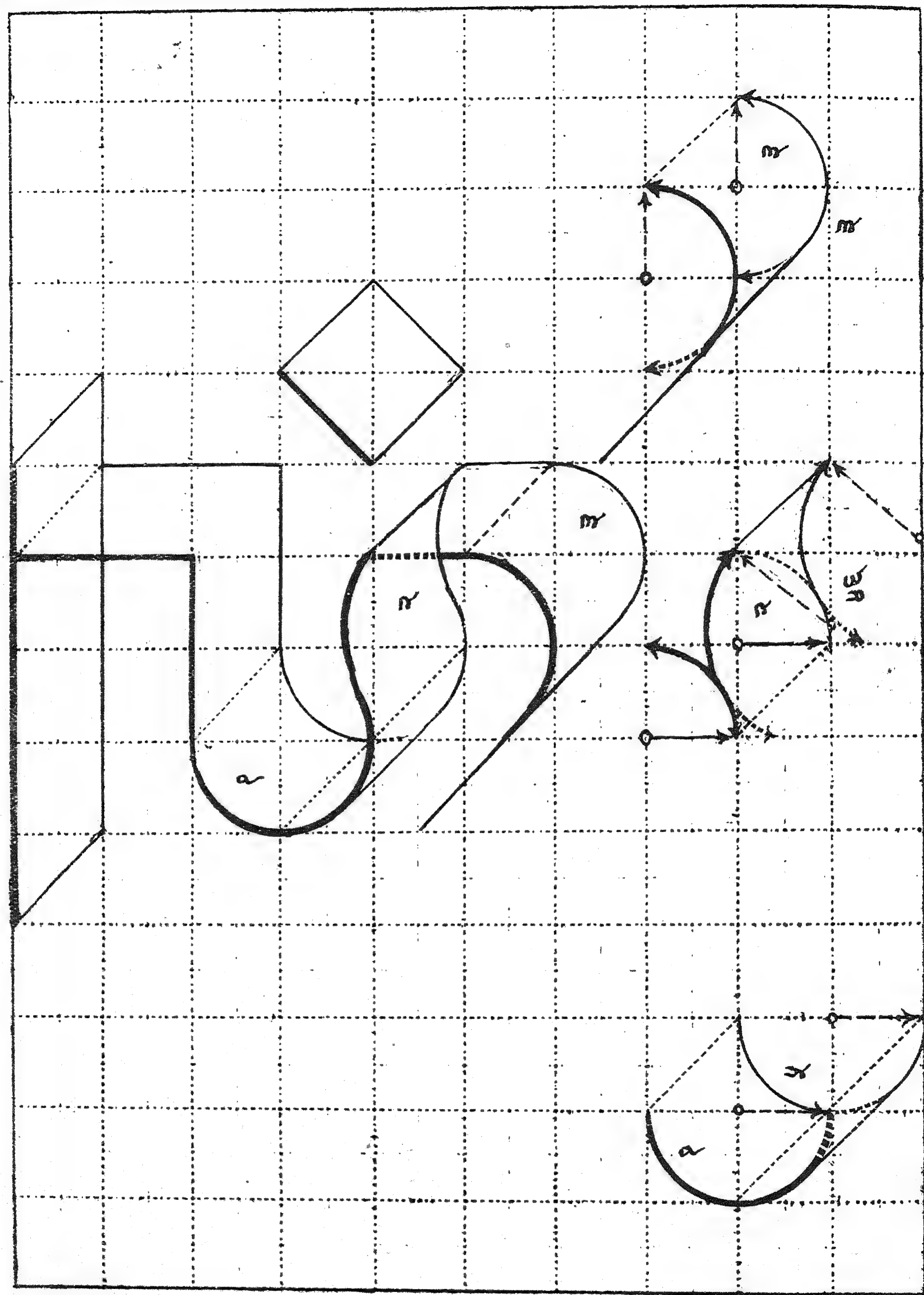


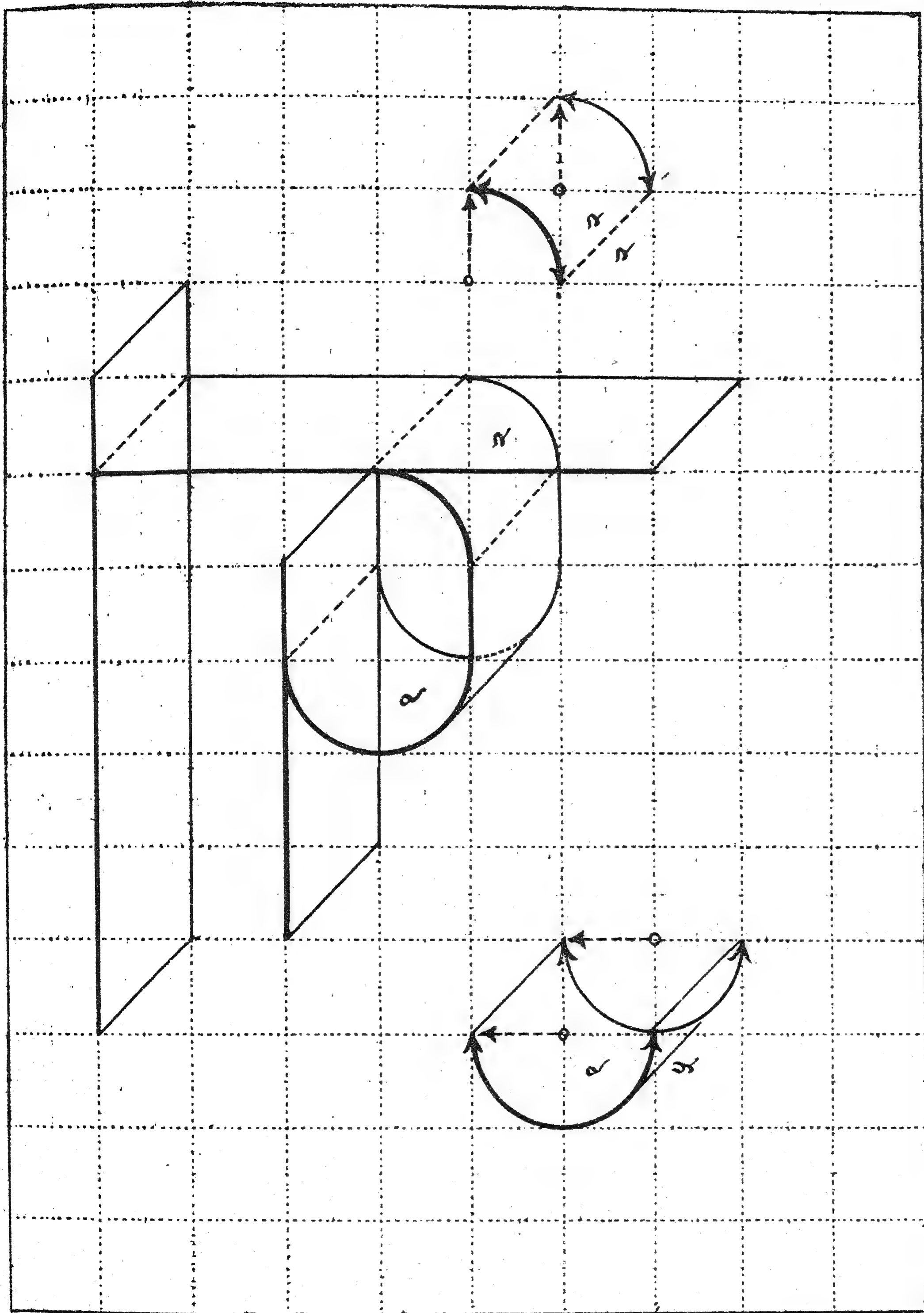

a
m
a

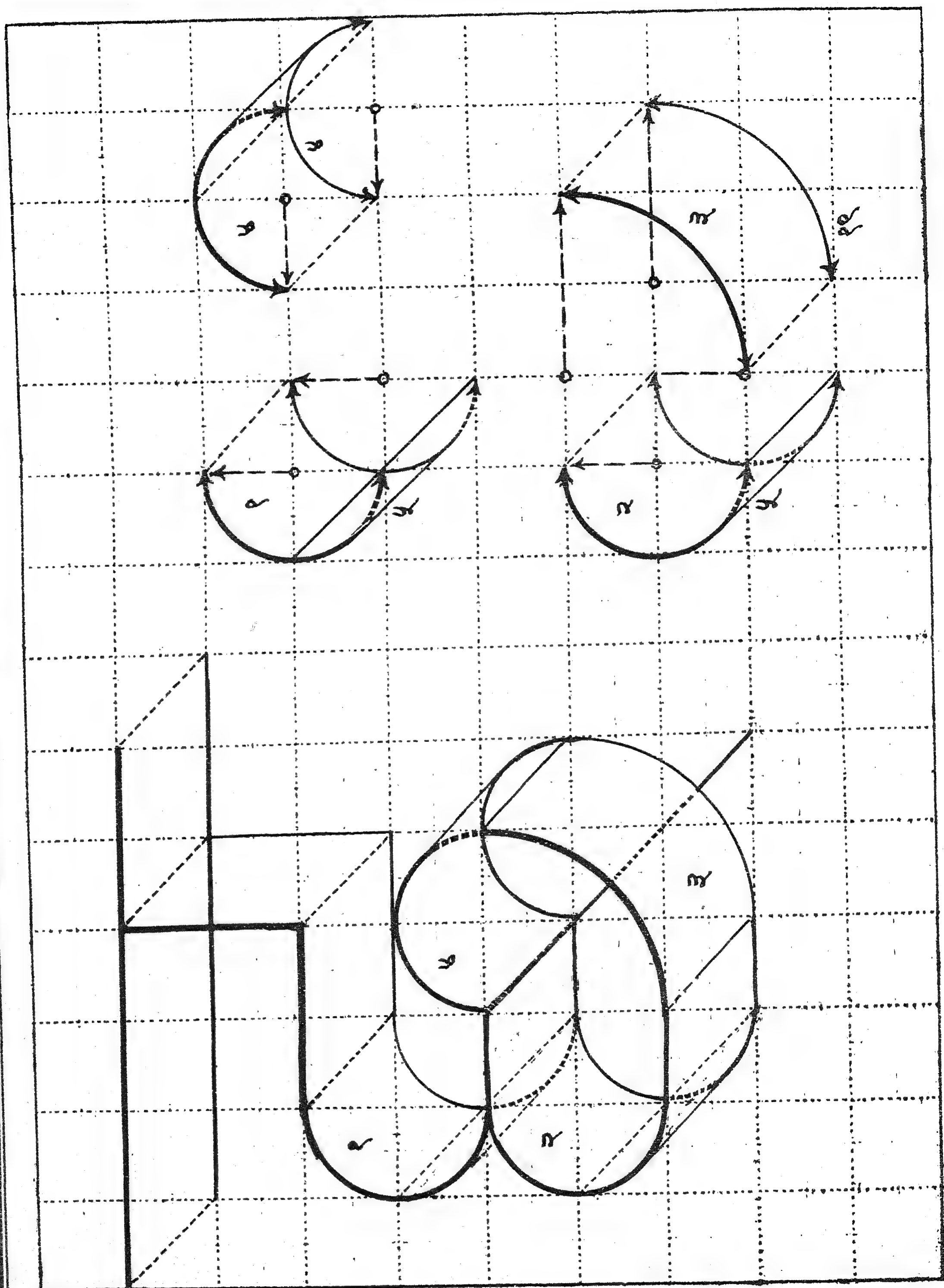


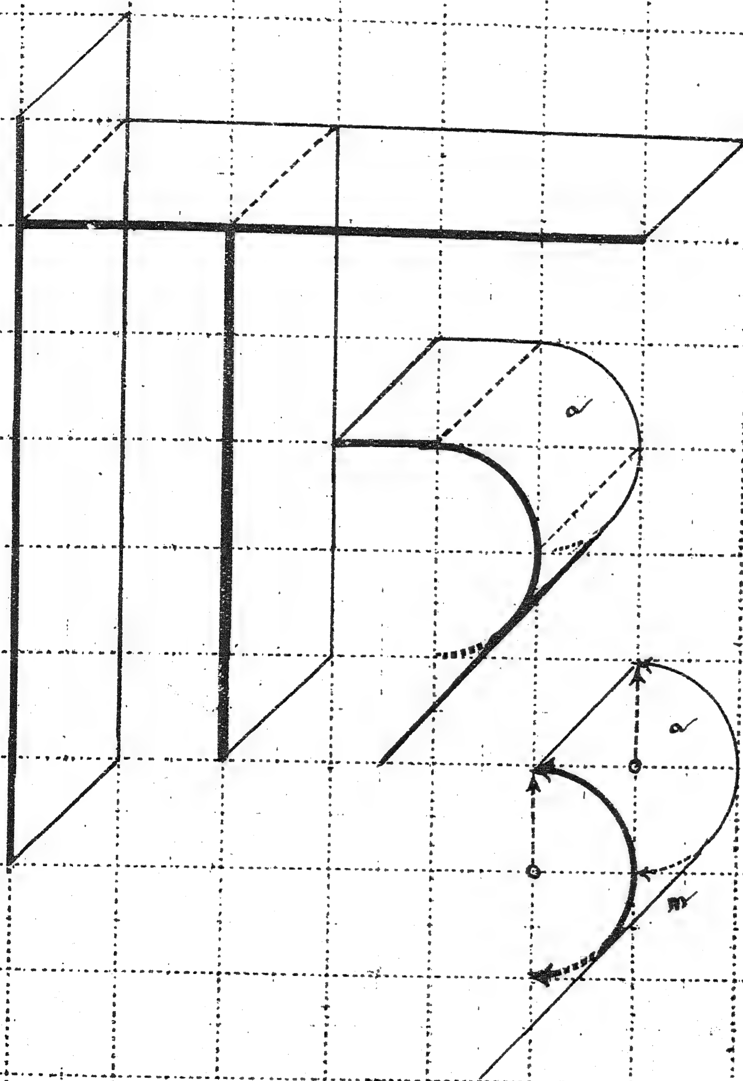


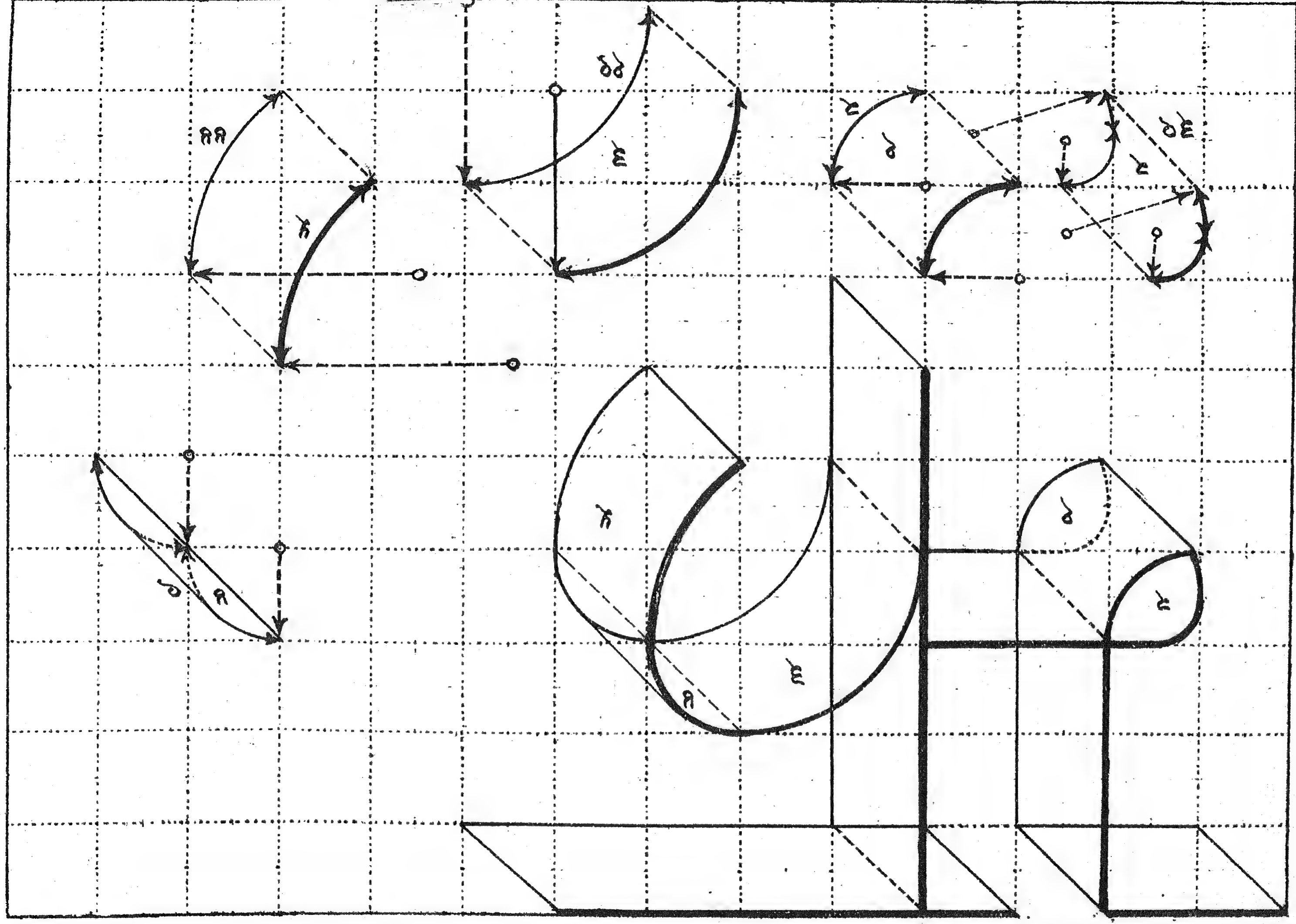


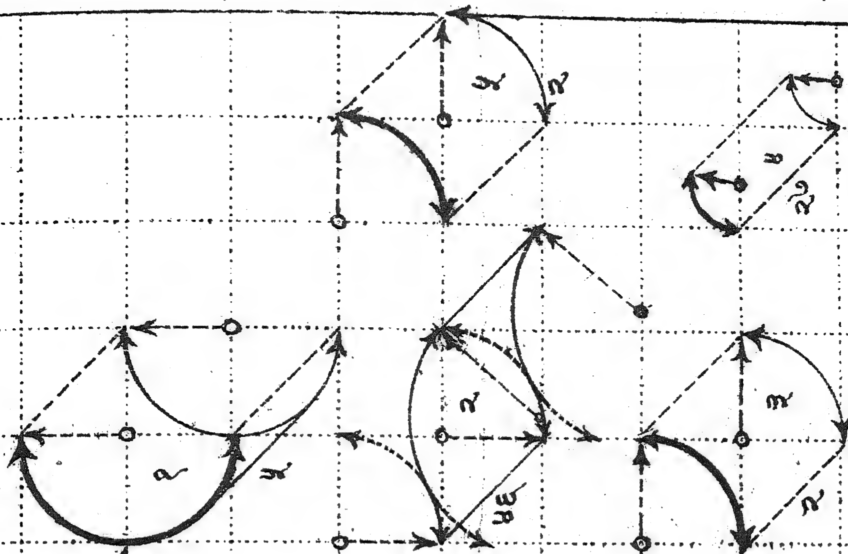


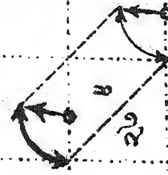


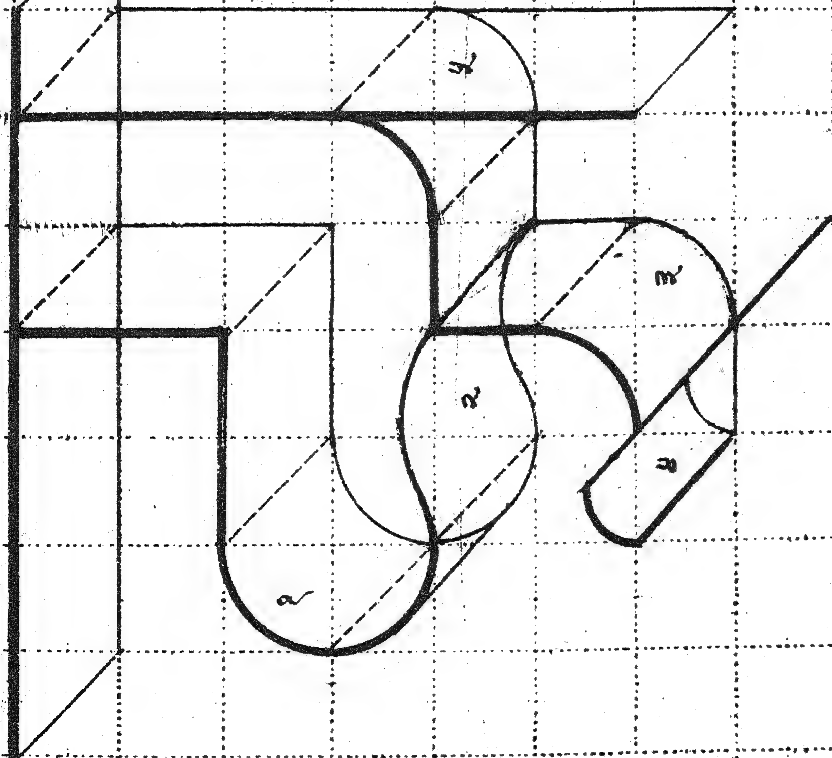


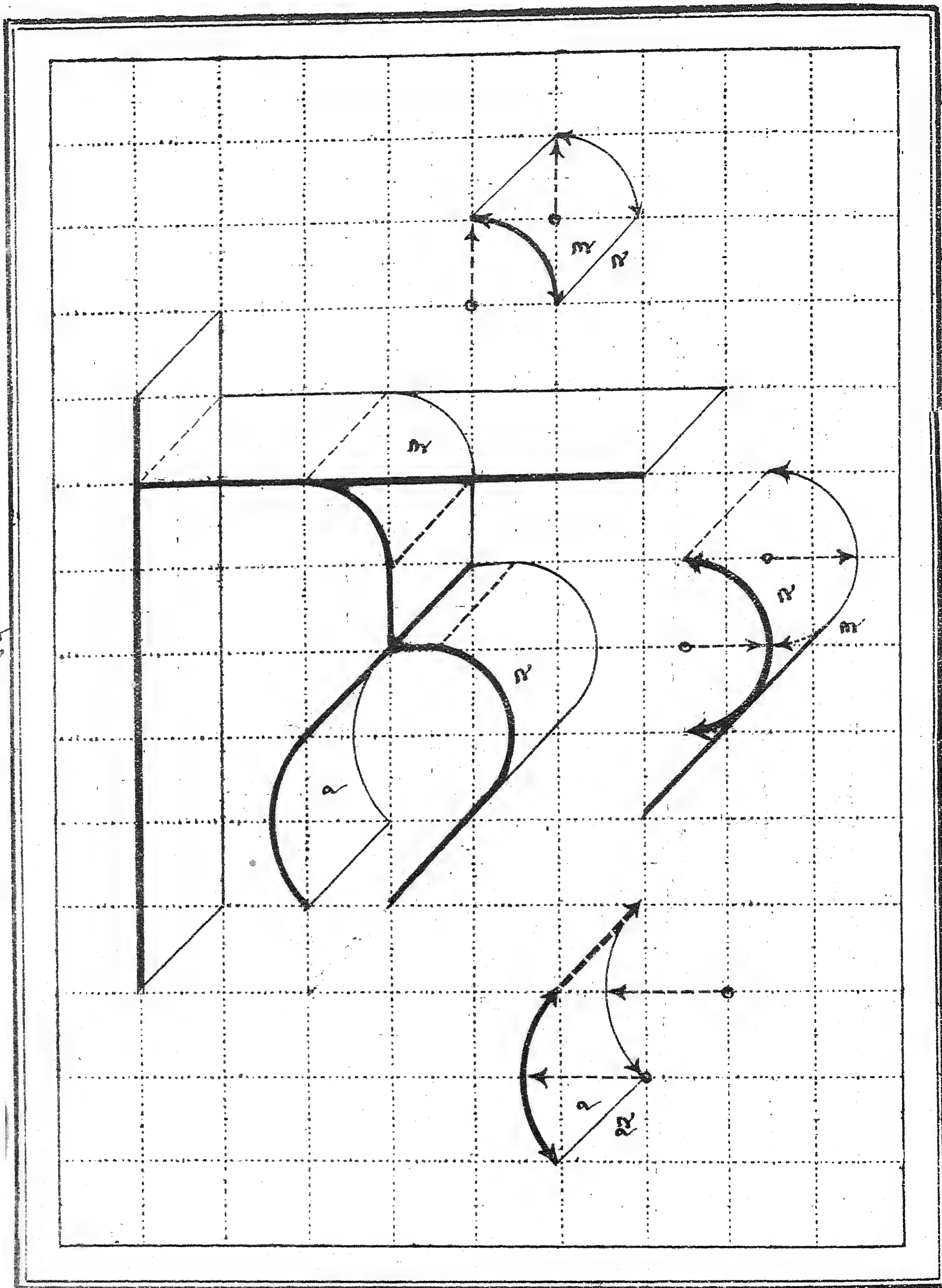


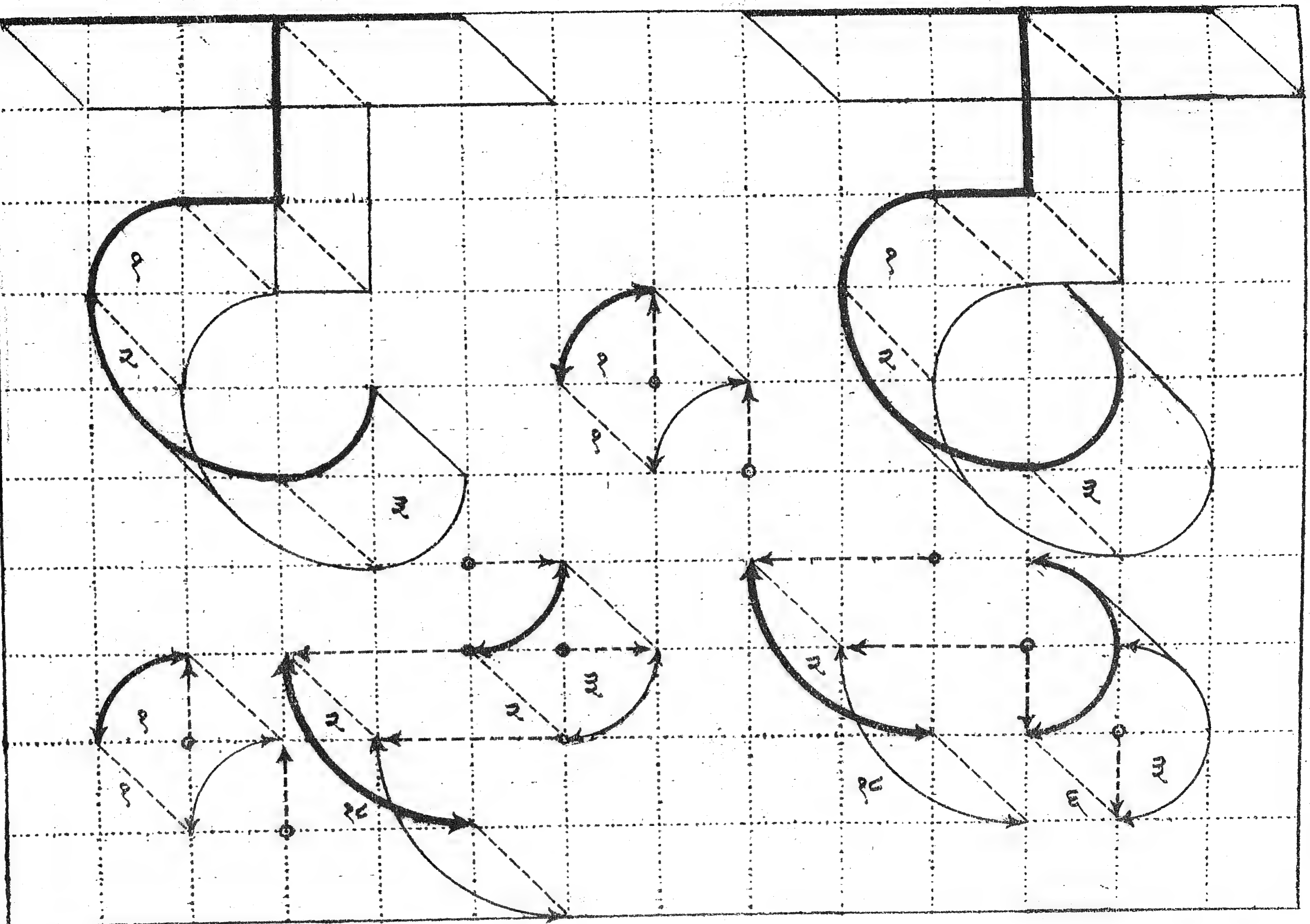


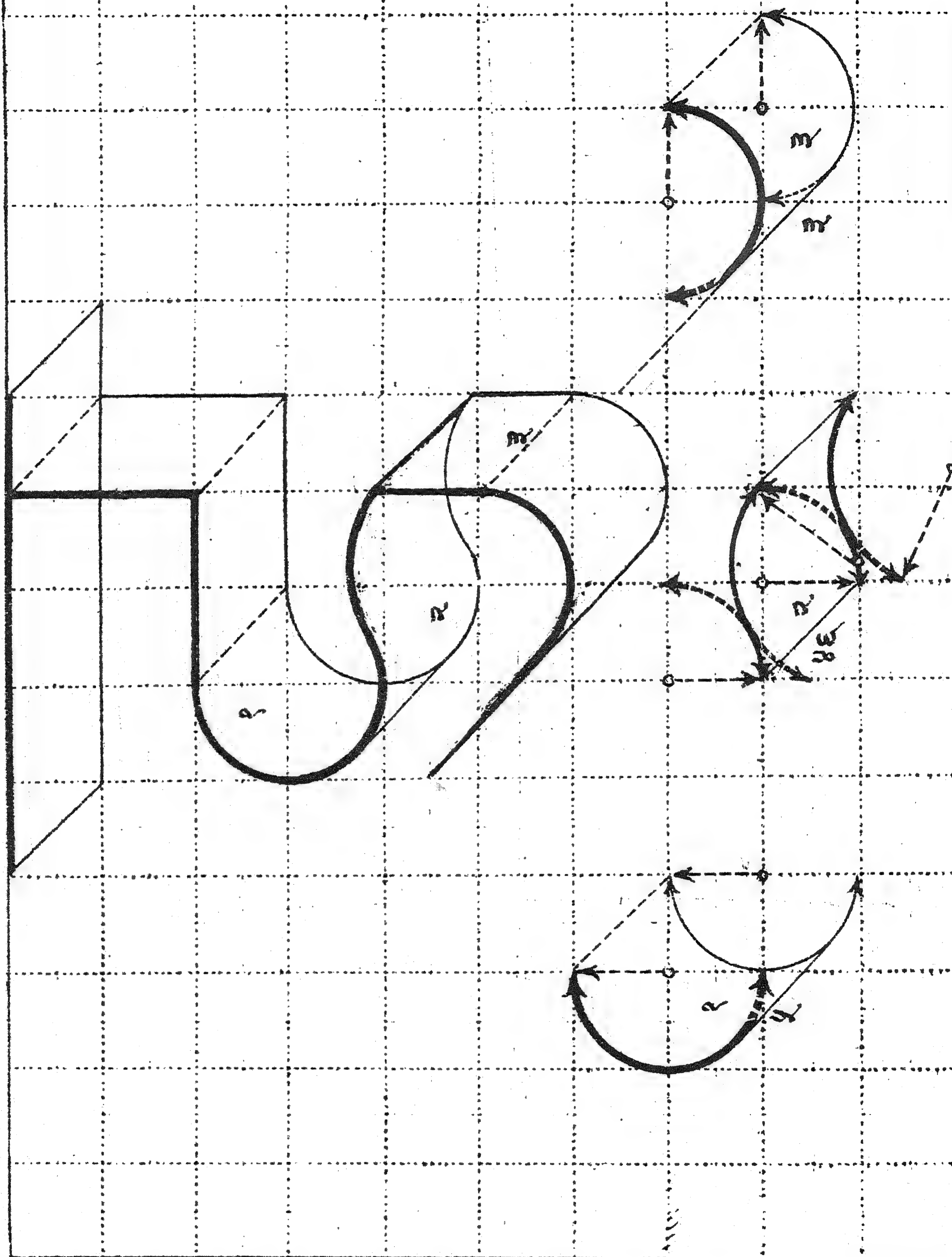


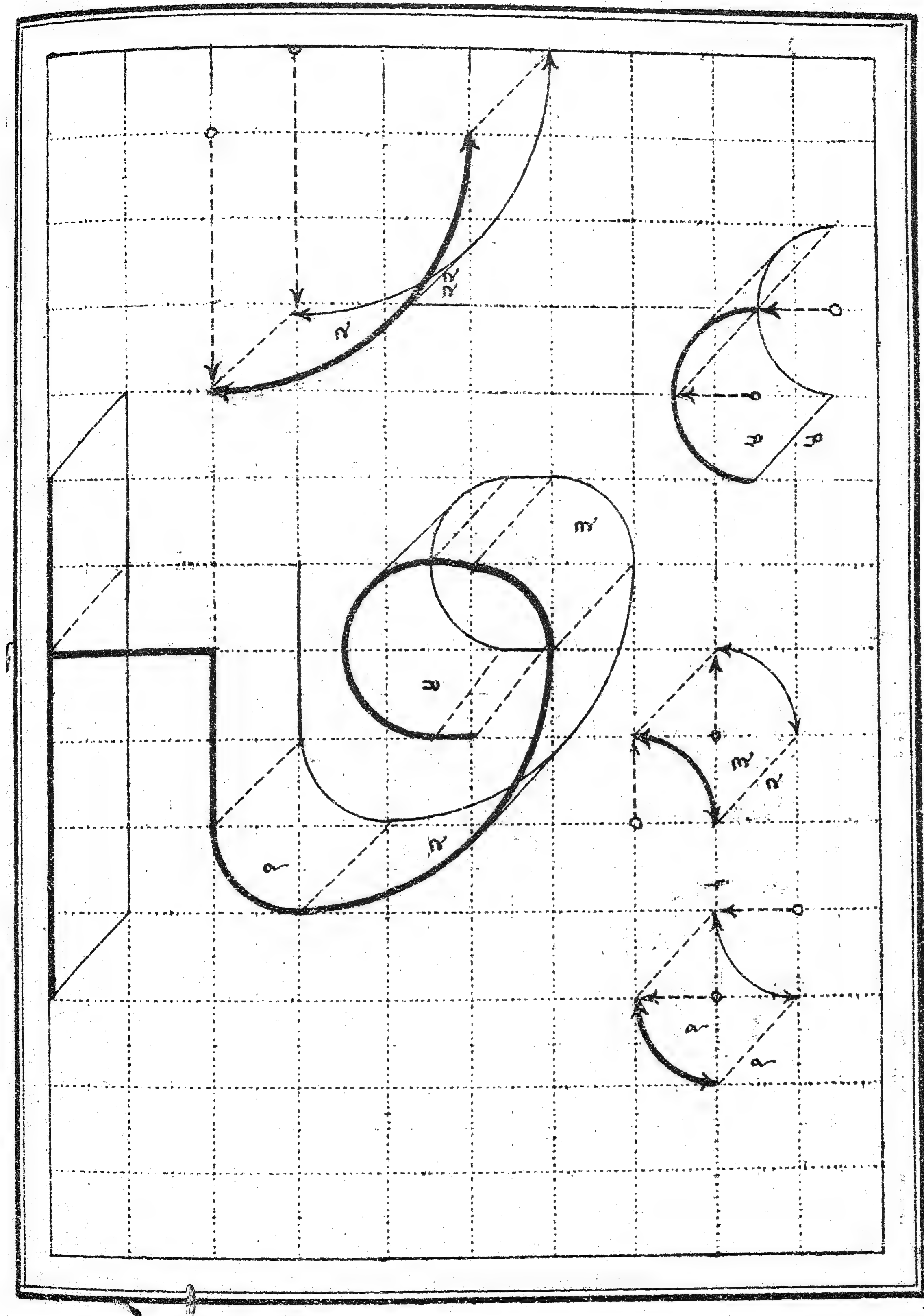


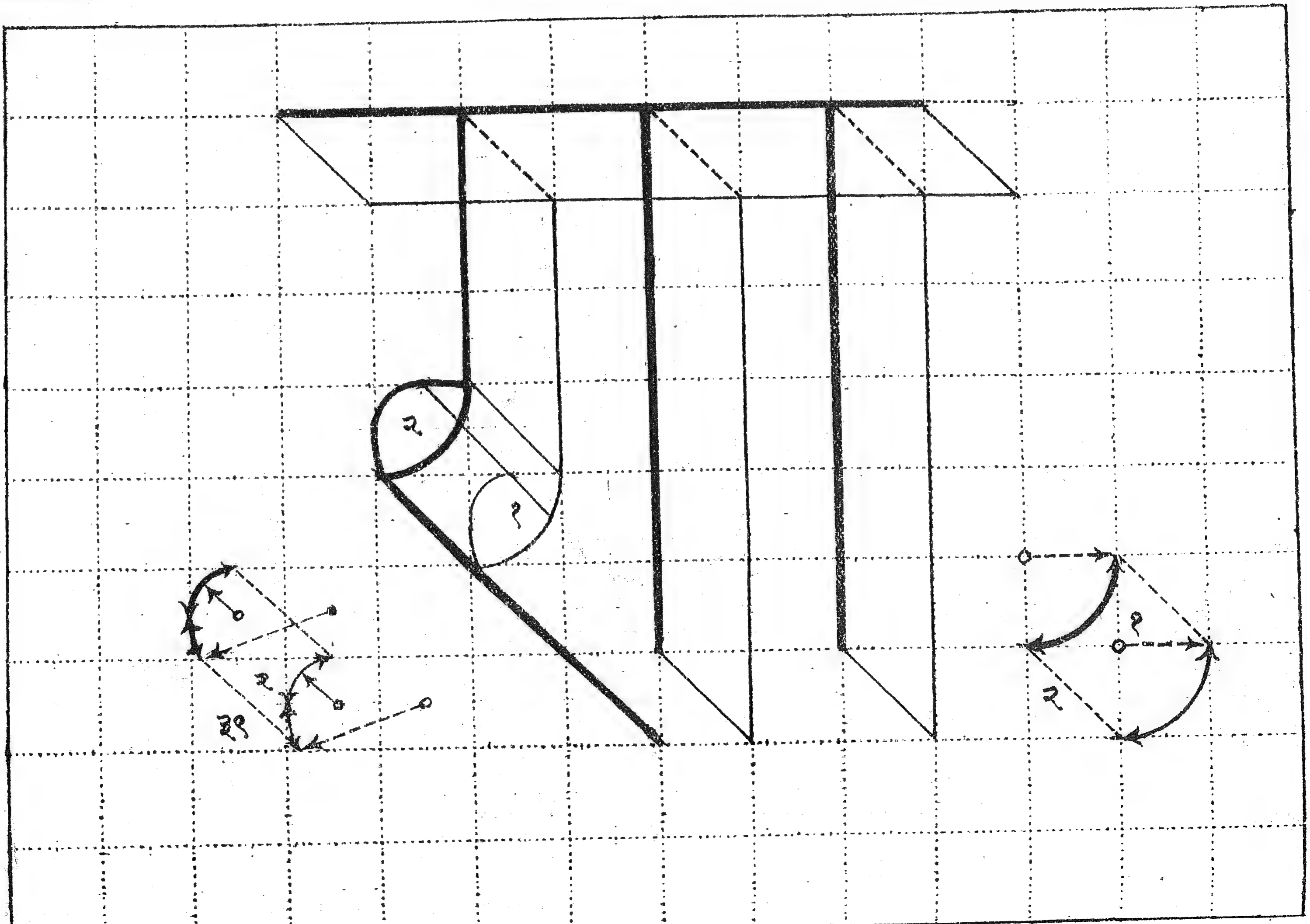


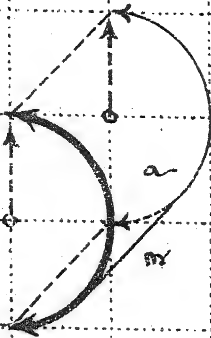


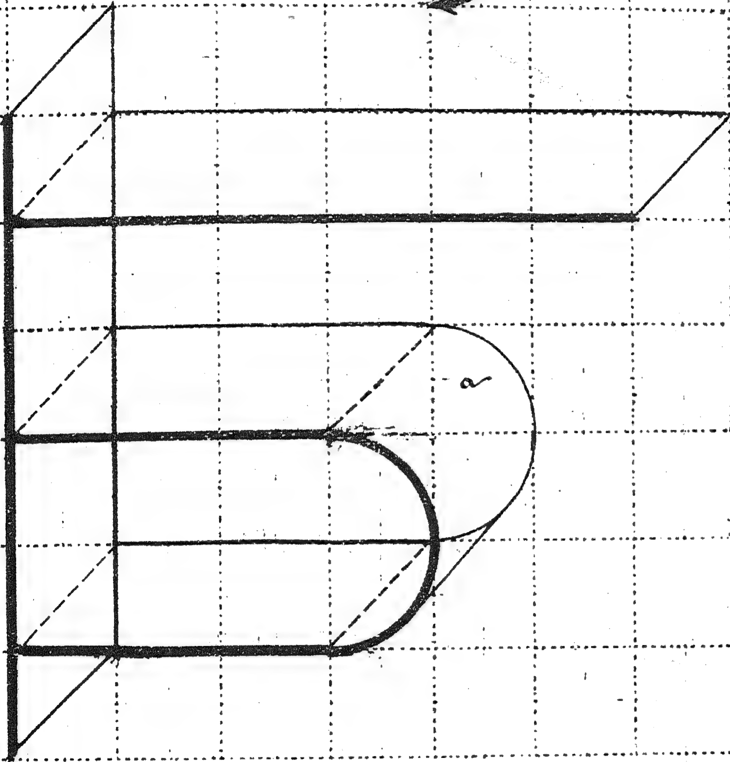

१
२
३

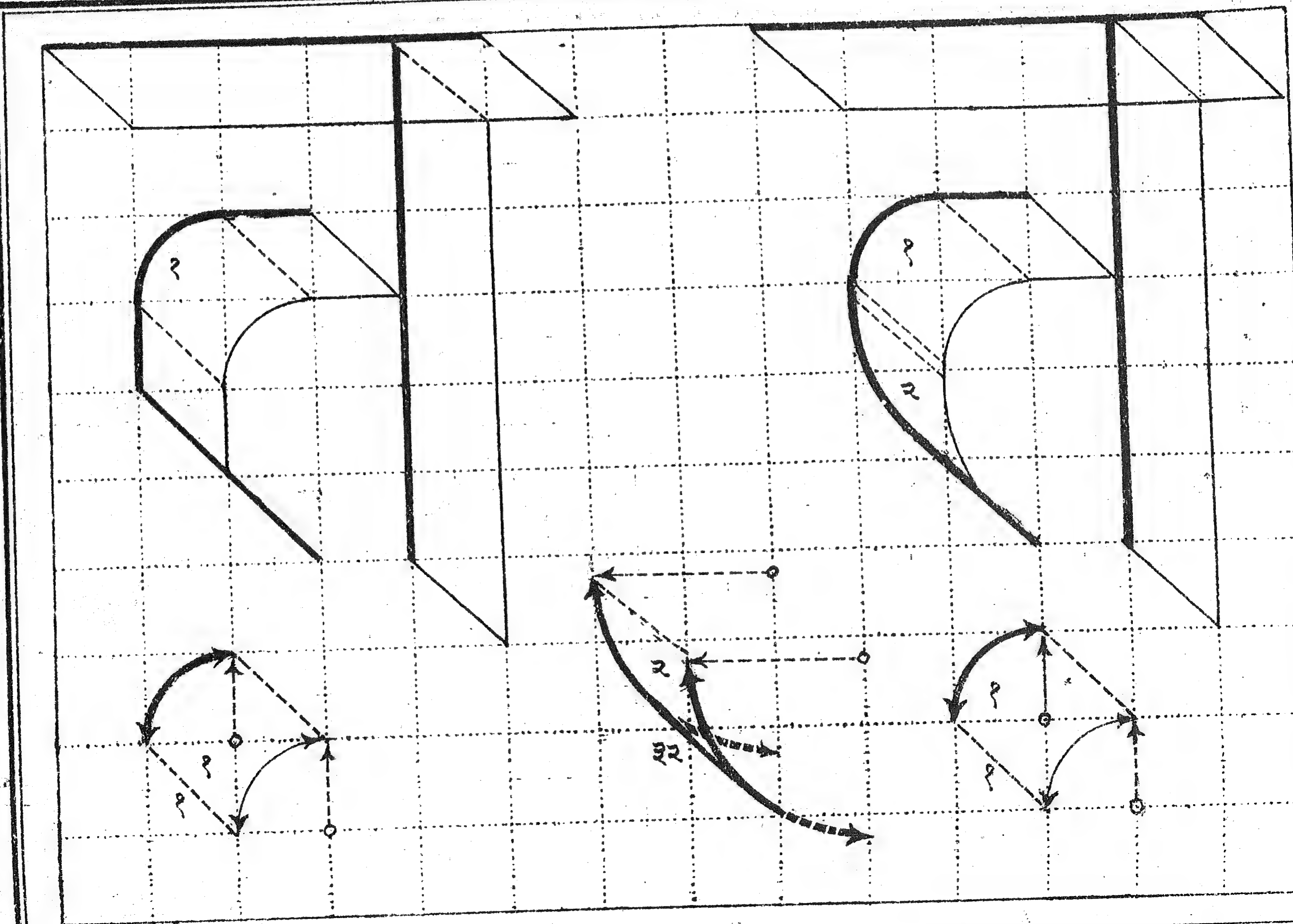


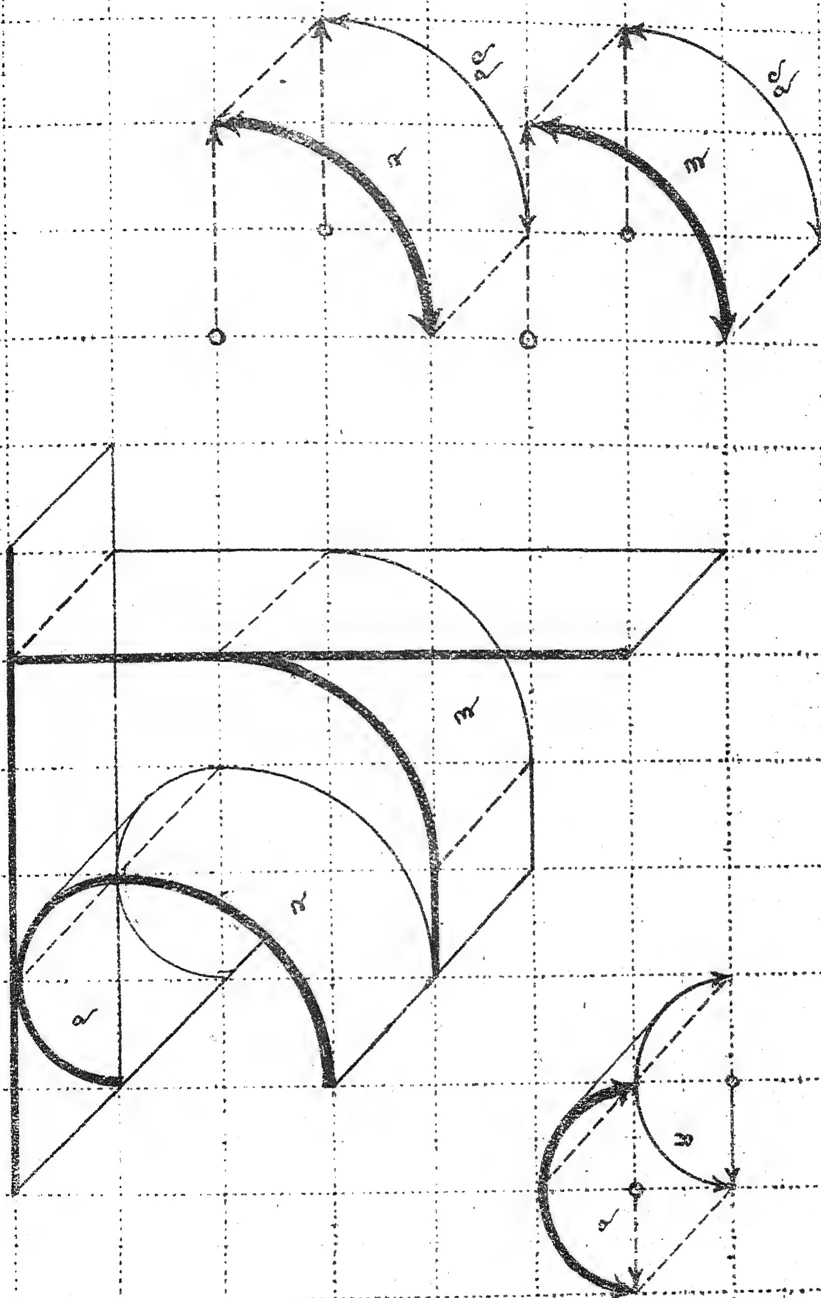


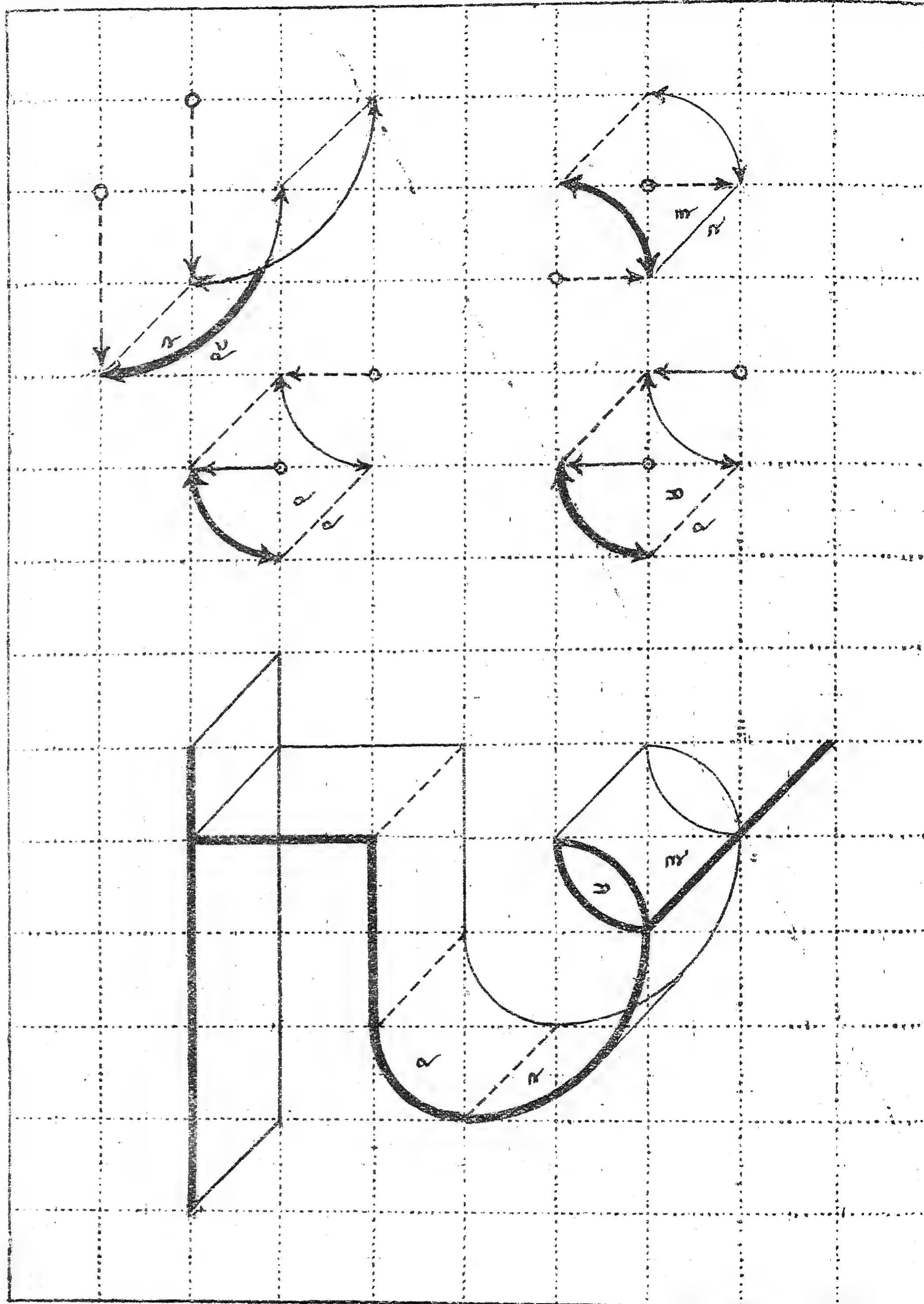

२
१
१
२
२
३१

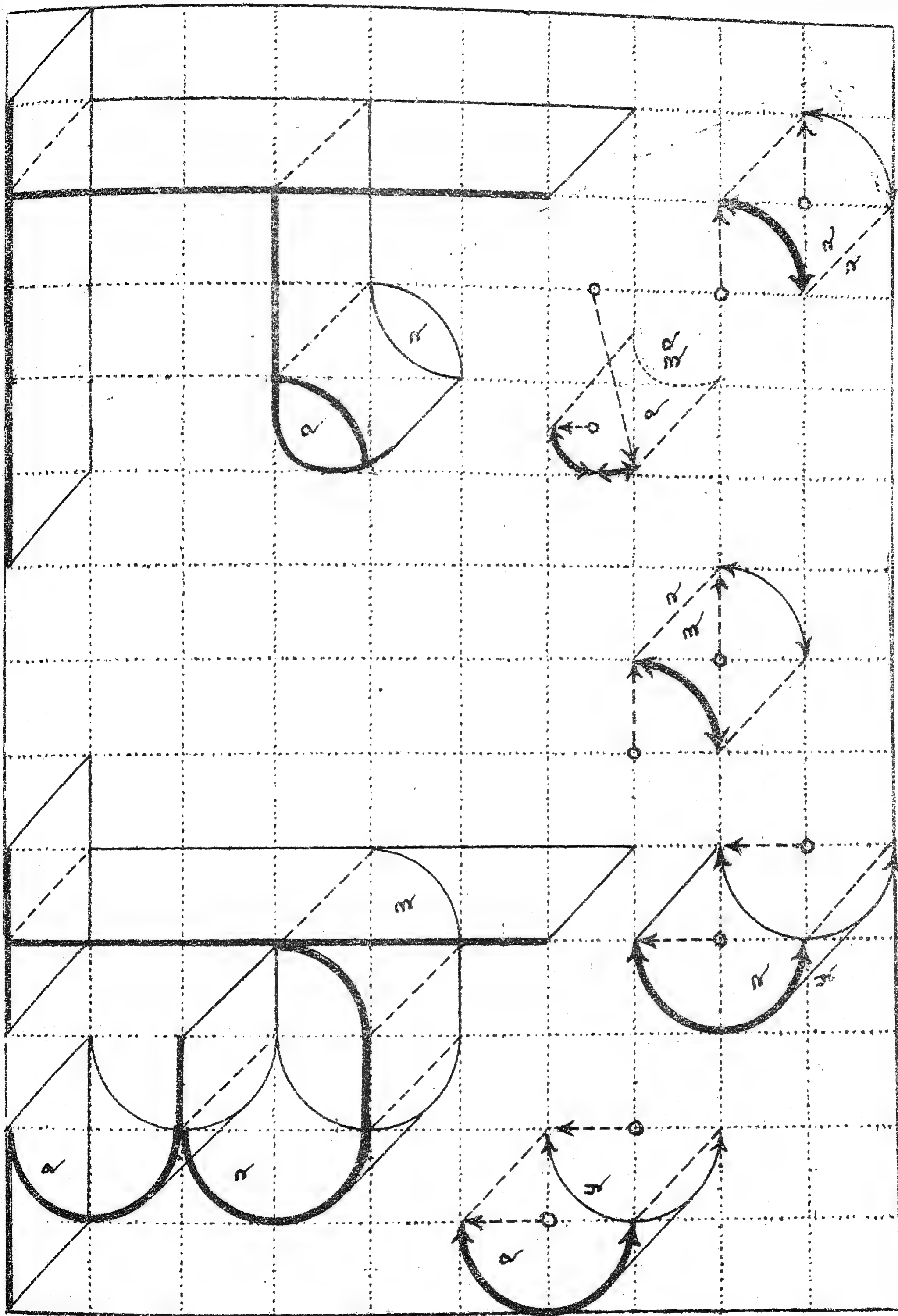


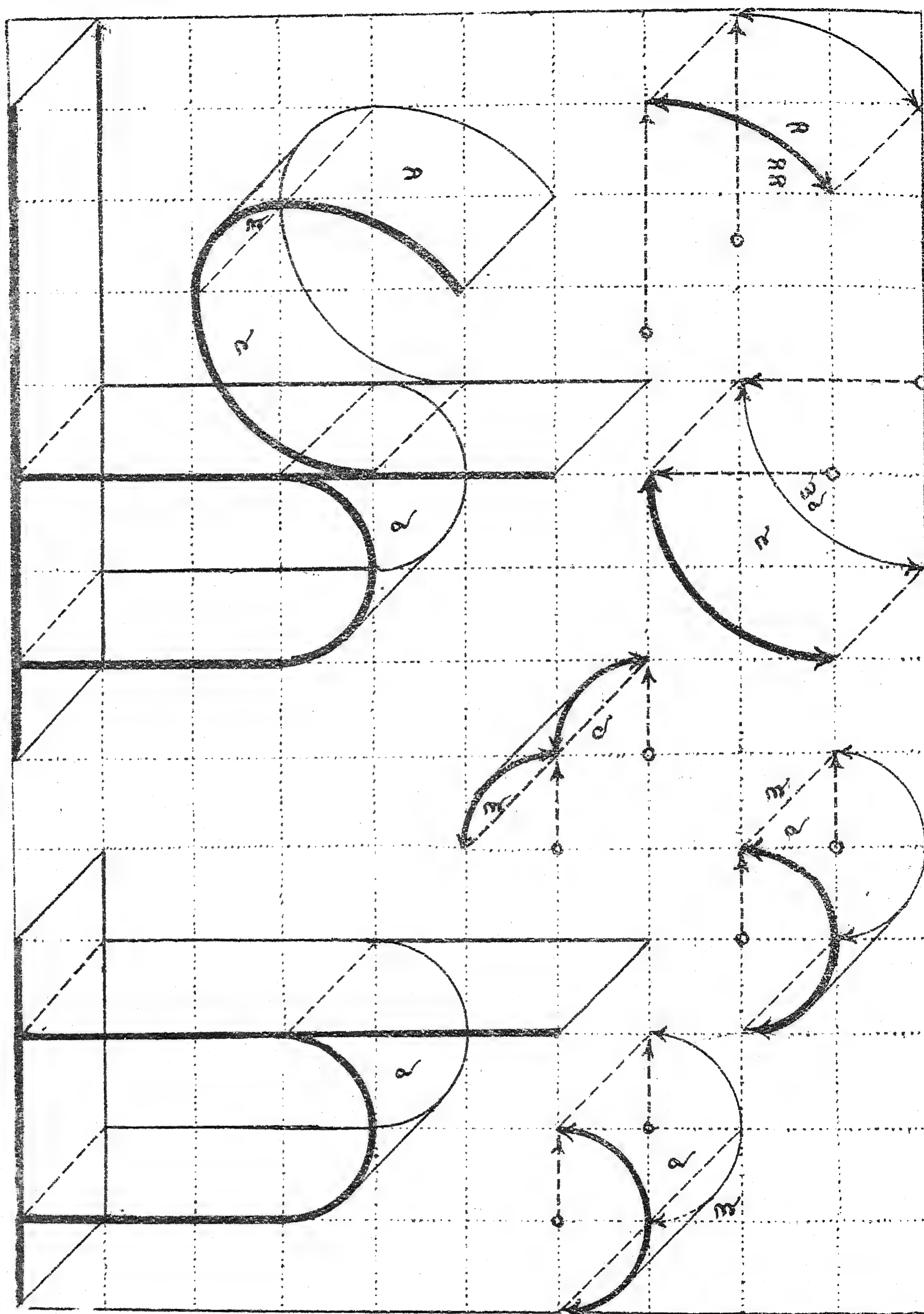


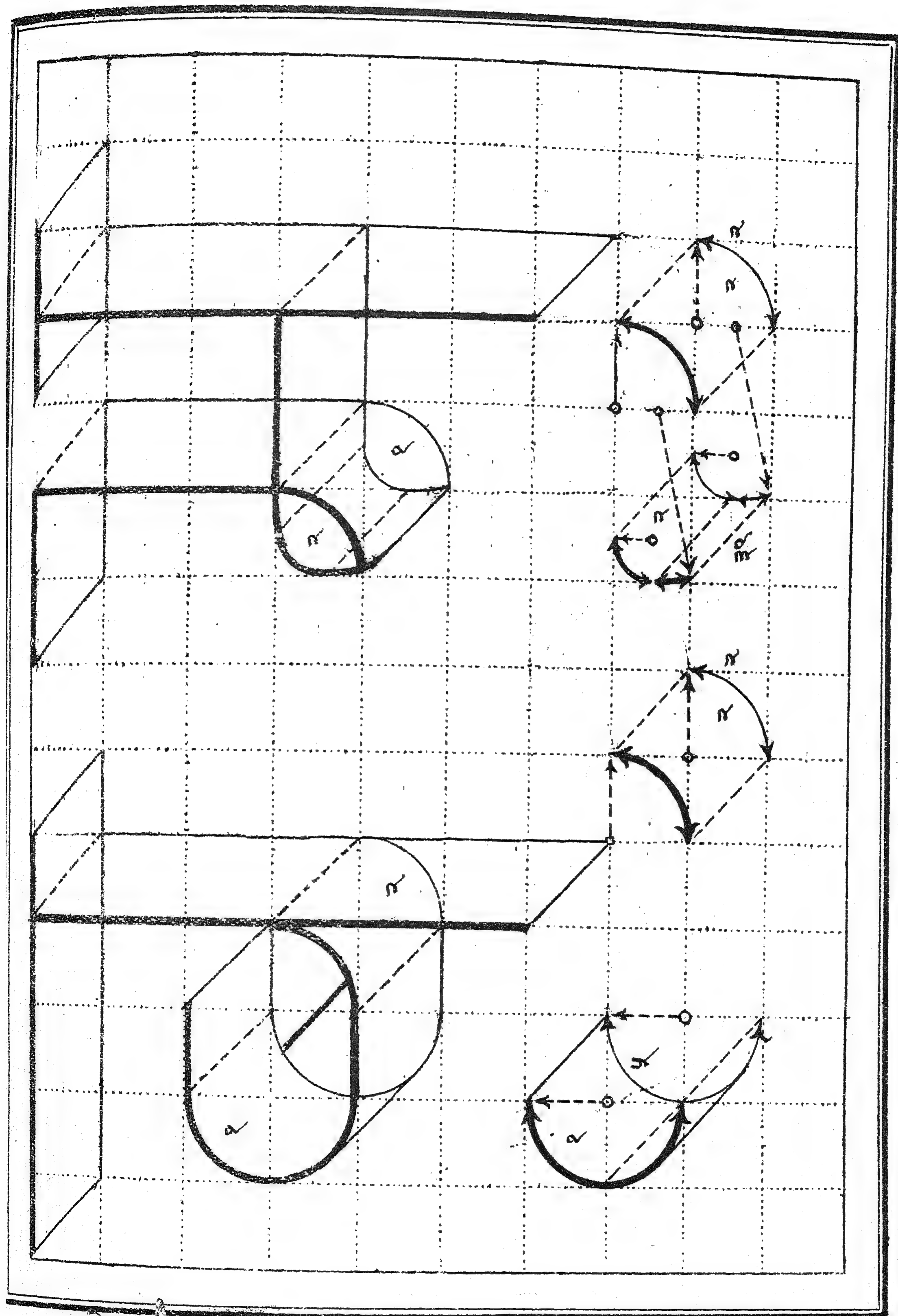

१
२
३२

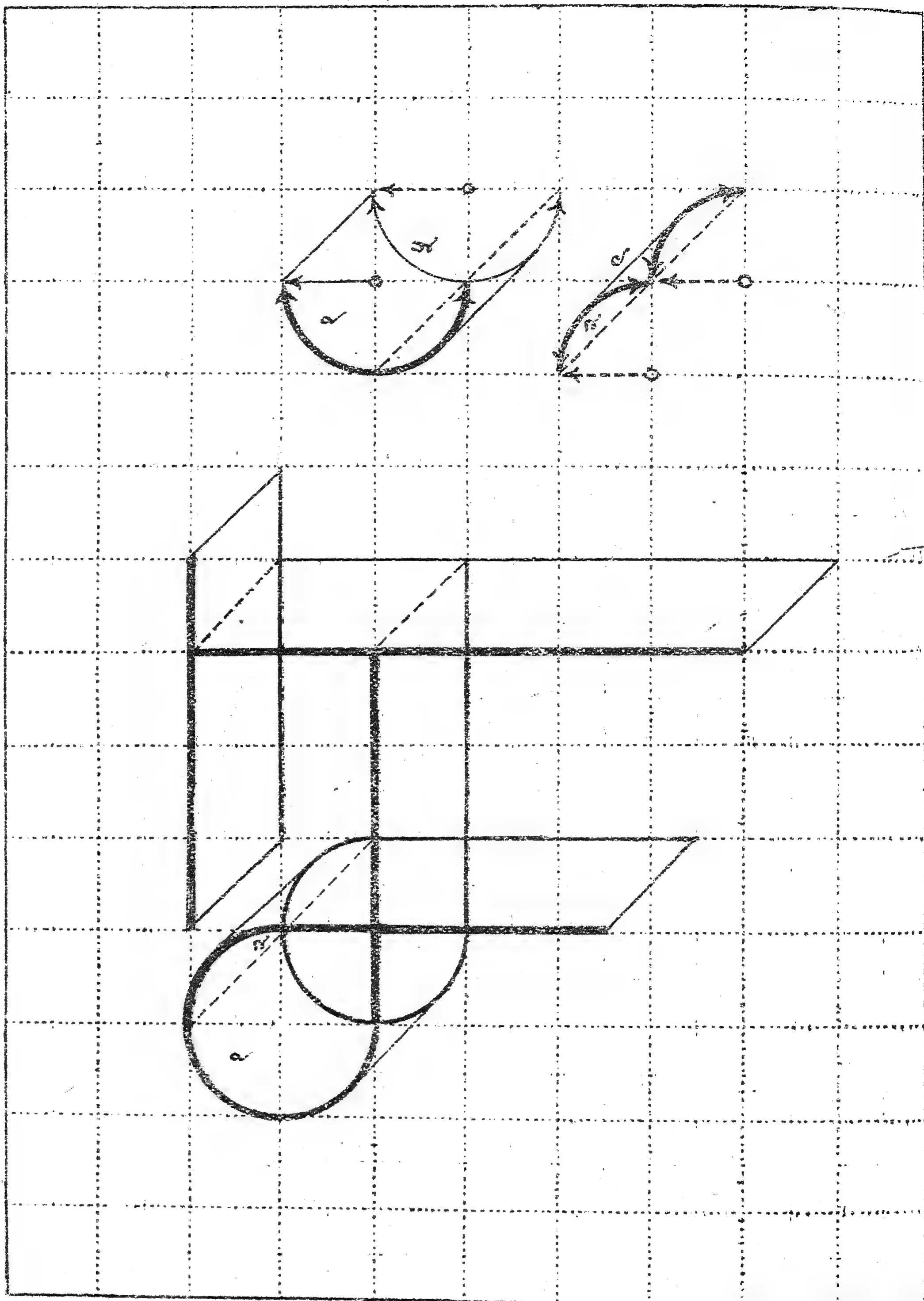


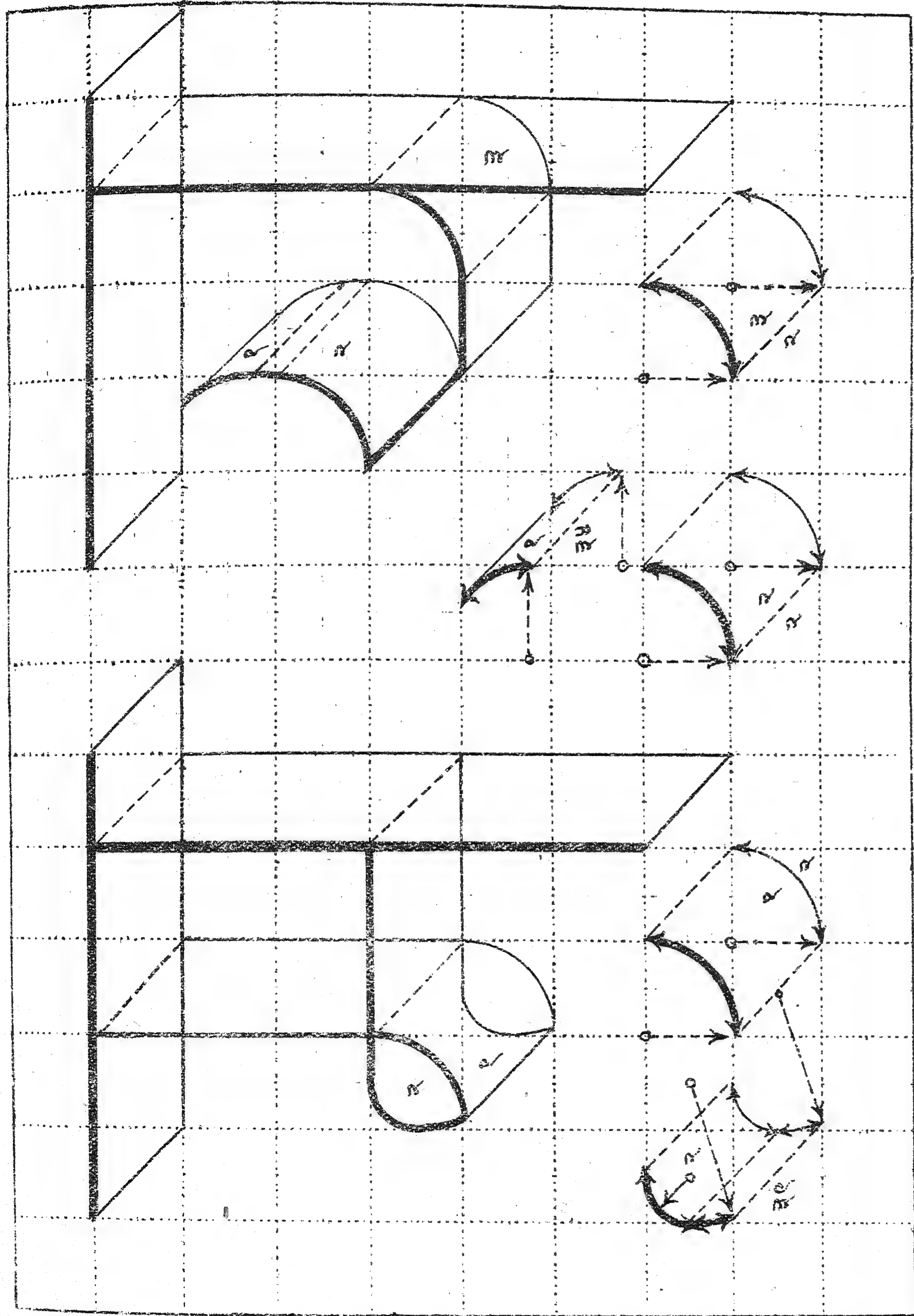


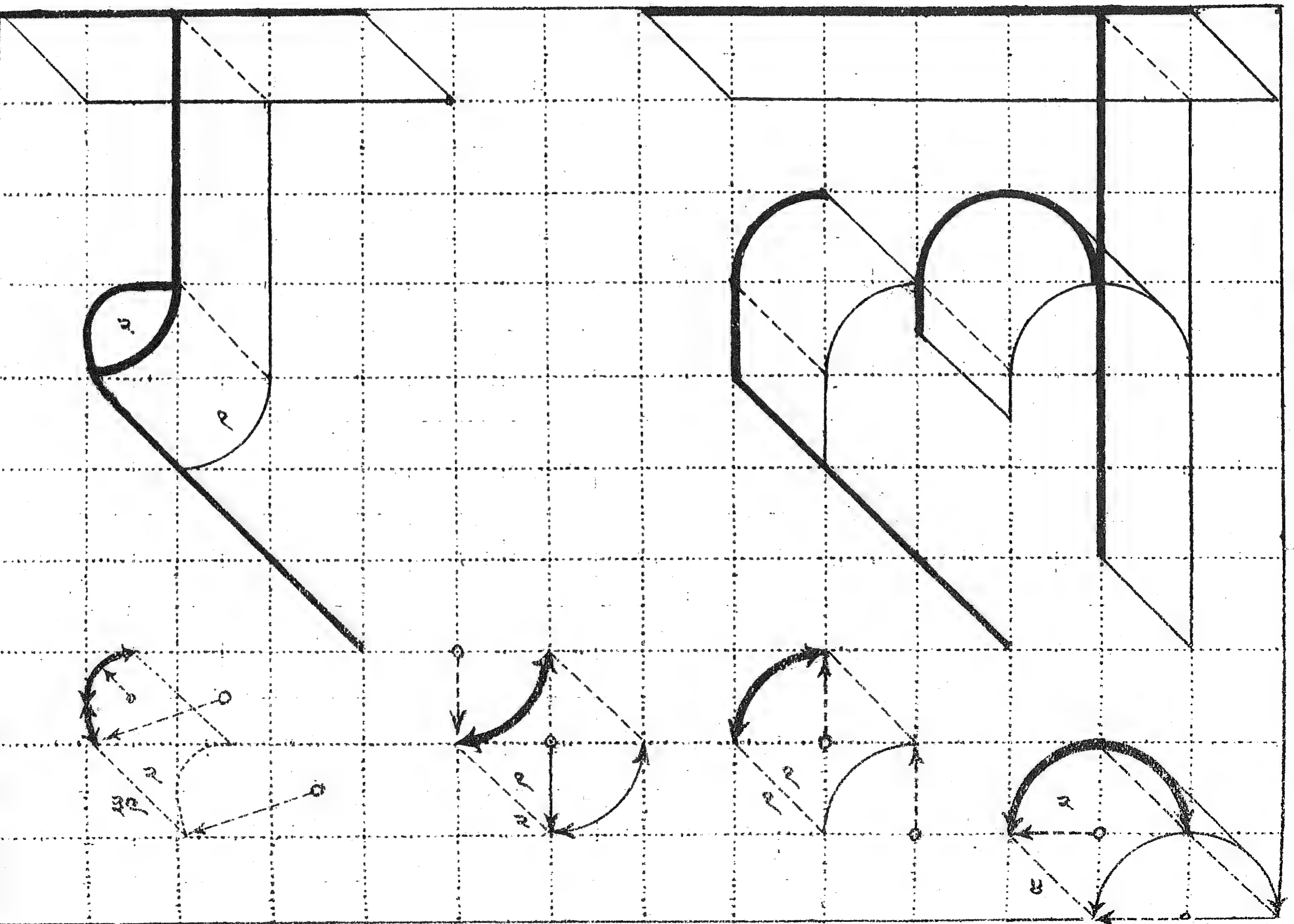


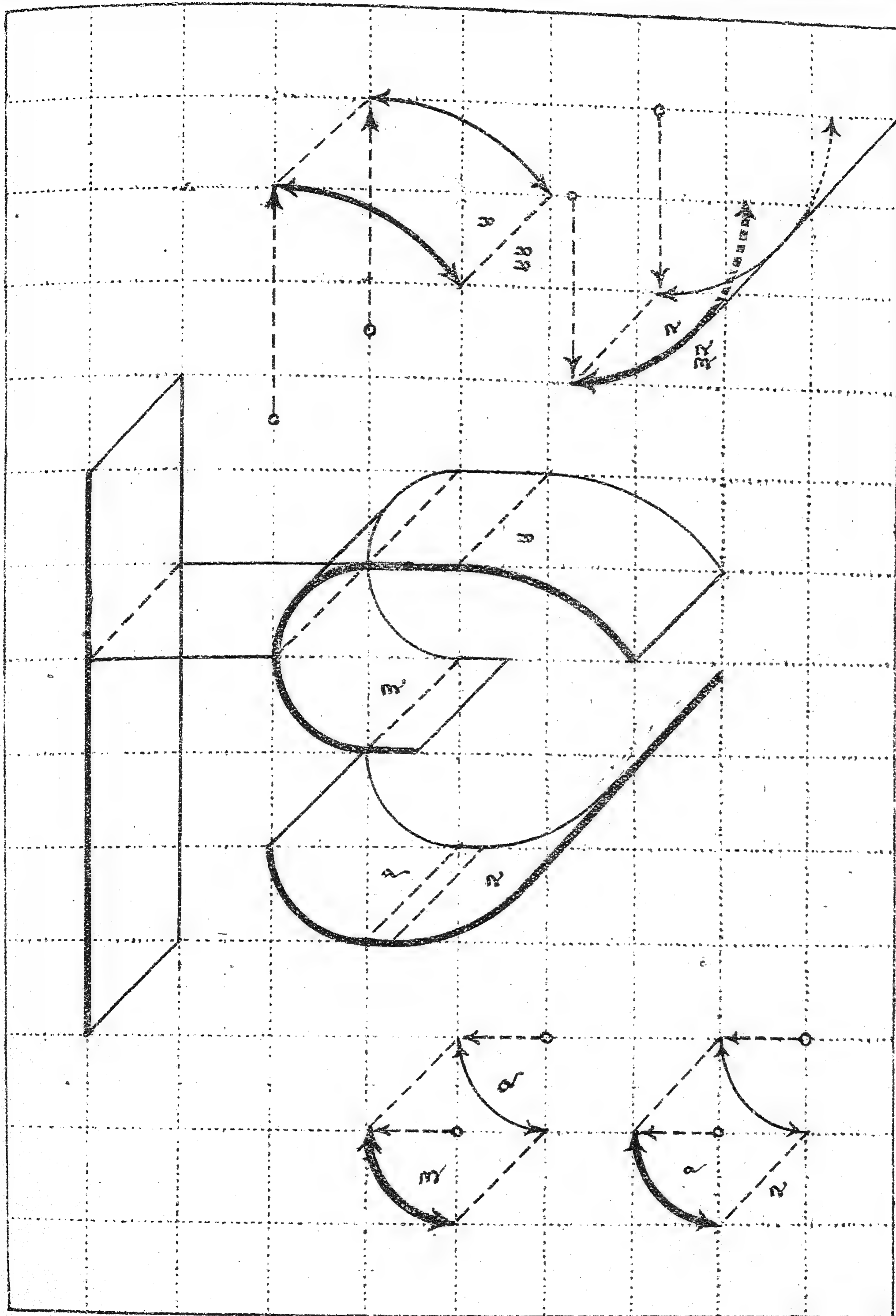


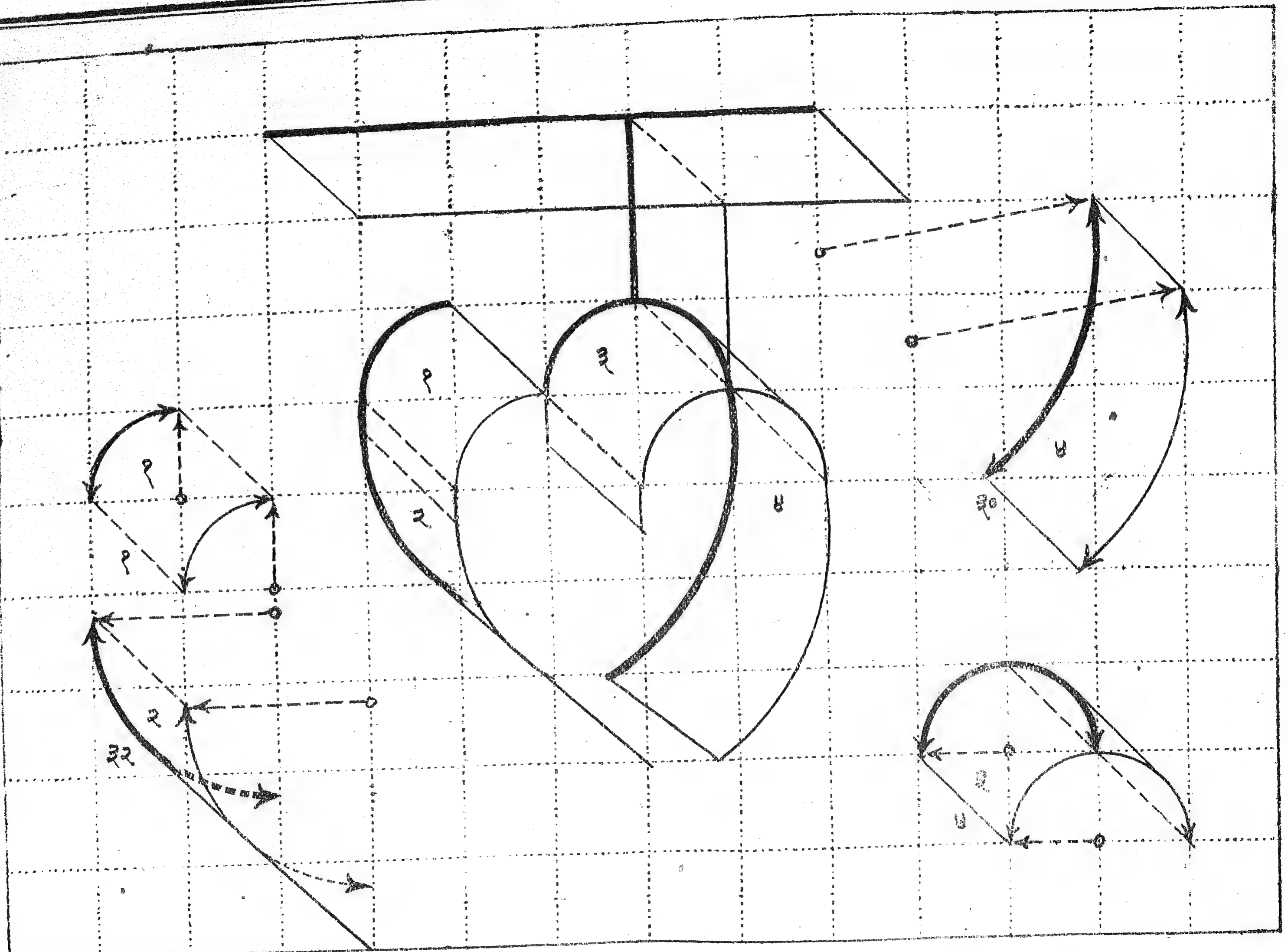




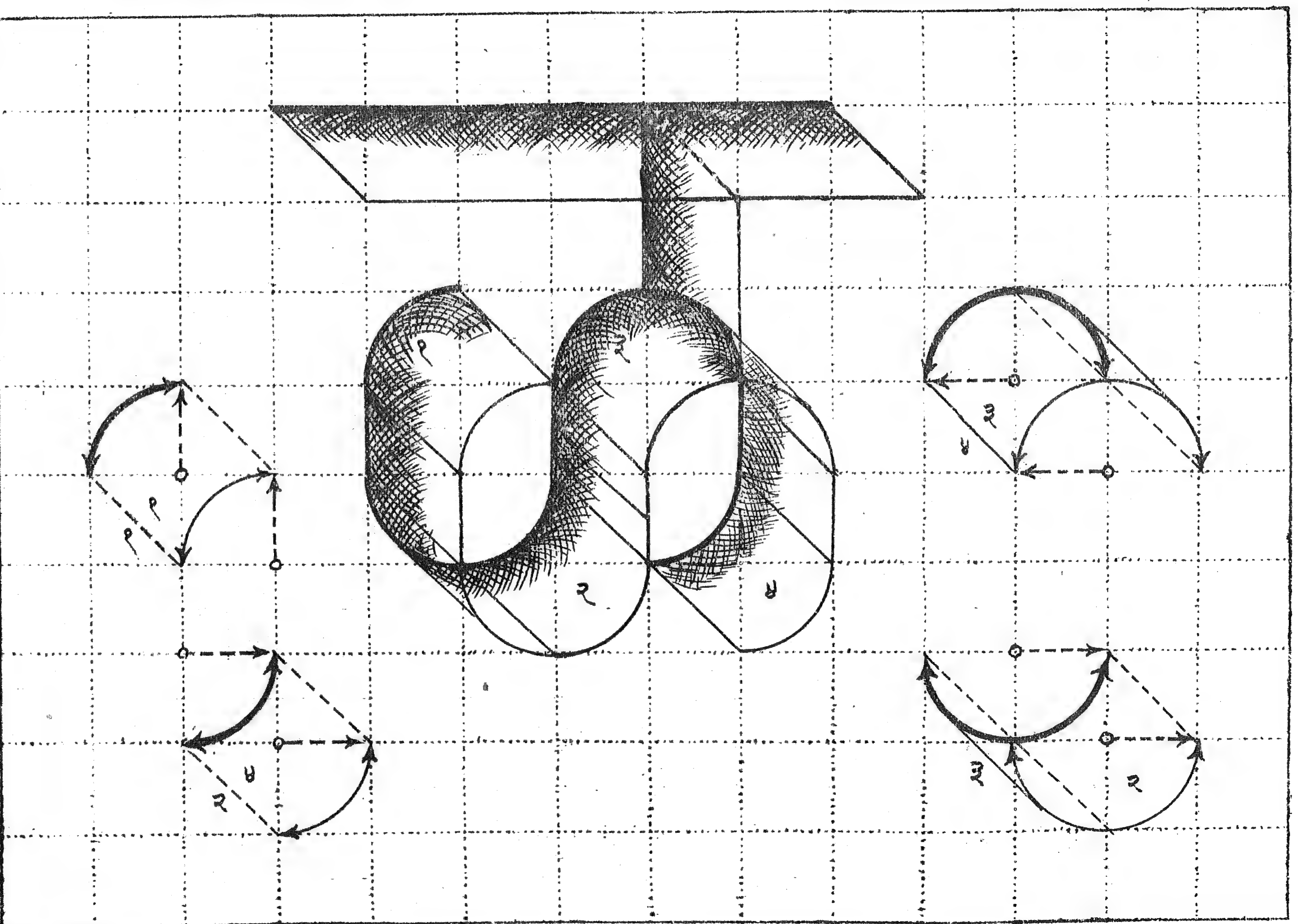


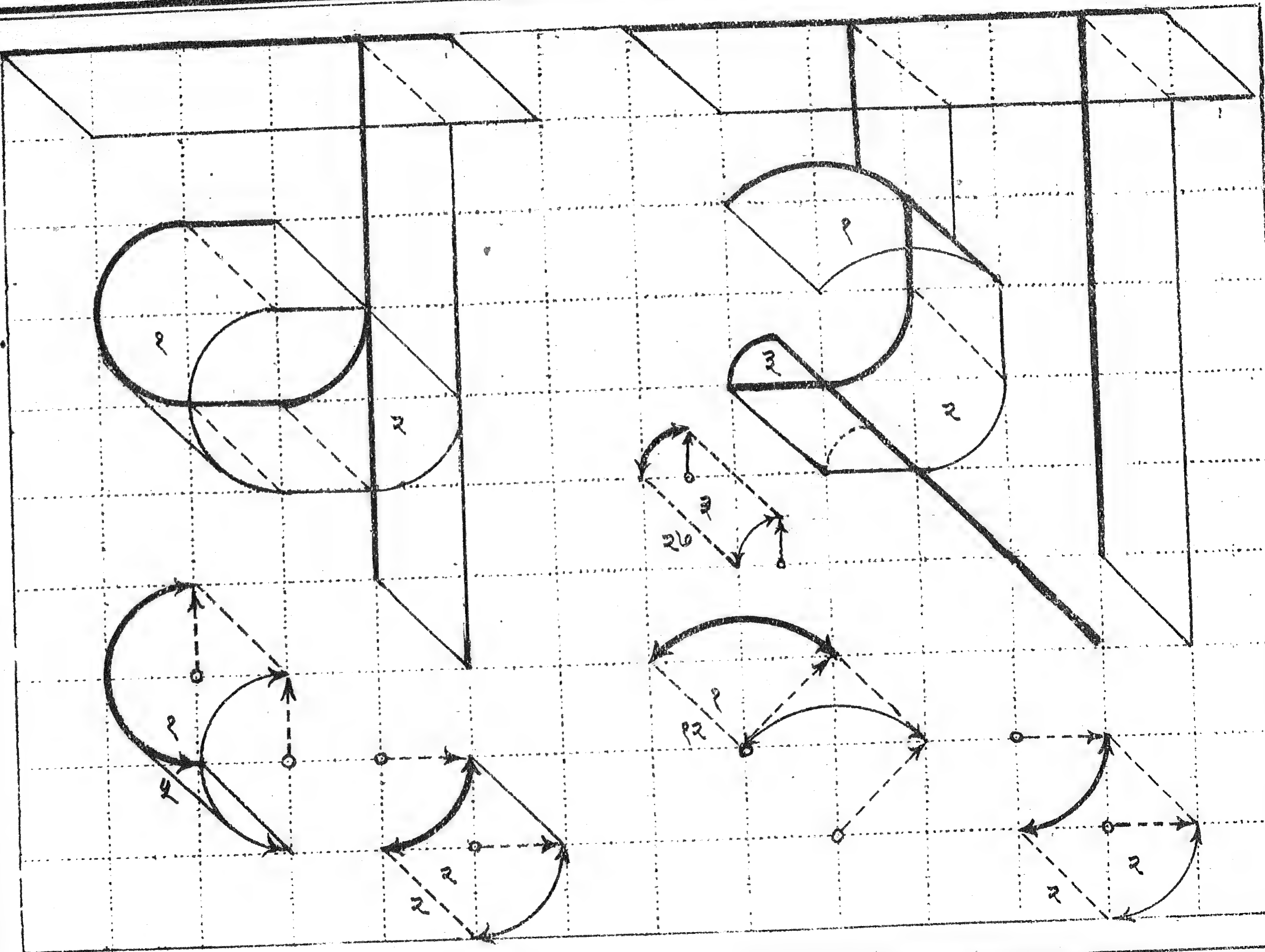




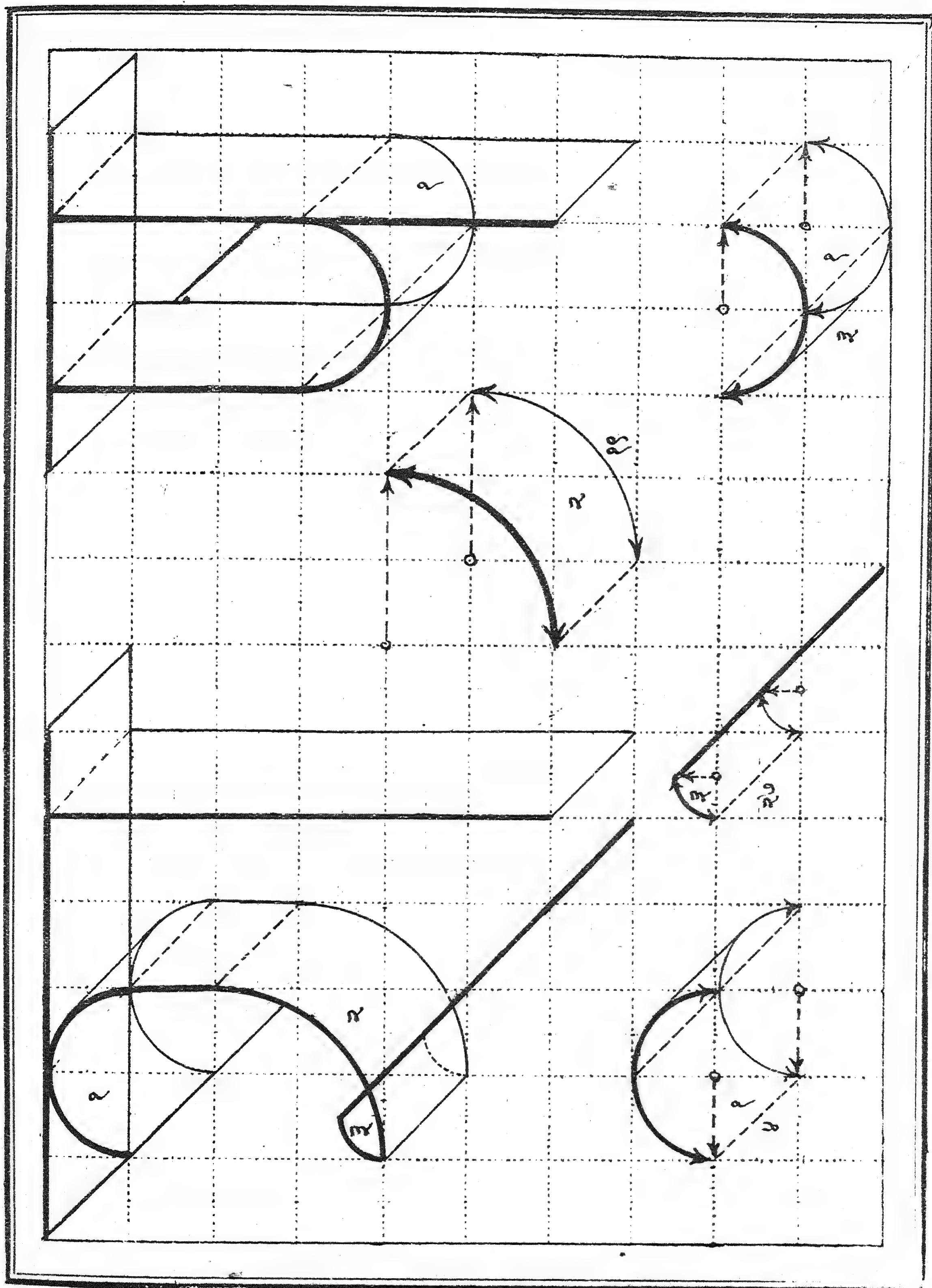


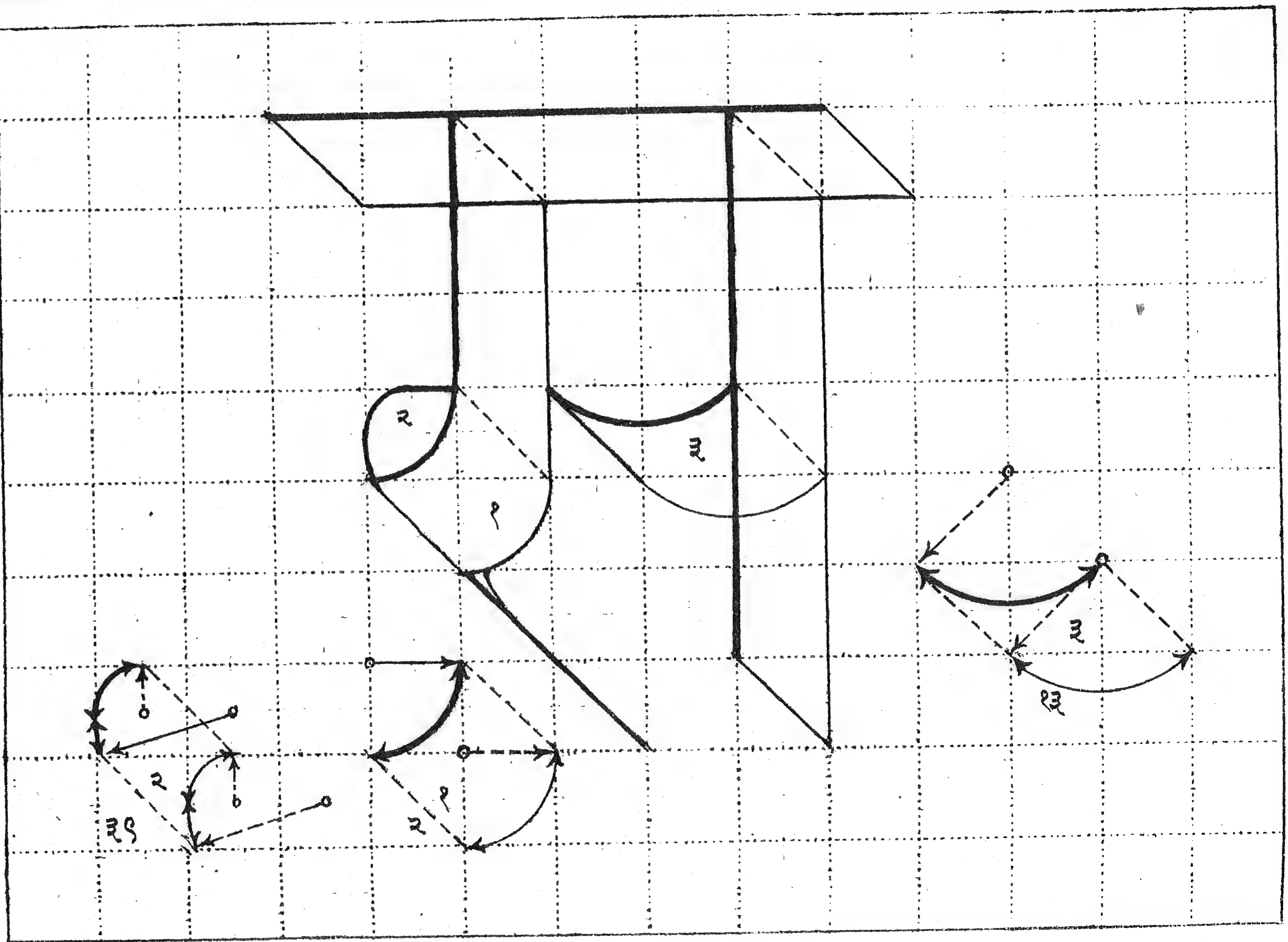
१
२
३
४
३०
१
१
२
२२
४
३



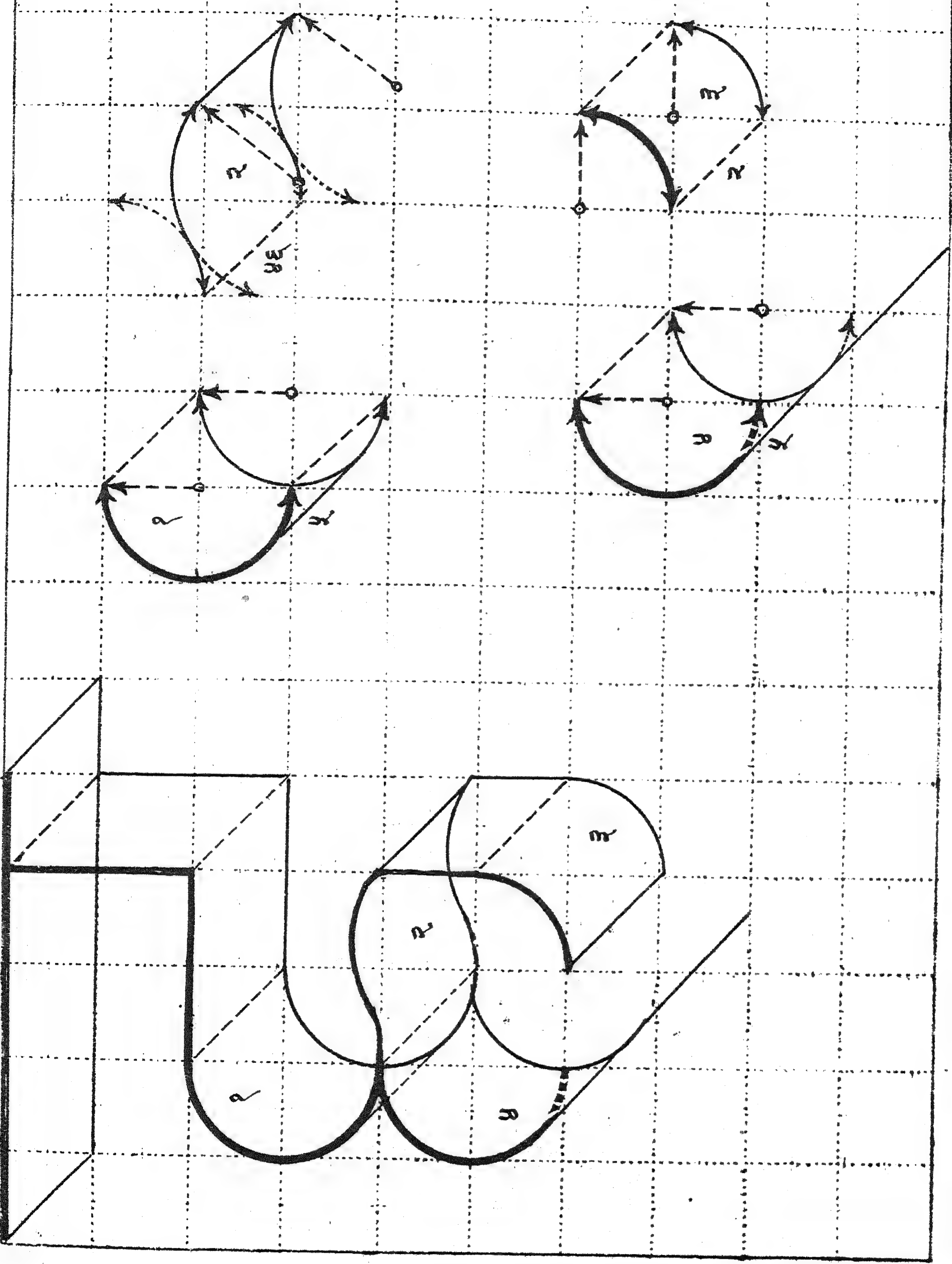


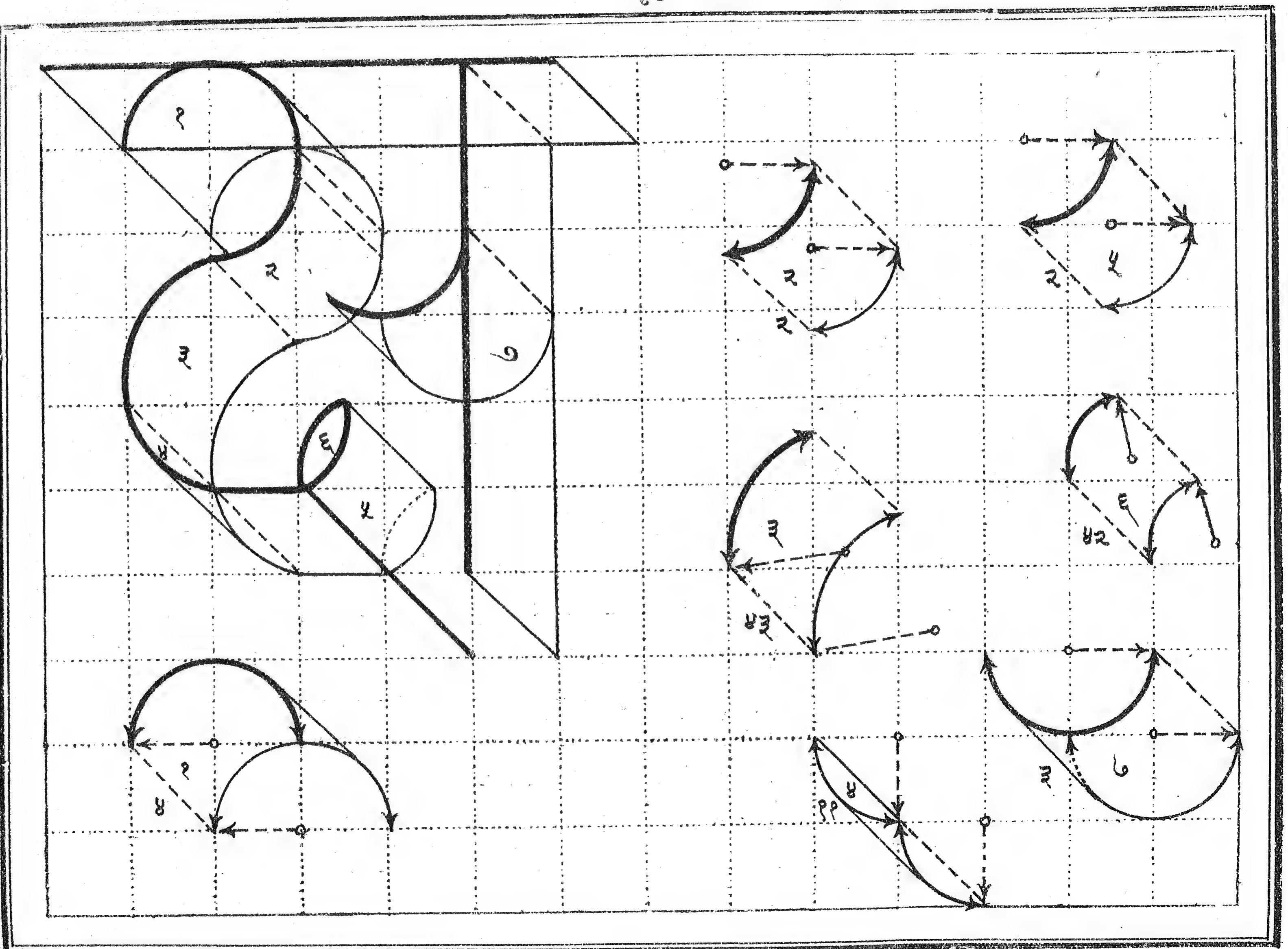
१
२
३
२०
१२
५

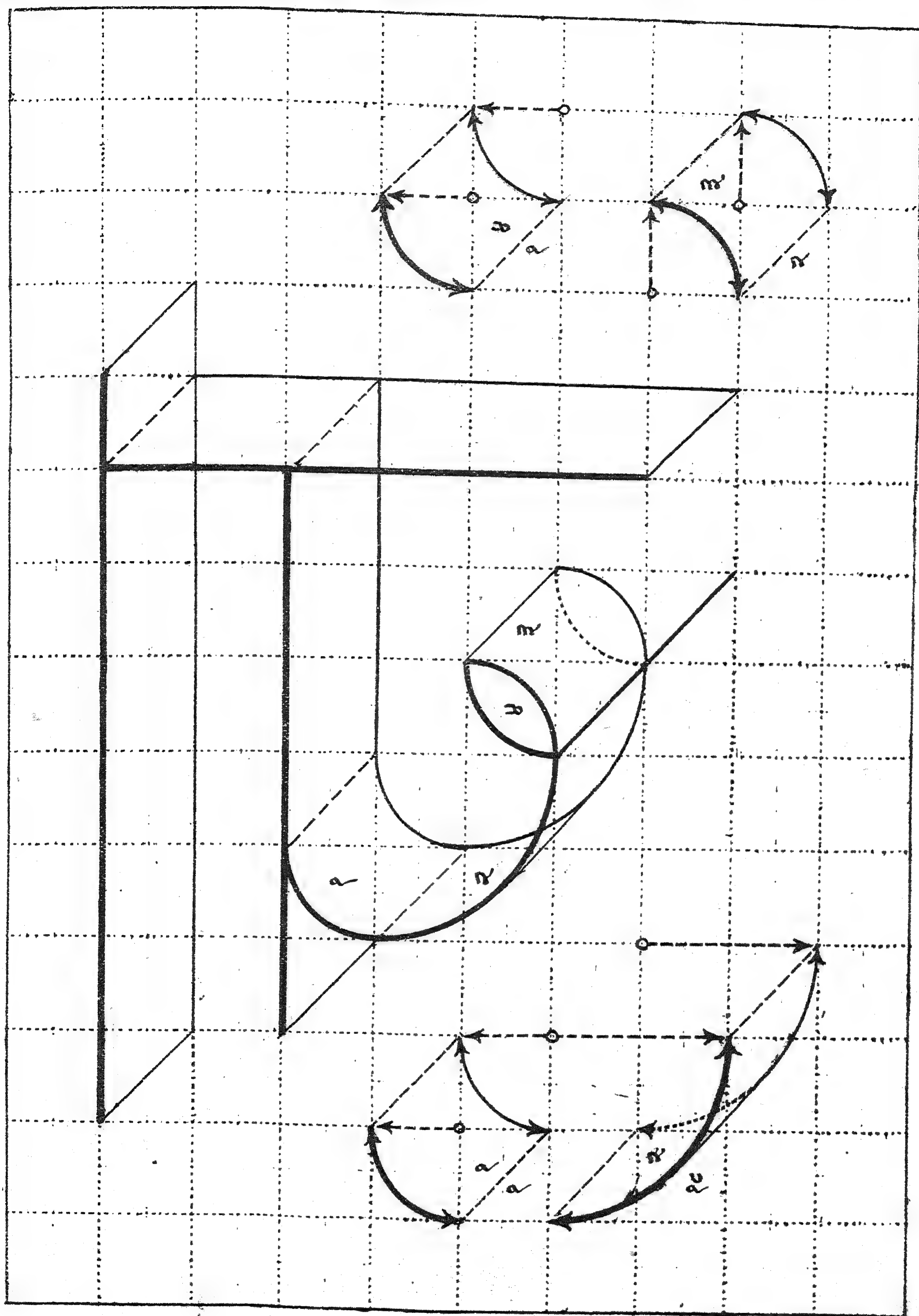


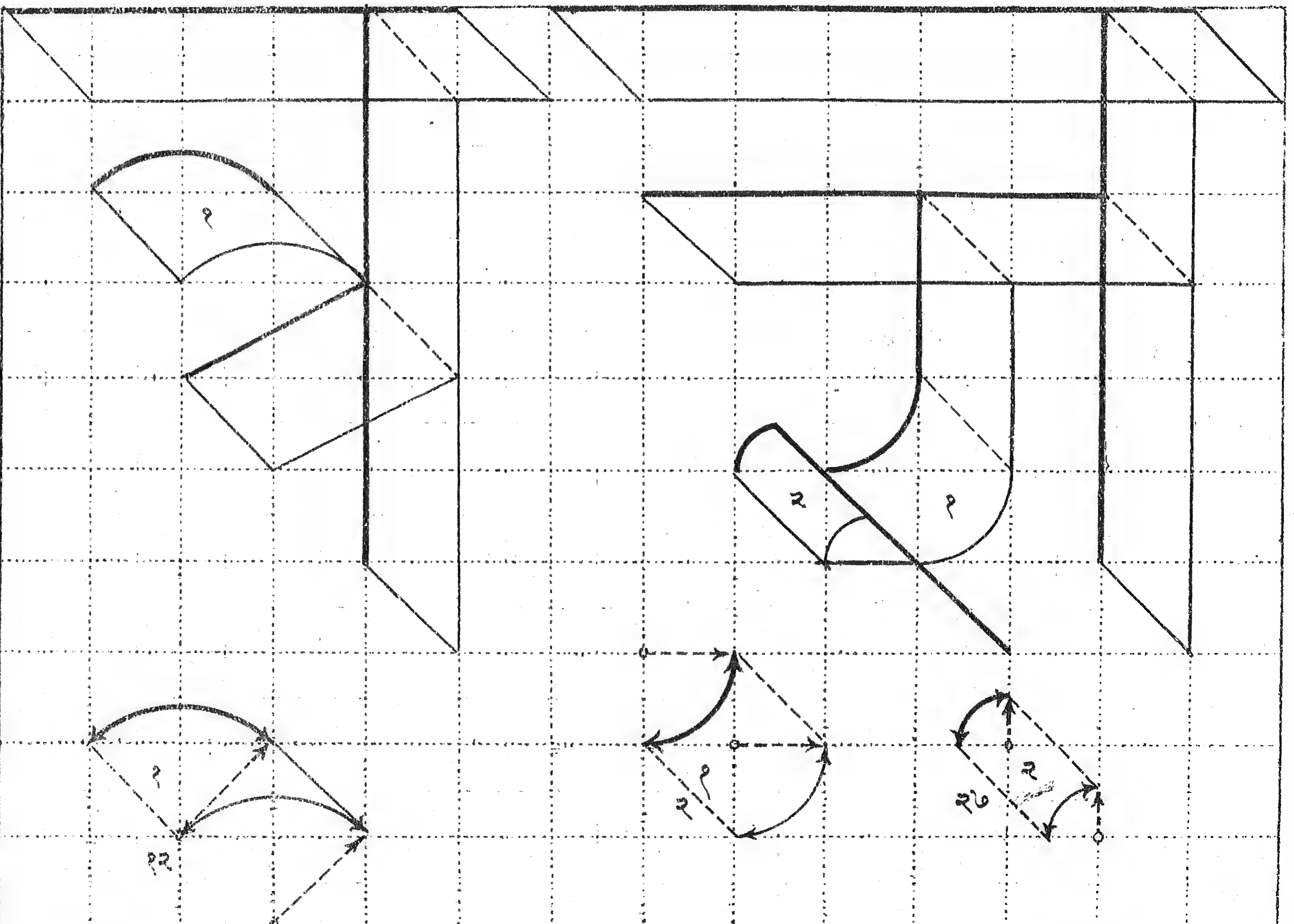


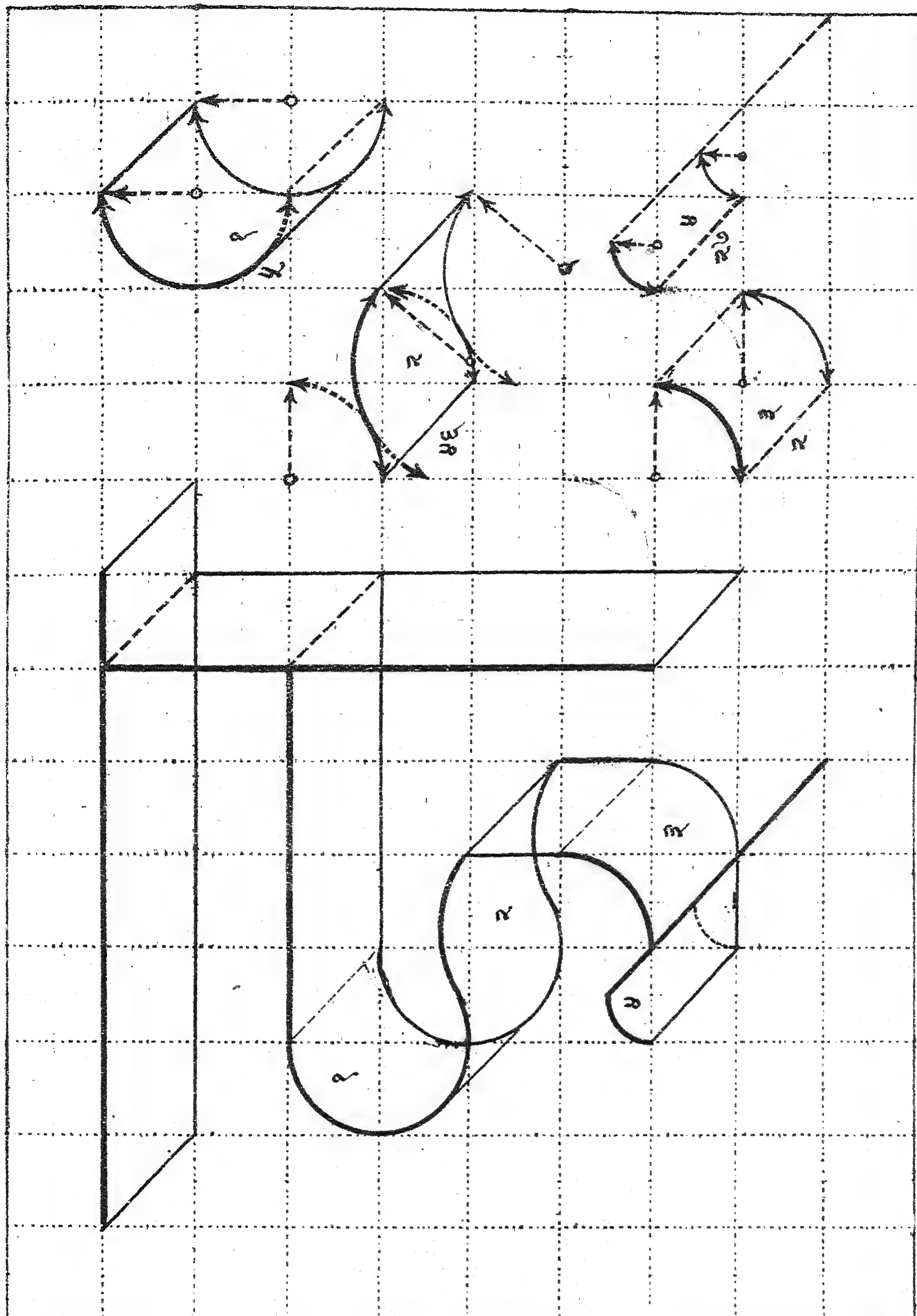
२
१
३
३
१३
२
१
२
२१

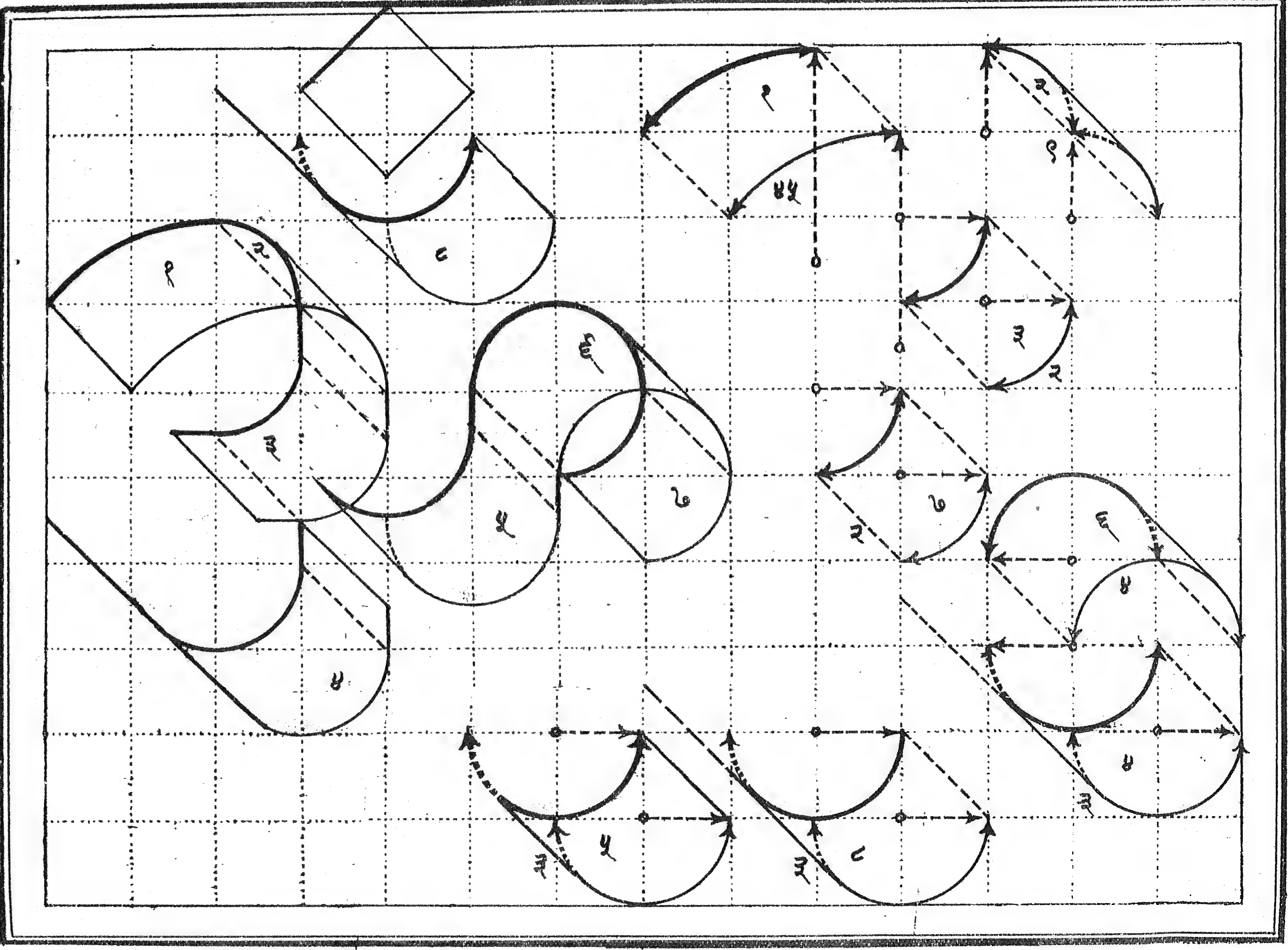


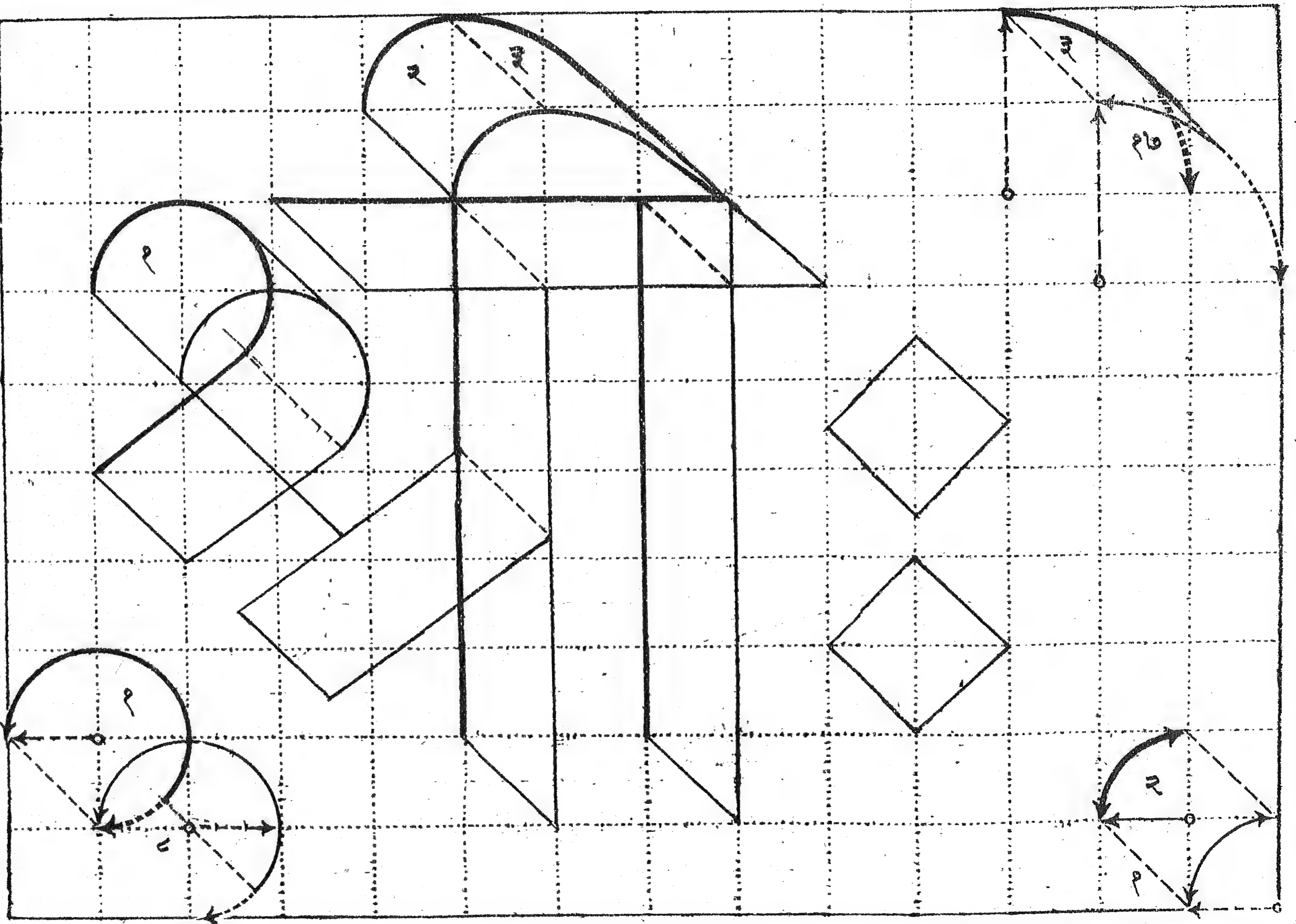


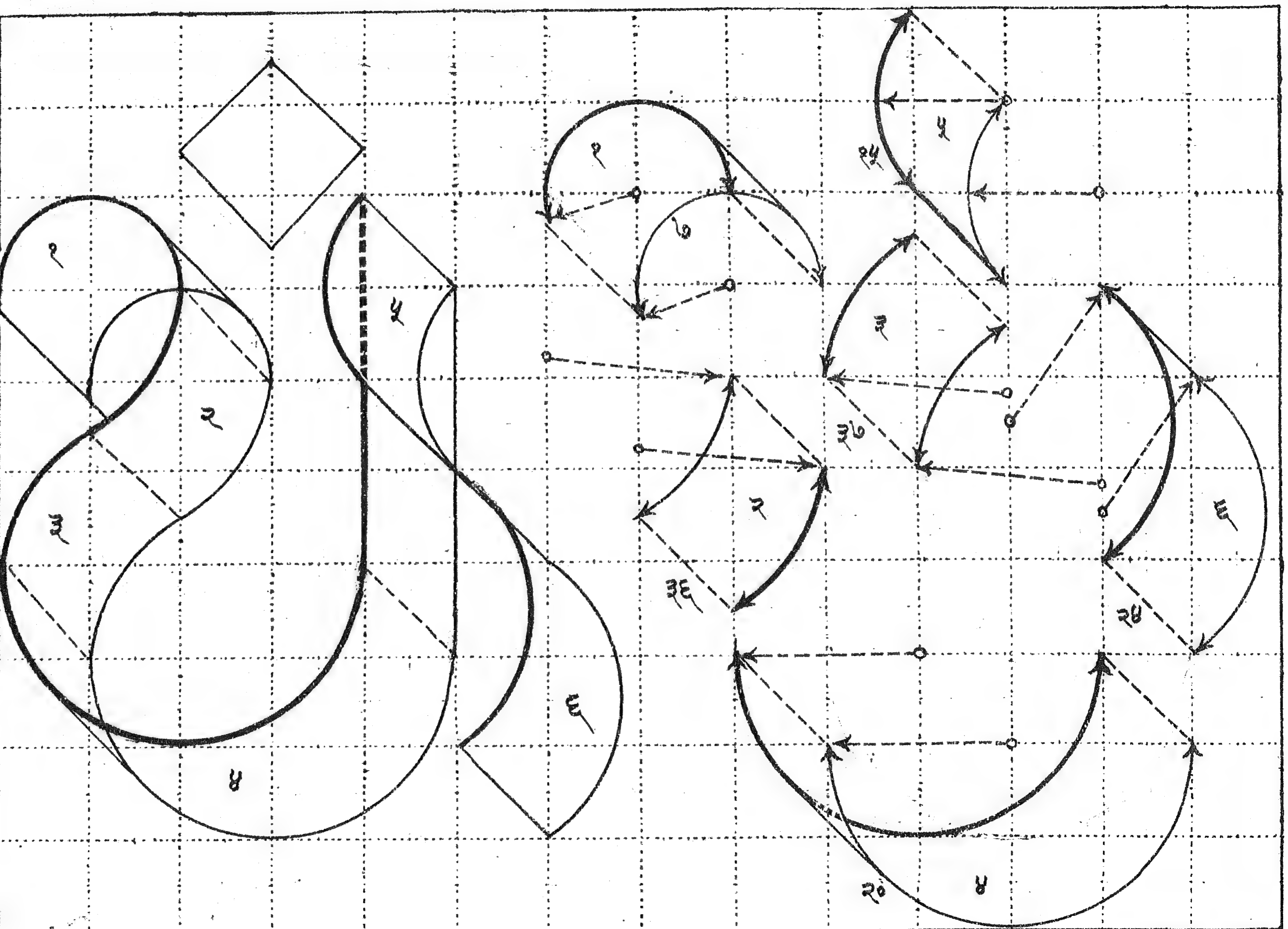


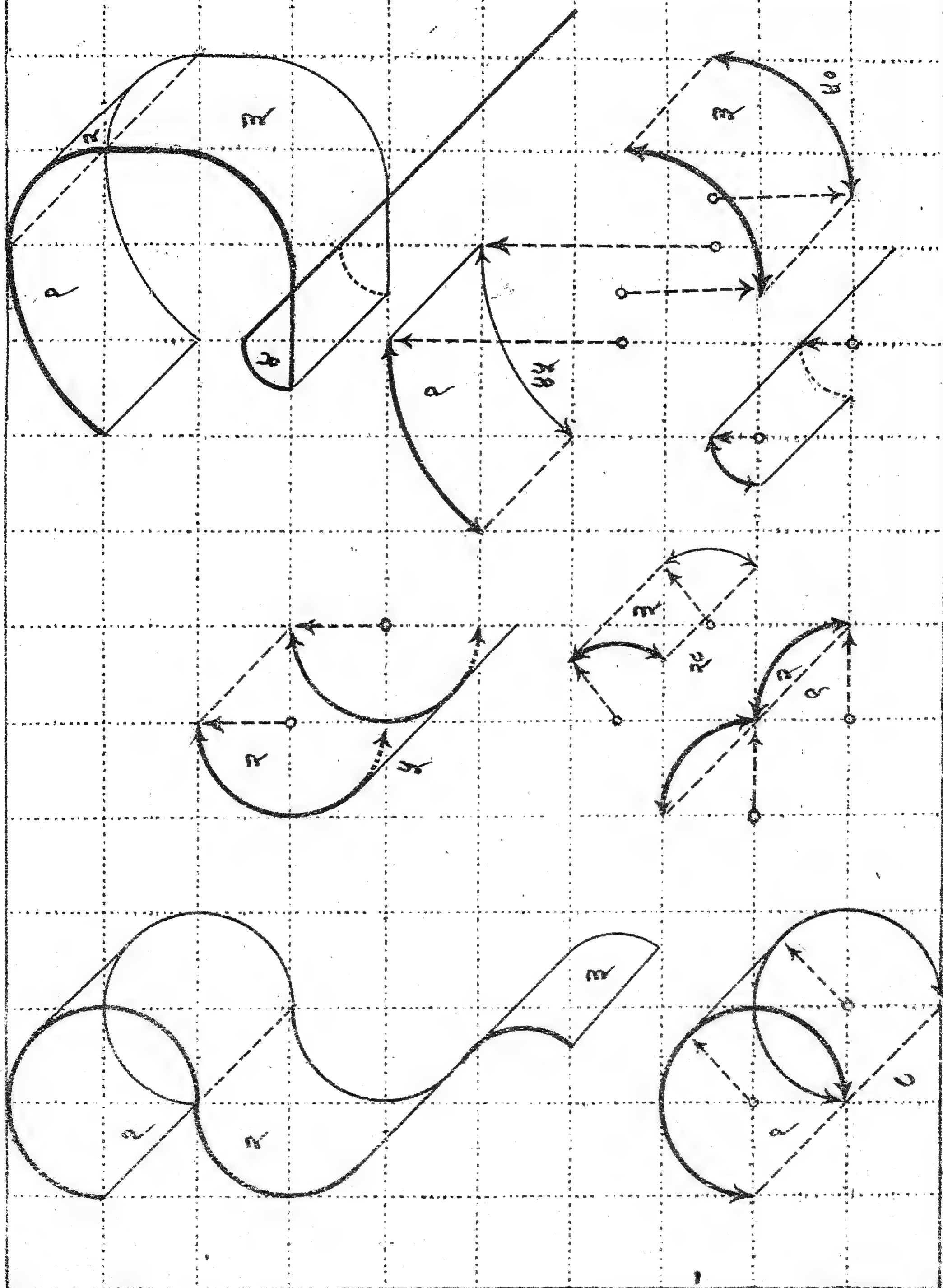


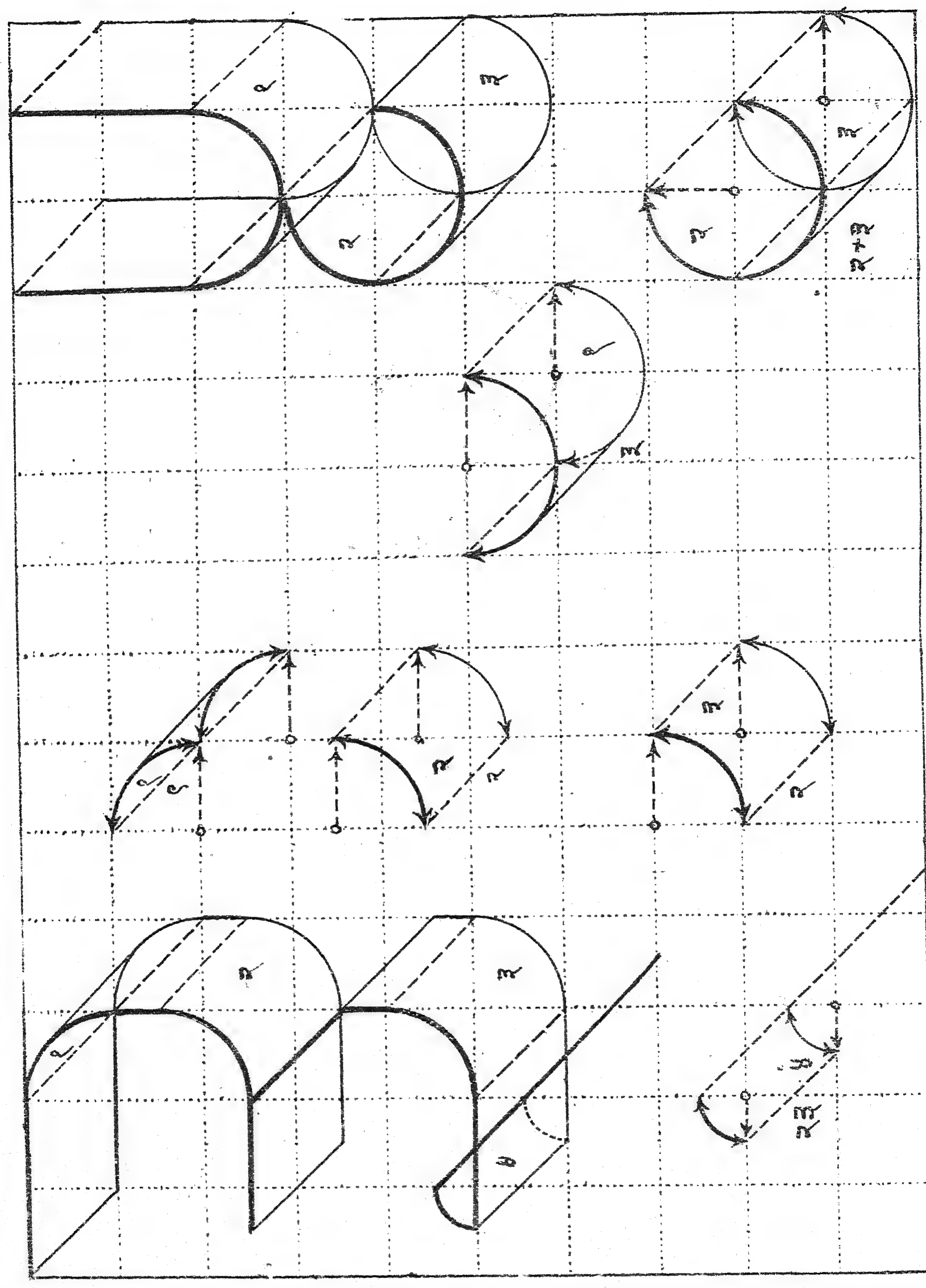


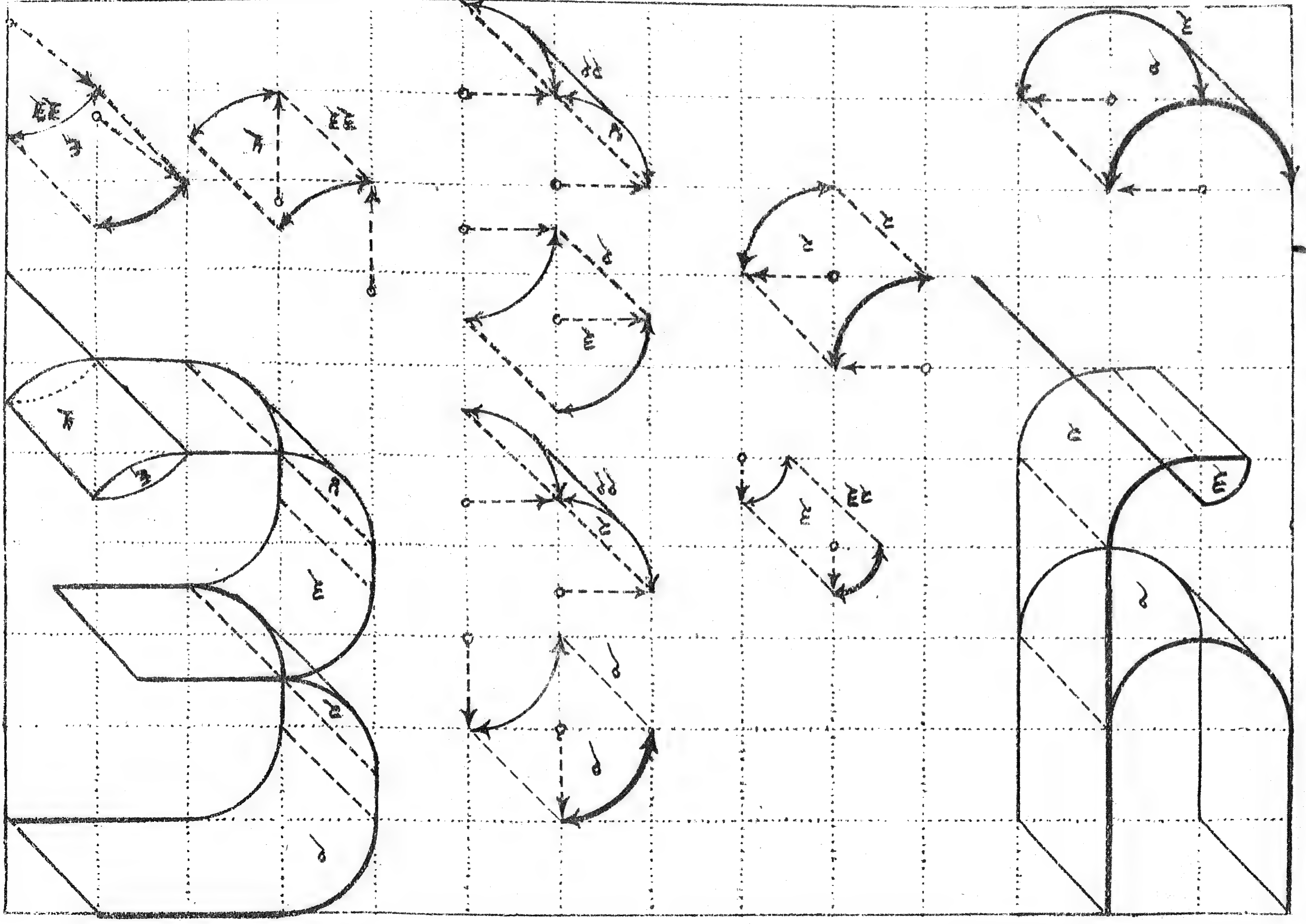


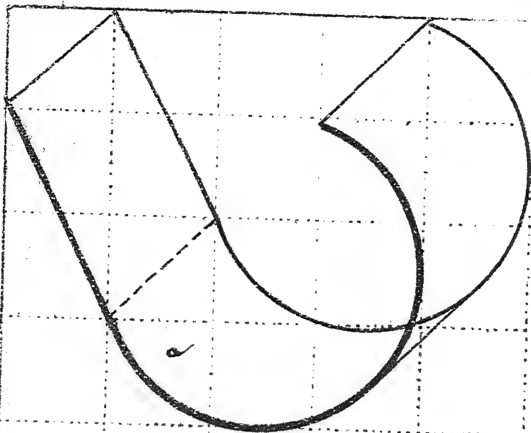


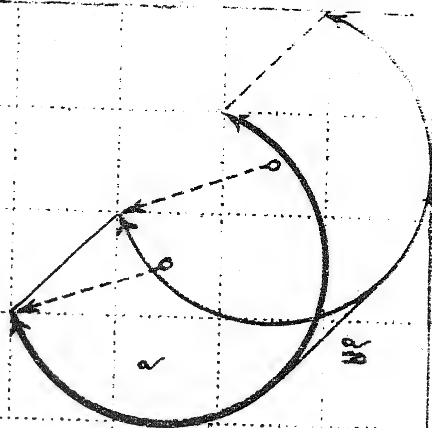


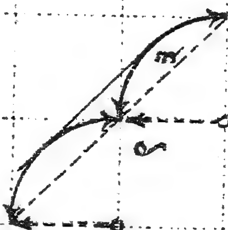


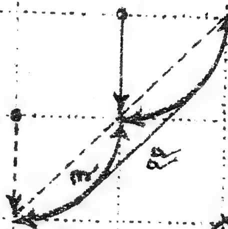


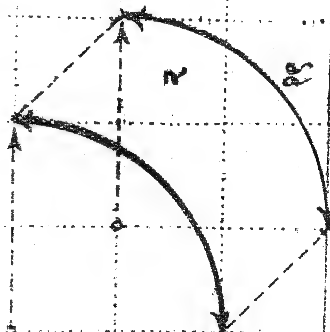


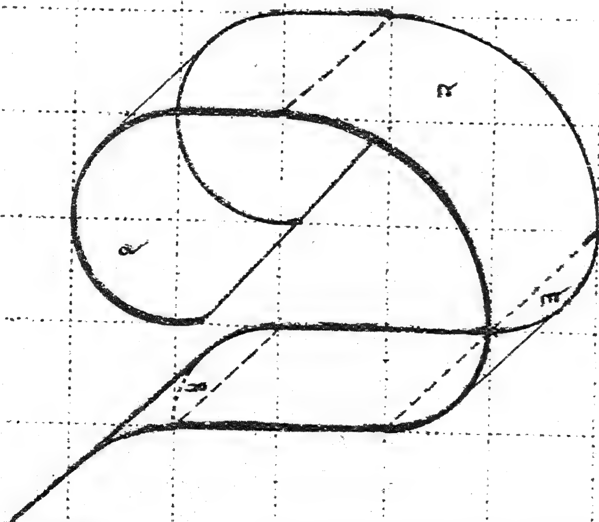


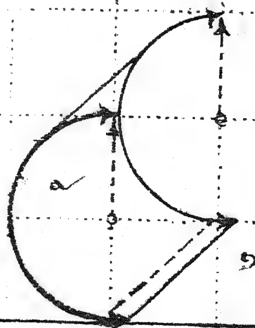


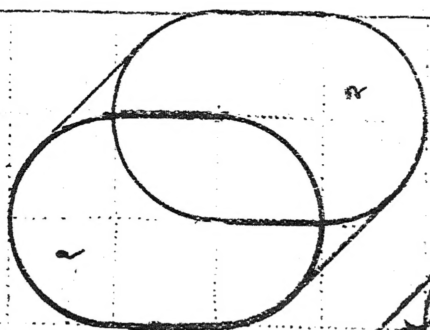


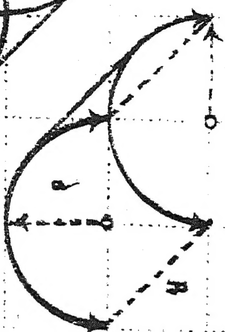


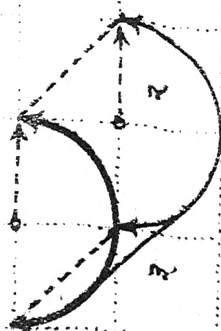


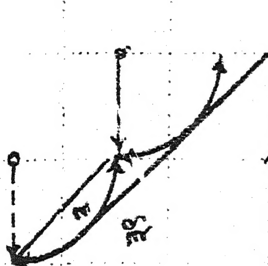


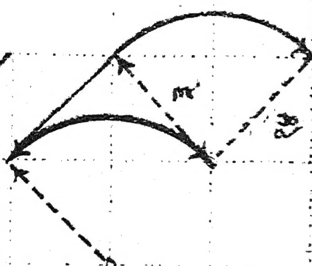


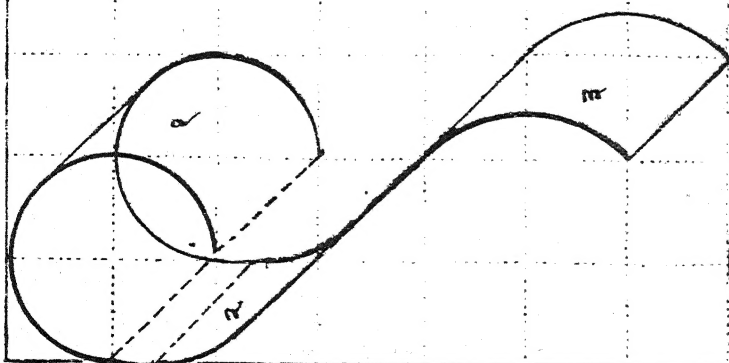


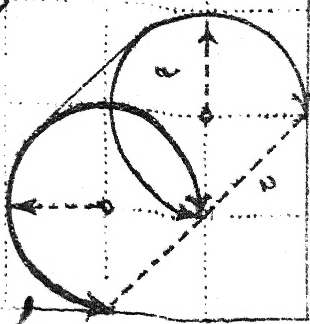












* ओ३म् *

श्रीमानों के सुनहले नाम ।

देवनागरी में

चित्रबन्ध और मोनोग्राम !

किसी नाम के आदि अक्षरों का समूह जो लपेट कर किसी सुन्दर आकार में गूंथा जाता है उसे अँगरेज़ी में "मोनोग्राम" और हिन्दी में "संयुक्तनामाद्यक्षर" कहते हैं। अरबी और फ़ारसी लिपि में किसी नाम अथवा वाक्य के अक्षरों को किसी ताज, मयूर, पुष्प, हंस, मन्दिर, सिंह, हाथी, घोड़ा, आदि की शकल में अङ्कित किया जाता है – उसे तुर्की भाषा में "तुग़रा" और हिन्दी में "चित्रबन्ध" कहते हैं।

"मोनोग्राम" रोमन (अँगरेज़ी) लिपि का बहुमूल्य अलङ्कार है। और "तुग़रा" अरबी तथा फ़ारसी लिपि का अमूल्य आभूषण है। "मोनोग्राम" और "तुग़रा" की रचना में बहुत भेद होता है। अँगरेज़ी में तुग़रे का चलन नहीं, और अरबी तथा फ़ारसी में मोनोग्राम नहीं बनता।

लोग कहा करते थे कि देवनागरी में अँगरेज़ी के से मोनोग्राम और अरबी के से तुग़रे बनना असम्भव है। इस भ्रम को दूर करने के लिये अनेक श्रीमानों के नाम के अच्छे अच्छे मोनोग्राम (सँयुक्तनामाद्यक्षर) और तुग़रे (चित्रबन्ध) हमने बनाए हैं। इस रचना के लिये हमें स्वर्णपदक और प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं। कई गुणग्राही सज्जनों ने पुरस्कार देकर भी हमें उत्साहित किया है। हमारी छपाई हुई ७५० आकृतियों तथा चित्रों से परिपूर्ण "चित्रलिपि प्रवेशिका" नामक पुस्तक में बहुत से मोनोग्राम और चित्रबन्ध देखने को मिलेंगे।

हमारे पास लोकमान्य पं० बालगङ्गाधर तिलक का नाम सूर्य के चित्र में, महात्मा गांधी और माननीय पँ० मदनमोहन मालवीय का नाम ताज के चित्र में। महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) और कविवर पँ० श्रीधर पाठक का नाम पुष्प के चित्र में बना हुआ है। ऐसे ही देशभक्त महानुवों के नाम अनेक प्रकार के सुन्दर चित्रों में अङ्कित हैं। यह ४५) से लेकर ५००) तक मूल्य के हमारे पास मिल सकते हैं।

अपने नाम का मोनोग्राम अथवा चित्रबन्ध बनवाने वाले सज्जन हम से इस पते पर पत्र व्यवहार करें—

मिलने का पता:—

गौरीशंकर भट्ट,

मसवानपुर–कानपुर

श्री लक्ष्मी प्रेस नयागञ्ज, कानपुर।